त्राटक से रोग निवारण

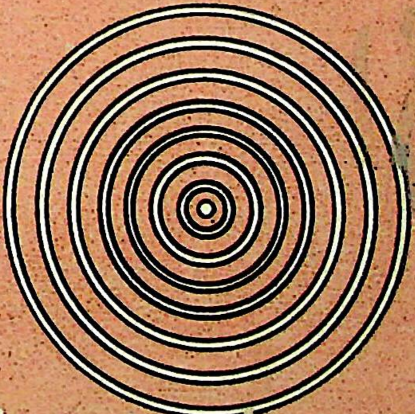

त्राटक से रोग निवारण

(त्राटक से रोग निवारण को सरल, सहज और
नवीन पद्धति का उद्‌घाटन)

लेखक :

डॉ० चमनलाल गौतम

रचयिता : त्राटक से मानसिक शान्ति, त्राटक से काम
रूपान्तरण, त्राटक साधना के चमत्कार, त्राटक
से समाधि, त्राटक से आत्मसाक्षात्कार,
त्राटक द्वारा मृत्यु पर विजय,
त्राटक द्वारा शक्तिपात आदि।

प्रकाशक :

संस्कृति संस्थान

ख्वाजाकुतुब, (वेद नगर) बरेली—२४३००३ (उ०प्र०)

फोन न० ४२४२

प्रकाशक :

डॉ० चमनलाल गौतम

संस्कृति संस्थान,

ख्वाजा कुतुब (वेद नगर)

बरेली–२४३००३ (उ० प्र०)

फोन : ४२४२

लेखक :

डॉ० चमनलाल गौतम

सर्वाधिकार प्रकाशकाधीन

प्रथम संस्करण

१९८१

मुद्रक :

शैलेन्द्र बी० माहेश्वरी

नव ज्योति प्रेस,

भीकचन्द मार्ग, मथुरा।

मूल्य :

तीन रुपये पिचहत्तर पैसे मात्र।

भूमिका

वेद शास्त्रों ने तो मन की असाधारण शक्ति को एक मत से स्वीकार किया ही है। वैज्ञानिक भी इससे अछूते नहीं है। विज्ञान के अनुसार मन भौतिक शरीर की चेतन शक्ति है। यद्यपि पदार्थ को पूरी तरह शक्ति में बदलना सम्भव नहीं हो पाया है तथापि यदि इसे पूरी तरह शक्ति में परिवर्तित करना सम्भव हो तो एक पौण्ड कोयले में जितना द्रव्य होता है, उसे शक्ति में वदल देने से सम्पूर्ण अमेरिका के लिये एक मास के लिये विजली तैयार हो जाती। मन शरीर के द्रव्य की विद्युत शक्ति है। मन की एकाग्रता से शक्ति का अद्भुत विकास होगा।

साधारणतः मन की शक्तियाँ बिखरी रहती हैं। इनका कोई विशेष उपयोग नहीं हो पाता। त्राटक द्वारा मन की विखरी शक्तियों को एकत्रित करके शरीर में विद्यमान विद्युत शक्ति को उत्तेजित और आन्दोलित किया जाता है। तब वह अर्जा का रूप धारण करती है। यह अर्जा गुप्त शक्ति केन्द्रों का जागरण करके मानव की असाधारण शक्तियों का स्वामीं बना देती है, त्राटक सिद्ध योगी आकर्षण शक्ति का विद्युतीय पुञ्ज ही बन जाता है। इस आवर्षण शक्ति द्वारा संसार की किसी भी वस्तु में विद्यमान प्राण अर्जा को अपनी ओर खींच कर आत्मसात किया जा सकता हैं। चिकित्सा शास्त्रियों ने जटिल और लम्बी प्रक्रियाओं द्वारा औषधियों का निर्माण करके रोग निवारण की विधियों की खोज की है। त्राटक द्वारा सहज रूप से वस्तु के सूक्ष्म गुणों को आकर्षित करके अपने शरीर को प्राण अर्जा के साथ मिलाकर उन गुणों से ओत प्रोत किया जा सकता है। यही त्राटक द्वारा रोग निवारण का विज्ञान है।

—डॉ० चमनलाल गौतम

विषय-सूची

१. त्राटक द्वारा चमत्कारी शक्तियों का विकास— ५

२. मानवीय अर्जा को आन्दोलित करने की वैज्ञानिक पद्धति त्राटक— ११

३. त्राटक द्वारा रोग निवारण को वेज्ञानिक पृष्ठ भूमि- १३

४. विश्वास में चुम्वक से भी अधिक प्रवल शक्ति है- १७

५. चेतन मन की सजगता के असाधारण परिणाम- १९

६. त्राटक द्वारा विभिन्न रोगों का निवारण- २२

कामशक्ति संवर्द्धन, गर्मी जनित उपसर्गों, चर्म रोग, क्षयरोग कण्ठ रोगों, मानसिक रोग, उदर रोग, और नेत्र रोग निवारण की विधियाँ।

७. मणि रत्नों के त्राटक का रोग नाशक प्रभाव- ३७

माणक्य, मूगा, मोती, पन्ना, पुखराज, गोमेद, हीरा, वैदूर्य. कार्ण, और नीलम के रोग निवारक विधान।

८. वृक्ष, फल, फूल व जड़ी बूटियों के त्राटक के असाधारण लाभ- ६७

अखरोट, अंजीर, अमरुद, आंवला, आम, आक, आलूबुखारा, इमली, करोंदा, कचनाल, कदम्ब, कनेर, केला, गुलाब, गूलर, जामुन, तुलसी, धतूरा, नीबू, नीम, पपीता, परबल, पीपल,पीलू,पोदिना, फालसा, वट, वहेड़ा, बाँस, बेर, वेल, भांगरा, मकोय, मेहदी, मौलश्री, रुद्राक्ष, रुद्रदन्ती, रोहिणी, लक्ष्मणा, लजालू, ल्हिसोड़ा, सरसों, सहदेई, सिरस, सूर्यमुखी, सोया, हरड़, हरिद्रा के प्रभाव।

९. ग्रहो के त्राटक में प्रतिकूल को अनुकूल वनाने की क्षमता है-९२

सूर्य, चन्द्रमा, मङ्गल, बुद्ध, वृहस्पति, शुक्र, शनि, राहू, केतु, और तारों के त्राटक के रोग शामक परिणाम।

१०. धातुओं के त्राटक की आशाजनक उपलब्धियां- १०४

चाँदी, सोना, ताँबा, जस्ता, सीसा, राँगा, पीतल, लोहा और कांसे के त्राटक की रोग निवारक विधियाँ।

त्राटक से रोग निवारण

त्राटक द्वारा चमत्कारी शक्तियों का विकास

त्राटक साधना लाखों वर्षों से भारतवर्ष में प्रचलित रही है। इसका अभ्यास कर सिद्धि प्राप्त कर लेने वाले साधकों द्वारा जाने अनजाने अनेक प्रकार की ऐसी चमत्कारी घटनाएँ सामने आती रहीं, जिन्हें देख सुन कर संसार आश्चर्य चकित रह गया। त्राटक सिद्ध योगी शाप या वरदान जो कुछ भी दे बैठता सही सिद्ध होता था। उसकी दृष्टि में आकर्षण और वाणी में ओज भर जाता हैं। वह त्राटक सिद्धि के बल पर संसार को स्तम्भित कर सकता है,चाहे जिसे वश में कर सकता है, चाहे जिसे शक्तिहीन बना सकता है, चाहे जिसे ऊपर से नीचे गिरा सकता है, चाहे जिसे गिरने से रोक सकता है और चाहे जिसे भस्म कर सकता है।

त्राटक दृष्टि में अमृत भरा है तो विष भी भरा है। उसमें प्राण-हर णरगे की और जीवन प्रदान करने को भी शक्ति है। त्राटक सिद्ध योगी कूड़े के ढेर से बालक उत्पन्न कर सकता, नव सृष्टि कर

सकता है, पत्थरों को प्राणवान कर सकता है. खिलौने में जीवन भर सकता है और यह जो कुछ हो सकता है, वह कोई गपोड़ा नहीं, कोई कहानी नहीं, कोई कल्पना नहीं, कोरे स्वप्न, नहीं, सब कुछ ग्रन्थों के आधार पर प्रामाणिक है, पुराणों के आधार पर प्रमाणिक है, नाथ सम्प्रदाय के ग्रन्थों के आधार पर प्रामाणिक है। यही नहीं, आधुनिक घटनाओं के आधार पर हम इस सब को प्रामाणिक मान सकते हैं, प्रामाणिक कह सकते हैं।

त्राटक में सफलता प्राप्त कर लेने पर आप जिन सिद्धियों के जिन उपलब्धियों के स्वामी बनते हैं, वे सिद्धियां, वे उपलब्धियों कहीं बाहर से ही विद्यमान थीं। आप उनके स्वामी पहिले से ही बने होते हैं किन्तु अनजान बने रहते है उनके प्रति। नहीं जानते कि वह सब कुछ हमारे में ही विद्यमान है, सभी कुछ हमारा है, और उन न जानने के फल स्वरूप हम अपसे को असमर्थ, अशक्त पाते हैं। दूसरों के द्वारा कुछ विचित्र घटनाओं का प्रदर्शन देखते हैं तो आश्चर्य करने लगते हैं और समझते हैं कि उसने जो कुछ दिखाया वह अद्भुत है, विचित्र है और शायद किसी दूसरे के लिये वैसा करना भी असम्भव है। जो कुछ उसने दिखाया उसे वही कर सकता है। कम से कम हम तो नहीं कर सकते, क्योंकि हम में वह शक्ति नहीं, वह सिद्धि भी नहीं जिसके बल पर वैसा किया जा सकता है।

त्राटक सिद्धों की बहुत सी घटनाएं पुराणों मे सुनने को मिलती है। उनके प्रति हम कह देते हैं कि इनमें अतिशयोक्ति है, यह भी हो सकता है कि कोरी कल्पना पर ही आधारित हो पुराणों की घटनाएं। शायद हम नाथ योगियों के चमत्कारो पर भी विश्वास न करें और मानलें उन्हें भी कपोल कल्पित, किन्तु उन आधुनिक घटनाओं को निरी कल्पना कैसे मान लें, जिनकी चर्चा समय-समय पर विदेशी पत्र-पत्रिकाओं में भी होती रही है।

एक बार डॉ० अलेक्जेंडर केनन के अनुभवों की चर्चा बहुत जोर पर रही। वे हाँगकाँग के निवासी थे। इंग्लेण्ड की सरकार ने उन्हें 'नाइट' की उपाधि से भी विभूषित किया था। वे आत्म तत्व के अन्वेषणार्थ चीन, भारत, तिब्बत आदि सुदूर देशों की यात्रा करके अनेक अनुभव प्राप्त कर चुके थे।

एक बार तिब्बत के एक लामा के निमन्त्रण पर वे सपरिवार वहाँ पहुँचे। किन्तु मठ पर पहुँचने में एक पचासगज चौड़ी खाई बाधक हो रही थी। केनन समझ रहे थे कि इस खाई को पार किये बिना वहां पहुँचना सम्भव नहीं है। इसलिये वे अपने को कठिनाई में अनुभव कर रहे थे, तभी उनकी दृष्टि एक लामा पर पड़ी जो खाई के पास ही खड़ा था।

लामा के परामर्श पर उन्होंने अपसे स्त्री बच्चे एक समीपस्थ गांव में ठहरा दिये और स्वयं उसके साथ खाई पार करने को तैयार हुए तो लामा ने कहा कि 'आप मेरे बताये हुए शरीर शैथिल्य के कुछ साधनों और प्राणायाम विधियों को कीजिये, जिससे आपका शरीर हल्का हो जायगा और आप मेरे साथ उड़ कर खाई पार कर लेंगे।'

श्री केनन ने लामा से वे साधन सीखे और उसके निर्देशानुसार नेत्र बन्द कर लिये। फिर जब लामा के निर्देश पर उन्होंने नेत्र खोले अपने को खाई के पार पाया। यह देख कर उन्हें बड़ा आश्चर्य हुआ। फिर वे उसके साथ मठ पर पहुँचे जहाँ मठाधीश लामा ने उनका स्वागत किया।

श्री केनन ने अपनी 'इनविजिबिल इन्फ्लूएन्स' नामक पुस्तक में लिखा है कि उस मठाधीश लामा के शरीर से बाहर तीन फिट के घेरे में नीले रंग का एक अद्भुत तेज दिखाई देता था।

डॉ० केनन ने वहाँ एक अत्यन्त आश्चर्य जनक घटना देखी। उनके समक्ष कफन में लपेटा हुआ एक शव लाया गया, जिसकी परीक्षा करने पर उन्होंने पाया कि इसे मरे हुए कम से कम चौवीस घण्टे तो हो ही गये होंगे। किन्तु तभी लामा ने कोई मन्त्र सा गुनगुना कर शव पर अपनी दृष्टि टिकादी और कहा—'उठो भाई! बहुत देर से पड़े सोते हो।'

लामा के यह कहते ही मृतक ने अपनी आँखें खोलीं और चारों ओर दृष्टि घुमा कर उठ खड़ा हुआ। उसने श्री केनक के पास जाकर अभिवादन किया तो उन्हें यह देख कर बड़ा आश्चर्य हुआ कि यह वही व्यक्ति था जो उन्हें योगाभ्यास करा कर खाई के इस पार ला । था।

तभी मठाधीश लामा ने बताया कि इस व्यक्ति को मरे हुए सात वर्ष हो चुके हैं और यह इसी प्रकार सैकड़ों वर्ष तक रखा जा सकता है। लामा उनके मन की बात भी जान लेता था और उनके कुछ कहने से ही पहिले ही उनकी शंका का थी उत्तर दे देता था। वस्तुत: यह त्राटक विद्या का ही प्रभाव था, जो दूसरों के मन की बात बताने या चाहे जिसे मूच्छित अथवा विमोहित करने में समर्थ है।

केनन ने मठाधीश लामा से त्राटक विद्या को सीखा और उसे ध्यान साधना का ही एक अंग मानते हुए लिखा है कि साधक लामा लोग सूर्योदय होने से एक घण्टा पहिले त्राटक का अभ्यास आरम्भ करते और सूर्योदय होने पर समाप्त कर देते हैं। वे श्वेत पाषाण या स्फटिक पाषाण अथवा शालग्राम को आँखों की सीध की ऊँचाई पर अपने से दो फिट की दूरी पर टकटकी लगाकर देखते रहते हैं। उनका यह अभ्यास तब तक रहता है जब तक आँखें थक नहीं जाती। जब पाषाण पर दृष्टि स्थिर करने का अभ्यास सिद्ध हो जाता है, तब घृत

का दीपक जला कर उसकी लौ पर दृष्टि स्थिर करने का अभ्यास करते हैं। यह अभ्यास सिद्ध होने पर नासिका के अग्रभाव पर दृष्टि स्थिर करते का अभ्यास करते हैं। ऐसा करते समय वे अपनी ठोड़ी को कण्ठकूप में लगा लेते हैं। इतना अभ्यास होने पर निम्न प्रकार से त्राटक विद्या की अन्तिम सिद्धि का अभ्यास करते हैं—

गोल गुम्बज, दूर पर लगे हुए वृक्ष, आकाश में तारे और चन्द्रमा आदि पर दृष्टि स्थिर की जाती है। उसके बाद तीव्र ज्योति वाले मध्यमों पर दृष्टि स्थिर करते हैं और इसका अभ्यास दृढ़ होजाने पर सूर्य की ओर देखने का अभ्यास करते हैं।

किन्तु सूर्य की ओर देखने का अभ्यास एक बहुत कठिन कार्य है। सूर्य पर सीधी दृष्टि टिकाने का अभ्यास नहीं करना चाहिये। वरन् सूर्य से एक मीटर की दूरी पर, आकाश में ही दृष्टि टिकानी चाहिये। वह भी इस प्रकार, जिससे कि सूर्य के प्रकाश का कोई प्रतिकूल प्रभाव आँखों पर न पड़े। अन्यथा सूर्यान्धता का कुयोग उपस्थित हो सकता है।

योगशास्त्र में ध्यान बिन्दु साधना का जो वर्णन मिलता है, उसमें खुले नेत्रों से किसी मूर्ति, चित्र अथवा ज्योति के ध्यान का निर्देश है। उसकी सिद्धि होने पर यह माना जाता है जिन भौहों के मध्य जो तृतीय नेत्र (आज्ञा चक्र) है, वह खुल जाता है। इसी चक्र में विश्व के समस्त ज्ञान विज्ञान और शक्ति सामर्थ्यों का समावेश है। मनुष्य की सभी इच्छाओं कामनाओं का समाधान एक इसी आज्ञा चक्र में विद्यमान है। योगियों ने मूलाधार से आज्ञाचक्र पर्यन्त छः चक्रों का वर्णन किया है। यह सभी चक्र कुण्डलिनी शक्ति के जाग्रत् होने पर ही खुल पाते हैं। किन्तु साधक को इसका आभास सहज में नहीं हो पाता कि उसके शरीर में विद्यमान चक्रों का उद्घाटन होने लगा है।

कुछ लोग भ्रमवश भी अपने में कुण्डलिनी का जाग्रत् होना मान लेते हैं, जिससे कोई विशेष लाभ नहीं हो पाता। इसके विपरीत बहुत से साधक कुण्डलिनी जागरण और चक्र वेधन के होने पर भी नहीं जानते कि वैसा होगया है। यद्यपि उन्हें जो विशेष अनुभूतियाँ घटित होती हैं, उससे उन्हें कुछ आश्चर्य होता है।

त्राटक साधना के द्वारा कुण्डलिनी जागरण की घटना स्वयं हो जाती है। षट्चक्र भी खुल जाते हैं और जब कुण्डलिनी आज्ञाचक्र को खोल कर आगे बढ़ती है, तब तो साधक जिस ऊर्जा से सम्पन्न हो जाता है, उसके विषय में कोई निश्चित अनुमान नहीं लगाया जा सकता। घेरण्ड संहिताकार ने इस स्थिति को शाम्भवी मुद्रा कहा है— निमेष उन्मेष को रोकने पर जब तक आँसू न गिरने लगें तब तक किसी लक्ष्य की ओर टकटकी लगाकर देखने को ही विज्ञजन त्राटक कहते है। इसके अभ्यास से शाम्भवी मुद्रा दृढ़ होतीं है तथा नेत्र के दोषों का निवारण होकर दिव्य दृष्टि उपलब्ध हो जाती है।

इस प्रकार यह आवश्यक है कि साधक का ध्यान किसी एक वस्तु पर केन्द्रित रहे। ध्येय वस्तु तो कोई भी हो सकती है, जैसे कोई बालक युवा स्त्री, तरुण पुरुष, कोई गहरे रंग का चित्र, कोई सुन्दर मूर्ति, कोई रत्न, कोई काँच की गोली, कोई फल, कोई रुखड़ी आदि। यदि किसी बोर्ड पर कोई आकृति अंकित करके प्रयोग में लाइ जाय तो भी त्राटक सिद्धि सफलता पूर्वक हो सकती है।

एक यह मान्यता रही है अनुभवियों की कि नेत्रों में सब से अधिक आकर्षण शक्ति विद्यमान है। यदि उस शक्ति को एक विन्दु पर केन्द्रित करलें तो उसके प्रभाव से उस आकर्षण शक्ति में सैकड़ों, सहस्रों गुणा वृद्धि हो सकती है।

——

मानवीय ऊर्जा को आन्दोलित करने की वैज्ञानिक पद्धति-त्राटक

योग-साधना का अङ्ग त्राटक–

त्राटक-साधना योग-साधना है, ध्यान-साधना है, किन्तु सभी साधनाओं में इतनी अधिक उपयोगी सिद्ध हुई है कि भारतवर्ष में नहीं, विदेशों में भी इसका बहुत प्रचार बढ़ रहा है। तिब्बत के मठाधीश लामा और डॉ. अलेक्जेंडर केनन की घटना इसके प्रमाण रूप में हम पीछे दे भी चुके हैं। अनेक विदेशी विद्वानों ने त्राटक के चमत्कारों पर समय-समय पर प्रकाश भी डाला है।

और वर्तमान समय में हम अनेक जादूगरों की बातें सुनते हैं, जिनके अनेक चमत्कारों के प्रदर्शनों की पुष्टि मिलती है। आधुनिक हिप्नाटिस्ट भी त्राटक जैसे प्रयोगों का अभ्यास कराने और उसके द्वारा इच्छित कार्य लेते हैं।

त्राटक और हिप्नोटिज्म के सिद्धान्त में भी कोई बहुत बड़ा अन्तर नहीं है। शरीर में विजली है। मानवीय विद्युत, उसकी धारा कभी-कभी अत्यन्त बलवती हो सकती है। जब वह अधिक बलवती होती है तब उससे बाह्य विद्युत के करेंट जैसे झटके लगते हैं। शायद कभी आपने शरीर के किसी भाग में सुई के समान चुभन जैसी पीड़ा का अनुभव किया हो। उस पींड़ा का, उस चुभन का कारण विद्युत ऊर्जा का विकार ग्रस्त होना ही समझा जाता है।

कभी-कभी शरीरस्थ विद्युत् की आश्चर्यजनक घटनाएँ घटित होती हुई देखी सुनी जाती है। वे घटनाएँ सच्ची होते हुए भी कौतूहल का का कारण बन जाती हैं। शारीरिक विद्युत की प्रखरता ही मनुष्य को अतीन्द्रिय क्षमता से सम्पन्न बना देती है।

इसी शारीरिक विद्युत् पर मनुष्य की हीनता या उत्कृष्टता की बहुत कुछ निर्भरता है। जब उसके प्रवाह में कुछ अवरोध या कुछ विकृति आ जाती है, तब विभिन्न प्रकार के रोग उत्पन्न हो जाते हैं। यदि विद्युत्-प्रवाह सामान्य अवस्था में रहे तो किसी प्रकार की हानिकारक या पीड़ाप्रद स्थिति उत्पन्न नहीं हो सकती।

शुद्ध ऊर्जा का अतिक्रम शरीरधारी में कोई विशेषता, कोई रोग, कोई विकृति उत्पन्न करने वाला हो सकता है। यदि उस ऊर्जा का प्रवाह ठीक रहे तो शरीर के जिसे अङ्ग, जिस अवयव पर उसका प्रभाव पड़ेगा, वही अंग, वही अवयव अधिक पुष्ट, अधिक सुष्ठु, अधिक स्वस्थ और क्रियाशील रहेगा। यदि उसका उपयोग सही रूप में न किया जाय तो यह भी सम्भव है कि उसके विपरीत परिणामों का शिकार बन जाना पड़े।

डॉ. मेस्मर जैसे मेधावी आविष्कारक ने अपनी प्रणाली में चुम्बकीय प्रभाव का कारण भी मानवीय विद्युत् को ही माना है। यह विद्युत् सभी शरीरों में विद्यमान है, किन्तु उसे प्रखर बनाना आपके अभ्यास पर बहुत कुछ निर्भर है। भारतीय योगी त्राटक के अभ्यास से अपनी आन्तरिक विद्युत्-ऊर्जा को ही प्रखर बनाते और उसके बल पर सभी इच्छित कार्य पूरे करने में समर्थ होते हैं। डॉ. मेस्मर ने इसी सिद्धान्त के बल पर यह पाया कि मेस्मरेजिम क्रिया में किसी प्रकार की विशेष उपलब्धि ही नहीं रोग-शासक शक्ति भी प्रखर हो जाती है। हिप्नोटिज्म की क्रिया से भी, जो वि त्राटक का एक ही आधुनिक अंग है,

साधारण रोग ही नहीं, बड़े-बड़े असाध्य रोगों तक का निवारण हो जाता है।

विदेशों में अनेक दन्त-चिकित्सक अपनी चिकित्सा में इस प्रणाली से बहुत कुछ काम लेते हैं। रोगी दर्द से बुरी तरह कराह रहा हो, तो भी वे उसे सम्मोहित करके चुप कर देते हैं। उसका दर्द मिनटों में छूमन्तर हो जाता है और उस अवस्था में उसका दाँत निकालने में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होती।

सिर-दर्द, पेट-दर्द या सर्वांग दर्द में भी इस प्रक्रिया के द्वारा शीघ्र ही आराम हो जाता है। आधासीसी प्रभृति घोर पीड़ा में भी इस पद्धति से तुरन्त लाभ का अनुभव होने लगता है और बुरी तरह चीखते-चिल्लाते हुए रोगी भी हँसने-मुसकराने लगते हैं।

गर्भवती स्त्रियों की गर्भ कालीन परेशानियाँ तथा प्रसव काल की वेदनाएँ भी इस प्रक्रिया से शीघ्र मिट जाती हैं। इस प्रकार विकृत अवस्था वाले गर्भ भी स्वाभाविक रूप से, बिना कष्ट के बाहर निकल आते हैं। और इस प्रकार उपलब्धियों में आज पाश्चात्य देश आगे बढ़ रहे हैं।

यहाँ यह प्रक्रिया शल्य चिकित्सा में भी उपयुक्त सिद्ध हुई है। इसमें रोगी को बेहोश करने की आवश्यकता नहीं होती वरन् वह सम्मोहित अवस्था में चुपचाप आँपरेशन टेबुल पर पड़ा रहता है। इस प्रकार बड़े-बड़े आपरेशन भी पूर्ण सफल रहते हैं।

त्राटक द्वारा रोग निवारण की वैज्ञानिक पृष्ठभूमि

वात रोग, कुष्ट, कैंसर आदि पर भी इस विधि का अत्यधिक प्रभाव पड़ता है। क्षय रोग, कण्ठ रोग, उदर रोग आदि के शमन में यह एक

वरदान ही सिद्ध हुई है । उन्माद, अपस्मार, योषापस्मार (हिस्टिरिया) प्रभृति रोग इस पद्धति से सहज ही निर्मूल किये जाते रहे हैं ।

डॉ. मेस्मर का मत रहा है कि 'सूर्य, चन्द्रमा, ग्रह और पृथिवी आदि सभी किसी अज्ञान शक्ति से प्रभावित हैं । इसका अभिप्राय है कि सभी जीव, किसी न किसी प्रकार, एक-दूसरे के प्रभाव में रहते है । इस प्रकार जीव का प्रभाव जीव पर होने की मान्यता से ही यह मान्यता बनती है कि पंचमहाभूतों में से भी प्रत्येक भूत का प्रभाव अपने से भिन्न भूत पर अवश्य रहता है । क्योंकि यह समस्त संसार और समस्त शरीर पंचभूतात्मक ही हैं ।

वेदान्त की पंचीकरण क्रिया के विषय में जानकारी प्राप्त कर लेने पर उक्त तथ्य और भी स्पष्ट रूप से यथार्थ सिद्ध होता है । शास्त्र में एक वाक्य मिलता है—'आकृष्णोन रजसा' इत्यादि, जिस का अभिप्राय है कि रश्मियों के आकर्षण से पृथिवी टिकी हुई है । यही आकर्षण शक्ति वह चुम्बक शक्ति है, जिसके सहारे पृथिवी, आकाश आदि सभी लोक पारस्परिक आकर्षण में बाँध कर टिके हुए हैं ।

जब यह चुम्बकीय शक्ति विशेष अवस्था में होती है तब उससे विद्युत-उत्पन्न हो जाती है । यदि आप इलेक्ट्रिक क्वायल के विषय में जानते हों तो इस तथ्य को अधिक ठीक प्रकार से समझ सकते हैं । क्वायल बिजली के तारों का एक गोल गुच्छा जैसा होता है । उसे बीच में रख कर उसका एक सिरा विद्युत् मापक यन्त्र (वोल्ट मीटर) से लगा कर और चुम्बक को शीघ्रता से कुछ ऊपर उठाकर वहीं रख दें तो वोल्ट मीटर की सुई से विद्युत् का उत्पन्न होना प्रत्यक्ष रूप से जाना जा सकेगा । किन्तु उसकी मात्रा अधिक हल्की होगी । इसमें यह तथ्य भी ध्यान देने योग्य है कि क्वायल और चुम्बक का परस्पर स्पर्श न होते हुए भी विद्युत् उत्पन्न हो जाती है ।

डॉ. मेस्मर ने इसी आधार पर यह निर्णय लिया था कि प्राणियों

की आन्तरिक चुम्बक शक्ति से विद्युत उत्पन्न हो जाती है, इसलिये वे एक चुम्बक अथवा चुम्बक शक्ति से पूरित वृक्ष बीच में रखकर उसके चारों ओर अपने रोगियों को गोलाकार रूप में खड़ा करते या बैठा देते थे। इसमें एक दूसरे का परस्पर में सम्पर्क होने पर जो विद्युत् उत्पन्न होती थी, उससे रोगी रोग मुक्त हो जाते थे।

वैज्ञानिकों का भी मत है कि शरीर के अङ्ग प्रत्यङ्ग में विद्युत्-ऊर्जा की उत्पत्ति में सहायक अनेक उपकरणों के साथ ही रासायनिक पदार्थों की भी कमी नहीं है। रक्त-संचार की वह क्रिया इन सभी को संचरणशील रखती है और विद्युत्-उत्पादन का कार्य भी निरन्तर चलता रहता है।

कोशिकाओं की आन्तरिक संरचना में 'माइटो कोण्डिया' नामक एक महत्वपूर्ण आधार है, जिसे कोशिकाओं का भण्डार भीं कह सकते हैं। रक्त, मांस, अस्थि आदि में पहुँचा हुआ आहार जब आगे बढ़ता है, तब इसी संस्थान में पहुँच कर ऊर्जा के रूप में परिवर्तित हो जाता है।

जब यही ऊर्जा कोशिकाओं को सक्रिय रखती है। तब उनकी सामूहिक क्रिया जीव-संचालक के रूप में दिखाई देती है। यदि हम इसी ऊर्जा को लघुत्तम प्राण कहें तो कह सकते हैं। क्योंकि शरीर में इसका इकट्ठा होना ही महाप्राण बन जाता है। और उसी की ब्रह्माण्ड व्यापी चेतना विराट् प्राण या विश्व प्राण को कहलाती है।

जिस रूप में यह विराट् प्राण गतिशील रहता है, उसी रूप में इकाई कोशिका में प्राणांश की लघुत्तम ऊर्जा विद्यमान रहती है। इन दोनों के मध्य बिन्दु और सिन्धु जैसा अन्तर होते हुए भी उनके अन्योन्याश्रित सम्बन्ध को स्वीकार करना होगा। इससे इनका एकत्री करण भी सिद्ध होता है।

यदि कोशिका में प्राणांश के घटकों का परस्पर मिलनन हो तो महाप्राण का अस्तित्व ही नहीं बन सकता और यदि महाप्राण का

अस्तित्व नहीं बनता तो न तो आहारादि का पाचन ही होगा और न लघुप्राण जैसी विद्युत्-धारा का ही संचार हो सकेगा।

और इस स्थिति में शरीर में अनेक रोगों की उत्पत्ति हो सकती है। जब आहारादि का पाचन नहीं होता तो समूचा शारीरिक यंत्र ही बिगड़ जाता है। इसी के फल स्वरूप विभिन्न प्रकार के रोगों की उत्पत्ति हुई देखी जाती है। इसी स्थिति को ध्यान में रखते हुए भारतीय योगियों ने योग की विविध क्रियाओं की व्यवस्था की। उन क्रियाओं का मुख्य उद्देश्य कोशिका में प्राणांश के घटकों का परस्पर मिलाना भी रहा है। योगीजन अपनी साधनाओं के द्वारा ही मनुष्य शरीर में प्रसुप्त शक्ति को अधिकाधिक रूप में संवर्द्धन करते हैं। उन साधनाओं में ध्यान या त्राटक साधना को भी प्रमुखता दी जाती रही है।

योगाचार्यों ने उसी शक्ति को आत्मशक्ति कहा है। वही आत्मबल, प्राण-बल या मनोबल के नाम से पुकारी जाती है। संकल्प शक्ति या इच्छा शक्ति भी इसी के भेद हैं। इसका अधिक ऊँचा ज्ञान अध्यात्म शास्त्रों में उपलब्ध प्राणविद्या के विवेचन द्वारा प्राप्त कर सकते हैं। इसी प्राण-शक्ति का विकास एक साधारण या रोगी साधक को भी महा-सिद्ध तथा पूर्ण स्वस्थ बना सकता है।

आज के वैज्ञानिकों ने जिन तथ्यों को आज कहा है, उनका उद्-घाटन हमारे ऋषि-मुनियों ने लाखों वर्ष पहिले ही कर दिया था। योगशास्त्र तो यहाँ तक कहते हैं कि एक के शरीर की प्राणशक्ति खींच कर दूसरे के शरीर में प्रविष्ट की जा सकती है! पर काया प्रवेश की यह प्रक्रिया पुराकाल से ही प्रसिद्ध रही हैं।

—

विश्वास में चुम्बक से भी अधिक प्रबल शक्ति है।

परन्तु संसार में जो कुछ भी होता है, उसकी सफलता का आधार विश्वास ही हैं। किसी भी पद्धति में, किसी भी विधि में विश्वास के बिना कोई कार्य ही नहीं चल सकता। औषधोपचार कराते हैं तो उसमें भी विश्वास चाहिये। एक पर नहीं, दोनों पर विश्वास हो-चिकित्सक पर भी औषधि पर भी। विश्वास के बिना कोई दवा काम नहीं कर पाती। आप समझें कि अमुक चिकित्सक अधिक होशियार नहीं, तो उसकी दवा भी आपको शायद लाभ पहुँचा पाये।

मन्त्रोपचार हो या तन्त्रोपचार, उसमें भी विश्वास चाहिये। यदि विश्वास न हो तो मन्त्र, तन्त्र कुछ भी सफल नहीं हो सकता। अनेक वैज्ञानिकों की मान्यता है कि चुम्बक से भी अधिक प्रबल शक्ति आन्तरिक विश्वास में है। हिप्नोटिज्म में यही आन्तरिक विश्वास भावना या सजेशन कहा जाता है। डॉ. चारकाट का मत है कि मनुष्य पर आशातीत प्रभाव डालने में चुम्बक का उतना महत्व नहीं, जितना कि भावना का है। इस भावना के बल पर संसार के बड़े-बड़े कार्य सिद्ध हो जाते हैं।

परन्तु यदि भावना और चुम्बक शक्ति दोनों को ही सम्मिलत करके उनसे कार्य लिया जाय तो और भी अधिक सफलता प्राप्त हो सकती है। यदि शरीर की चुम्बक शक्ति की पर्याप्त वृद्धि करके उसे भावना के साथ हिप्नोटाइज करें तो अवश्य ही उसके परिणाम अद्भुत एवं आश्चर्य जनक होते हैं। हिप्नोटिज्म का यह सिद्धान्त योग-साधना के सिद्धान्तों का ही लघु रूप है। यही कारण है कि जितना लाभ मैस्मे-

रिज्म या हिप्नोटिज्म से होता है, उतने से ही अधिक त्राटक द्वारा सम्भव है।

विभिन्न शक्तियों का जितना ही अधिक एकीकरण होता है, ऊर्जा भी उतनी ही अधिक बढ़ती है। डॉ. मेस्मर के मत में जब एक से अधिक लोक, जीव अथवा तारे आदि का सम्पर्क होता है, तब उनकी पारस्परिक आकर्षण शक्ति मिल कर और भी अधिक प्रबल हो जाती है और उस स्थिति में उनकी चुम्बकीय शक्ति का प्रभाव भी बहुत बढ़ जाता है।

भारतीय अध्यात्म विद्या में ज्ञान शक्ति, इच्छा शक्ति और क्रिया-शक्ति की प्रमुखता स्वीकार की गई है। यह तीनों शक्तियाँ परस्पर में एक दूसरी से मिली-जुली रहती हैं। ज्ञान शक्ति के द्वारा उन महत्वपूर्ण क्रियाओं का ज्ञान होता है, जो विशेष उपलब्धि में सहायक सिद्ध होती है। इच्छा शक्ति उन क्रियाओं के लिये प्रेरित करती है तथा क्रियाशक्ति उन्हें सम्पन्न कर देती है।

यह तीनों शक्तियाँ अध्यात्म में ही नहीं, मनुष्यों के छोटे-बड़े सभी दैनिक कार्यों में सहायक सिद्ध होती है। यह भी समझ लेने की बात है कि अकेली इच्छा शक्ति के द्वारा ही किसी कार्य का सम्पादन नहीं हो सकता, वरन् शक्तियों के सम्मिलित योग से ही सब कुछ हो सकता है।

इच्छा शक्ति की प्रबलता और उत्कृष्टता का सिद्धान्त कुछ नया नहीं है, वरन् आदि काल से चला आरहा है। भारतीय अध्यात्म ग्रन्थों में तो इसका वर्णन अनेक स्थानों पर हुआ है। हमारे ऋषि-महर्षि इच्छा मात्र से चाहे जब, चाहे जिसे बुला लेते थे तथा उनके लिए चाहे जब चाहे जहाँ पहुंच जाना कोई कठिन बात नहीं थी।

जो साधकगण अपनी इच्छाओं को वश में रखने का अभ्यास कर लेते हैं, वे कठिन परिस्थिति उत्पन्न होने पर अपने लक्ष्य की ओर बढ़ते जाते हैं। तब उन्हें सफलता भी अवश्य मिल जाती है। इस विषय में

यह समझ लेना चाहिये कि मन में बुरी इच्छाओं की वृद्धि का ही प्रयत्न करना चाहिये। क्योंकि बुरी इच्छाएँ मनुष्य के उत्थान में बाधक होती है और उनका प्रभाव शरीर पर भी कुछ अनुकूल नहीं पड़ पाता।

बुरी इच्छाएँ आत्मा के अनुकूल नहीं होने के कारण प्रभावहीन और अस्तित्वहीन रहती हैं। क्योंकि वे इच्छाएँ नहीं होती, वरन् दुष्प्रवृत्तियों का आवेगमात्र होती हैं। जो साधक दुष्प्रवृत्तियों के उस कुवेग को समझ लेता है, वह अपनी इच्छाओं में सुधार कर लेता है।

चेतन मन की सजगता के असाधारण परिणाम

मन के दो मुख्य भेद प्रसिद्ध हैं—चेतन और अचेतन। एक अर्द्ध-चेतन भी है जो चेतन-अचेतन के मध्य में रह कर उनका सम्बन्ध बनाने का कार्य करता है। पाश्चात्य विशेषज्ञों ने चेतन मन को 'ऑब्जेक्टिव माइण्ड' और अचेतन मन को 'सब्जेक्टिव माइण्ड' कहा है। बाह्य मन और आन्तरिक मन भी क्रमशः इन्हीं के भेद हैं।

बाह्यमन या चेतन शरीर के समस्त बाह्य अवयवों को अपने वश में रखता और उनका सञ्चालन करता है। इसके विपरीत, आन्तरिक या अचेतन मन शरीर के आन्तरिक अवयवों को अपने नियन्त्रण में रखता है ' आहार के चुनाव का कार्य, चेतन मन करता है, किन्तु उसे पचाने का कार्य अचेतन मन के ही अधीन है। अचेतन मन ही अहार को पचाता, वही उसका रस, रक्त बनाता और विविध धातुओं के रूप में बदलता है। शरीर में रक्त सञ्चार की जो क्रिया होती है, उसे नियमित रखना भी अचेतन मन का ही कार्य है।

और शायद आप जानते हों कि जब तक चेतन मन जागता रहता है, तभी तक आपको नींद आती। जब मनुष्य सोता है तब चेतन मन भी सोजाता है। नींद नहीं आती। जब चेतन मन सजग होजाता है। वह जितना ही सजग होगा आप उतने ही चैतन्य होंगे और आप जितने ही अधिक चैतन्य होंगे उतनी ही अधिक क्रियाशीलता बढ़ेगी। चेतन मन की सजगता आपकी ज्ञान, इच्छा और क्रिया-शक्तियों को सबल बनाती है।

परन्तु आप सोते हैं, जब आपका चेतन मन सोता, तब जागता रहता है अचेतन मन। अब आपके शरीर की समस्त निष्क्रियता नष्ट होकर सक्रियता आजाती है उसमें। अचेतन जब जाग उठता है तब मनुष्य में अभूतपूर्व, अद्वितीय कार्य क्षमता उत्पन्न हो जाती है। क्योंकि उस समय वही अधिक तत्पर रह कर कार्य करता है। चेतन मन तो निष्क्रय हो जाता है।

और अचेतन मन की पकड़ हमारे अपने शरीर तक ही सीमित नहीं है वरन् वह संसार के किसी भी भाग प्राणी के शरीर के सम्पर्क में आ सकता है। उसके द्वारा त्रिलोकी का भ्रमण हो सकता है और चाहे जिस व्यक्ति या वस्तु के गुण का आकर्षण किया जा सकता है। प्राचीन ऋषि मुनि अपने अचेतन मन से कार्य लेने के लिये चेतन मन को अधिक सचेत बनाने का प्रयत्न करते थे। उनकी साधना उनके चेतन मन को इतना सचेत बना देती थी कि वह अचेतन के दवाव में उतना अधिक नहीं दब पाता था, इसलिए उसमें सजगता के साथ सक्रियता भी अधिक से अधिक उत्पन्न होजाती थी। हिप्नोटिज्म की प्रक्रिया में इसी अचेतन मन के द्वारा विविध प्रकार के कार्य लिये जाते हैं।

योग साधना इससे भी अधिक क्रियाशीय बनाती है मन को। उसमें अचेतन से तो कार्य लिया ही जाता है, चेतन को भी प्रखर

बनाया जाता है। हिप्नोटिस्ट के लिए यह आवश्यक होता है कि वह बाह्य मन को प्रसुप्त करदे। वस्तुतः योगियों ने भी इस स्थिति को ठीक प्रकार से समझा हुआ है। वे जहाँ चेतन को प्रखर बनाने का प्रयत्न करते हैं, वहाँ कुछ लौकिक परिस्थितियों में अचेतन को ही अधिक क्रियाशील और शक्तिशाली बनाना होता है।

जो कार्य बहिर्मन के लिये कर सकना सम्भव नहीं होता, उसे करने में अन्तर्मन पूर्णतया समर्थ है जिस रोग का उपचार किसी औषधि से नहीं हो सकता, उसका उपचार रोगी के बाह्य मन को प्रसुप्त करके सहज रूप में किया जा सकता है। रोग क्या है ? इसकी जानकारी भी अन्तर्मन के द्वारा सहज ही हो सकती है।

किन्तु अपने स्वयं के उपचार में चेतन मन अधिक सचेत करना अपेक्षित होगा। आपका चेतन मन अधिक सजग होगा तो आप अपने रोग के निदान करने में पूर्ण सफल हो सकेंगे। आपको अपनी चिकित्सा के लिये माध्यम चुनना भी कुछ कठिन न होगा। क्योंकि त्रातक साधना के लिए आप किसी भी वस्तु, व्यक्ति, चित्र, वृक्ष, गुम्बज,, ग्रह, रत्न, पुष्प, पत्र आदि को माध्यम (साधन) रूप में चुन सकते हैं। आपकी इच्छा पर, आपकी पसन्द पर निर्भर है कि चाहे जिस वस्तु पर त्राटक-साधना आरम्भ करें।

इस प्रकार मन की चञ्चलता से विमुक्त होकर, पूर्ण विश्वास के साथ यदि आप त्राटक-साधना करें तो उससे स्वयं तो रोगों से मुक्त हो ही सकते हैं। साथ ही दूसरों का भी उपकार करने में समर्थ हो सकते हैं।

त्राटक द्वारा विभिन्न रोगों का निवारण

जादू, तन्त्र-मन्त्र और त्राटक—

विगत कुछ शताब्दियों से मनुष्य विज्ञान की ओर तीव्र गति से बढ़ा है। उसका कारण विज्ञान के द्वारा विविध विषयों में मिलने वाली सफलता ही मुख्य है। प्राचीन युग में कोई जादू जैसी विद्या रही है यह बात भी कुछ कल्पना पर ही आधारित प्रतीत नहीं होती।

कुछ लोग तो ऐसा मानते हैं कि जादू भी एक विज्ञान ही है। वह कुछ तन्त्र-मन्त्र आदि पर भी आधारित रहा है, किन्तु नये-नये बहुत-से प्रयोगों और परिक्षणों ने जादू के क्षेत्र में भी दिशा परिवर्तन का पूरा कार्य किया है। वर्तमान समय में भी अनेक व्यक्ति जादूगर नाम से प्रसिद्ध हो रहे हैं और उनके चमत्कारों को देख कर दुनिया आश्चर्य चकित रह जाती है।

शायद आपने बङ्गाल के जादू का नाम सुना हो। उसके चमत्कारों के विषय में पुराने लोग बहुत सी कहानियाँ सुनाया करते थे। सेवड़े का जादू भी बहुत प्रसिद्ध रहा है। कहते हैं कि वे जादूगर चाहे जिसे आकर्षित करके अपने यहाँ कैद कर लेते थे। उस जादू में वहाँ की स्त्रियाँ भी बहुत बढ़ी-चढ़ी थीं और वे चाहे जिससे चाहे को कार्य लेने में समर्थ थीं।

कहा तो यह भी जाता है कि वे स्त्री-पुरुष जादूगर चाहे जिसे भेड़, बकरा, गधा, कुत्ता, बन्दर, सिंह आदि बना लिया करते थे इस कथन में

कितनी सत्यता है यह तो हम नहीं जानते, किन्तु यह कह सकते हैं कि किसी भी व्यक्ति को आकर्षित कर लेना तो साधारण योग साधना से ही सम्भव है। त्राटक-साधक ही चाहे जिसे आकर्षित कर सकते हैं। आधुनिक समय में कुछ हिप्नोटिस्ट भी इस प्रकार का दावा करते हैं।

जादू भी निरे यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र पर ही टिका हुआ नहीं था। उसके साथ भी योग-साधना मिश्रित थी। योग की अनेक क्रियाएँ सभी साधनाओं के साथ स्वतः मिल जाती हैं, जिनके विषय में योगेतर साधना वाले साधक अनभिज्ञ रहते हैं।

मान लीजिये कि आपको मन्त्र जप करना है तो उसमें ध्यान का भी आश्रय लेना होगा। जब तक ध्यान को नहीं जोड़ा जायगा मन्त्र के साथ तब तक जप का कोई भी फल मिलेगा, इसमें सन्देह ही है। यही बात पूजा-उपासना, सङ्कीर्तन आदि के साथ भी है। पूजा करते हैं तो ध्यान भी करना होगा इष्ट देवता का। भक्ति करते हैं तो भगवान् का ध्यान करेंगे तभी भक्ति में सफलता मिलेगी।

यह निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि ध्यान के बिना उपासना व्यर्थ है, पूजा व्यर्थ है, यन्त्र-तन्त्र-मन्त्र की साधना भी व्यर्थ है। योग में तो ध्यान की विशेषता है ही, क्योंकि जब तक योगी ध्यान में सफलता प्राप्त नहीं करता, तब तक उसे समाधि भी नहीं लग सकती।

बहुत बार कह चुके हैं कि त्राटक भी ध्यान का ही एक प्रकार है, इसलिए जिस क्रिया में ध्यान का उल्लेख हुआ है, उसमें त्राटक क्रिया का भी उपयोग किया जा सकता है। वरन् ध्यान में जो कठिनाई रहती है आरम्भ में, उतनी त्राटक-साधना में नहीं होती क्योंकि ध्यान में आँखें बन्द करके अपनी कल्पना को चित्त-वृत्ति पर उतारना होता है, जो कि अधिक सरल नहीं है। किन्तु त्राटक में कोई वस्तु सामने रख कर ही उस पर दृष्टि टिकाने का आरम्भ किया जाता है। वैसा करने में मस्तिष्क को कल्पना साकार करने की अपेक्षा नहीं होती।

और हमने जो कुछ भी ऊपर कहा है, वह एक तथ्य है। यह एक अनुभूत बात है, जिसे साधना के समय साधकगण स्वयं अनुभव करते हैं। आप ध्यान को सरल पायें भी तो उसका अन्तिम फल समाधि के रूप में प्रत्यक्ष होगा। जबकि यदि त्राटक का अभ्यास करें तो उसका फल अतीन्द्रियता की प्राप्ति के रूप में हो सकता है।

त्राटक को कुछ लोग द्विमार्गी कहते हैं—वह स्थूल भी हैं, सूक्ष्म भी है। वह भौतिक भी है, अभौतिक भी है। उसके द्वारा आप ज्ञान-विज्ञान युक्त अतीन्द्रियता भी प्राप्त कर सकते हैं और लौकिक सिद्धियाँ भी। त्राटक आपको अध्यात्म मार्ग पर भी ले जा सकता है और सुख-भोगों के मार्ग पर भी।

किसी भी मार्ग पर चलें आप त्राटक-साधना के द्वारा वही आपके लिए सफलता का मार्ग खोलेगा, वही आपके लिये लक्ष्य पर पहुंचा सकेगा। वही आपके लिये स्वस्थ, सुखी बनाने में सहायक हो सकेगा। आप त्राटक के द्वारा वह सभी कुछ प्राप्त कर सकते हैं, जिसकी अभिलाषा है आपको।

एक मजे की बात है कि आप त्राटक साधना के द्वारा अपना इच्छित ही प्राप्त नहीं करते, कुछ ऐसा भी अनुभव करते है, जिसमें मनोरञ्जन है, हर्ष है, उन्लास है। कोई भी कार्य ऐसा नहीं, जिसमें आप सफल न हों त्राटक के द्वारा। कोई भी रोग ऐसा नहीं,जिसे त्राटक दूर करने में असमर्थ रहे।

इससे हम समझते हैं कि त्राटक जहाँ एक सफल साधना है योग की, वहां रोग-निवारण की भी एक सरल विधि है। कोई रोग हो, त्राटक-साधना के द्वारा सहज ही मिट सकता है। यह हो सकता है कि साधना में आपके द्वारा होने वाली कमी आपको सफलता के शिखर पर न पहुंचने दे। किन्तु यह मानना अनुचित न होगा कि कम से कम नब्बे प्रतिशत साधक इसके प्रभाव से अवश्य ही लाभान्वित हो सकते हैं।

जो लोग त्राटक-साधना करते हुए भी रोग-निवारण रूपी परिणाम से वञ्चित रह जाते हैं, उनके विषय में यह मानना होगा कि साधना में कहीं कुछ कमी अवश्य है। अथवा आस्था या विश्वास की कमी से भी सम्भव है कि कोई साधक अपने उद्देश्य की प्राप्ति में असफल रह जाय।

कामशक्ति सम्वर्द्धन--

बहुत बार इस साधना से लाभ ही दिखाई दिया है। कभी-कभी तो जितनी आशा की गई लाभ की, उससे अधिक लाभ प्रतीत हुआ उसे। एक अनुभवी व्यक्ति ने बताया कि उसने सोने के एक सिक्के पर त्राटक का अभ्यास किया। उस अभ्यास का उद्देश्य शारीरिक और मानसिक दुर्बलता को दूर करना था। सोने के त्राटक से उसने पाया कि उसकी सब प्रकार की शक्ति में सम्वर्द्धन होगया। विशेष रूप से उसका प्रभाव मूलाधार और मेढ़्र पर पड़ा, जिससे उसे शीघ्र पतन और स्वप्नमेह का जो रोग लगा था, वह इस साधना से बिल्कुल नष्ट होगया।

एक अन्य साधक ने भी हमें ऐसा ही बताया कि स्वर्ण का सम्बन्ध सूर्य से ही उसमें सूर्यगुण का समावेश होता है, इसलिए क्लीवत्व को नष्ट करने में अधिक उपयोगी है। इसके द्वारा काम शक्ति भी बहुत बढ़ जाती है। शीघ्रक्षरण के अनेक रोगियों ने इस साधना से बहुत लाभ उठाया है। जो लोग स्त्री के समीप जाने में संकोच करते थे, उनका संकोच और भय दूर होगया। अनेकों अनमोल जोड़े त्राटक साधना में सफल होकर अपनी गृहस्थ की गाड़ी को सुख पूर्वक चला रहे हैं।

'आधुनिक हिप्नाटिस्ट भी कामशक्ति के संवर्द्धनार्थ उन्हें सम्मोहित करके अपेक्षित सुझाव देते हैं, जैसे कि हीन भावना वाले पुरुष को भावना दी जाती है कि 'तुम पुरुष हो, स्त्री के सर्वथा योग्य हो, स्त्री-समागम में बिल्कुल अशक्त नहीं हो इत्यादि।'

त्राटक सिद्ध भी रोगियों को इसी प्रकार विश्वास दिलाते और उन्हें नजर भर कर देखते हैं। इतना करते रहने से ही रोगियों को बहुत कुछ लाभ हो सकता है।

गर्मी जनित उपसर्गों का शमन—

त्राटक साधना की सफलता गर्मी से उत्पन्न रोगों को शीघ्र दूर करने वाली हो सकती है। गर्मी को शान्त करने में चन्द्रमा, चांदी और हीरा तीनों का ही उपयोग किया जा सकता है। एक महात्मा ने बताया कि वे चन्द्रमा के त्राटक के प्रभाव से बड़ी शान्ति प्राप्ति करते हैं। उसका प्रभाव दिन में भी कम नहीं रहता। गर्मी की ऋतु में धूप में चलना भी असहनीय नहीं होता।

एक साधक आलूबुखारे के फल पर त्राटक करते थे। उनका कहना था कि गर्मी की ऋतु में इसका त्राटक अधिक शान्तिदायक होता है। मजे की बात यह कि केवल इसे देखते रहने के अभ्यास से ही प्यास नहीं लगती।

चर्म रोग की समाप्ति—

एक हिप्नाटिस्ट का कहना था कि उन्होंने किसी त्राटक सिद्धि वाले योगी से चर्म रोग दूर करने की प्रेरणा ली। वे योगीराज पन्ना नामक रत्न पर त्राटक करते थे। उनका अनुभव था कि पन्ना के त्राटक से चर्म रोग दूर हो जाते हैं।

उस हिप्नाटिस्टा ने भी पन्ना को शक्ति बिन्दु मान कर उसका अभ्यास किया। उसके बाद उन्होंने विभिन्न चर्म-रोगों पर अपने प्रयोग किये और परिणाम स्वरूप दाद, खाज, के अनेक रोगियों को लाभ पहुँचा।

एक अन्य सम्मोहक ने बताया कि वे अपने प्रयोगों द्वारा श्वित्र और कुष्ठ के भी कुछ रोगियों को ठीक कर चुके है। किन्तु ऐसे व्यक्तियों की

संख्या कम ही रही । हम समझते हैं कि उनके इस दावे में कुछ सचाई अवश्य ही होगी । क्योंकि त्राटक की शक्ति को हम सभी रोगों के निवारण करने में समर्थ और फलदायक समझते हैं ।

क्षय रोग में पूर्ण लाभ–

क्षय को यक्ष्मा, तपेदिक, थाइसिस, टी. वी, आदि भी कहते हैं । पहिले यह रोग लाइलाज माना जाता था, किन्तु वर्तमान समय में चिकित्सकों के मत में भी यह साध्य है ।

त्राटक के द्वारा इस दुष्ट रोग को भी सहज रूप से नष्ट किया जा सकता है । त्राटक का साधक अपनी दृष्टि मात्र से ही रोग से प्रभावित अङ्ग, जैसे फेंफड़े, आँत आदि को झटकों के द्वारा इतना अधिक झकझोर देता है, जिससे उनके रोग-कीटाणु नष्ट होजाते और उस अंग में शक्ति आने लगती हैं ।

त्राटक के द्वारा क्षय के कीटाणुओं पर सीधा प्रभाव पड़ता है और वे निष्क्रिय होने के पश्चात् धीरे-धीरे नष्ट होने लगते हैं । एक भारतीय साधक का कहना है कि उन्होंने क्षतिग्रस्त रोगियों पर जो प्रयोग किये, उनसे उन्हें आश्वर्यंजनक रूप से सफलता प्राप्त हुई ।

कण्ठ रोगों का उपचार–

त्राटक सिद्ध के लिए कण्ठ रोगों का उपचार अधिक सरल है । एक भारतीय ने एक बार हमें बताया था कि वे अपने त्राटक योग के द्वारा अनेक रोगियों को रोग मुक्त कर चुके हैं ।

उनके अनुसार शरीर में उत्पन्न होने वाला कोई भी रोग मानसिक दोष के फल स्वरूप ही होता है । चित्त के अशान्त रहने से अनेक रोग उत्पन्न हो जाते हैं और उनका उपाय भी उस अशान्ति को दूर करने पर स्वतः ही हो जाता है ।

उन्होंने विश्वास उत्पन्न करके ही अनेक रोगियों को स्वस्थ कर

दिया, जिनमें कुछ कुण्ठ रोगी भी सम्मिलित हैं। जिनका स्वर भंग हो गया और गले में शोथ रहता था, वे भी ठीक हो गये। एक हिप्नोटिष्ट उन्हें भावना देते थे कि 'तुम्हारा कण्ठ स्वस्थ है, स्वर भी कोमल, मधुर, स्वाभाविक तथा पूर्ण रूप से विकार रहित है।'

एक अन्य त्राटक योगी कण्ठमाला के रोगियों की चिकित्सा करते थे। वे रोगी को अपने सामने बैठाते और उसके गले पर दृष्टि टिका देते थे। उनके उपचार की केवल यही एक विधि थी। उनका कहना था कि इस पद्धति से उन्होंने कण्ठमाला के बहुत से रोगी अच्छे किये हैं।

मानसिक रोग—

त्राटक का मन-मस्तिष्क पर तो और भी अधिक प्रभाव पड़ता है। है। अनेक त्राटक-साधक योगियों की रुचि रोगियों की चिकित्सा में रही है और वे उसमें सफलता भी प्राप्त करते हैं।

एक महात्मा से मथुरा में भेंट हुई थी। वे हिस्टीरिया का उपचार करते थे। हिस्टीरिया के रोगी को नजर भर कर देखते और साथ ही उसके मुख पर पानी के छींटे मारते। इससे रोगी शीघ्र ही ठीक हो जाता था। इस विषय में पूछने पर उन्होंने बताया कि अनका इलाज कोई रहस्य मय नहीं है, कोई तन्त्र-मन्त्र नहीं है, उसमें। केवल त्राटक की शक्ति है, कुछ और नहीं।

उनका यह भी कहना था कि उन्माद, अपस्मार आदि के भी अनेक रोगी उन्होंने ठीक किये हैं। एक रोगी तो भयंकर रूप से पागल था, घर वाले पकड़ते तो उन्हें मारने दौड़ता और हर समय गालियाँ बकता रहता है। उन्होंने बताया कि ज्यों ही उस पर गहरी दृष्टि जमाई जाती। त्योंही वह शान्त हो जाता और अपनी हरकतें बन्द कर देता था। यद्यपि समय बहुत लगा, किन्तु वह बहुत कुछ ठीक हो गया।

हिप्नोटिस्ट भी उन्माद, अपस्मार, हिस्टीरिया आदि मानसिक रोगों

का इलाज भावना के द्वारा करते हैं। डॉ. चारकाट का कहना है कि ऐसा कोई मानसिक रोग नहीं जो सम्मोहन विद्या के प्रभाव से ठीक न किया जा सके। क्योंकि सम्मोहन शक्ति रोगी के मस्तिष्क पर सीधा प्रभाव डालती है और वह शक्ति प्राप्त होती है त्राटक साधना के द्वारा ही, चाहे वह प्राचीन योग के अन्तर्गत हो, चाहे आधुनिक हिप्नाटिज्म के अन्तर्गत।

उदर-रोग और त्राटक योग–

उदर रोग पर भी इस साधना का समुचित प्रभाव पड़ता है। एक भारतीय योगी ने त्राटक जन्य सम्मोहन शक्ति के द्वारा अनेक उदर रोगों को नष्ट करने में सफलता प्राप्त की। उनका कहना था कि उदर-विकारों के कारण उत्पन्न हुआ कोई भी रोग ऐसा नहीं जो मन-मस्तिष्क के साथ सम्पर्क न रखता हो और जो भी रोग मन-मस्तिष्क से सम्बन्ध रखने वाला होगा, उसका सम्मोहन शक्ति के द्वारा निवारण किया जाना कठिन नहीं होगा।

उन भारतीय योगी की यह मान्यता रही है कि जिन लोगों को कब्ज रहता है, उनकी आयु अधिक होतीं है। शरीर में मल विद्यमान रहने पर आलस्य और भारीपन तो रहता है, किन्तु वह मल ही शरीर की शक्ति को टूटने नहीं देता, इस कारण शरीर में दुर्बलता नहीं आती। यदि शरीर सबल रहे तो उसमें रहने वाले कोश-कोशिकाएँ आदि भी कम मात्रा में क्षतिग्रस्त होते हैं।

परन्तु, यह भी बहुत आवश्यक है कि कुछ न कुछ मात्रा में मल अवश्य निकलता रहे और उसके लिये योगीजन योगाभ्यास की उन क्रियाओं को भी करते हैं जिनसे मल स्वतः समय-समय पर निकल जाता है और अफरा, उदरशूल आदि की स्थिति उत्पन्न नहीं हो पाती।

त्राटक-साधना में भी वैसी शक्ति विद्यमान है। उसके प्रभाव से

कब्ज दूर हो सकता है और जितनी मात्रा में मल का निष्कासन अपेक्षित होता है, उतनी ही मात्रा में निकल पाता है । त्राटक के अन्तर्गत होने वाली आधुनिक विधि की सम्मोहन क्रिया में भी यही लाभ हो सकता है । उसमें रोगी को अनुकूल भावना देकर यह विश्वास दिलाया जाता है कि उसके पेट में कब्ज या उसके समान कोई उपसर्ग नहीं है ।

इसी प्रकार अन्य उदर विकार भी दूर हो जाते हैं । सम्मोहकों का यह कहना है कि इस विधि से छिपे हुए रोगों का भी पता लगाया जा सकता है और यदि कोई बहुत अनुभवी चिकित्सक भी जिस किसी रोग का निदान नहीं कर पाता, उस रोग का निदान सम्मोहन पद्धति के द्वारा सहज में ही हो सकता है ।

एक आयुर्वेद चिकित्सक भी अपनी चिकित्सा के साथ सम्मोहन विधि का प्रयोग करते हैं । वे कहते हैं कि मैं अपनी चिकित्सा विधि में योग-क्रियाओं को भी सम्मिलित रखता हूँ, जिनमें त्राटक का प्रयोग अधिक लाभकारी रहता है । इससे औषधि की अपेक्षा अधिक लाभ देखा गया है ।

एक हिप्नोटिस्ट का मत है कि उदर रोग हो या कोई अन्य रोग, सम्मोहन शक्ति के द्वारा शीघ्र ही काबू में आ जाता है । उन्होंने बताया कि उनकी पद्धति प्राचीन योगियों की त्राटक पद्धति से भिन्न नही है । वरन् हिप्नोटिज्म का मूल तो त्राटक योग ही है । जिस रहस्य को आधुनिक लोगों ने अब समझा है, उसे योगियों ने लाखों वर्ष पहिले समझ लिया था ।

यही कारण था कि प्राचीन योगी उसके अभ्यास में निरन्तर लगे रहते थे । जिसमें निरन्तर लगे रहेंगे, उसमें सफलता भी तो बहुत अधिक मिलेगी । वर्तमान साधक उतना परिश्रम नहीं करना चाहते, इसलिये उनकी सफलता भी आंशिक ही सिद्ध होती है ।

हम नही कहते कि आधुनिक विज्ञान निष्फल है, वरन् हमारा यही

कहना है कि वह प्राचीन विज्ञान के मुकाबले अधिक विकसित नहीं है। इसलिये उसका लाभ भी उतने ही परिणाम में परिलक्षित होता है।

फिर, आधुनिक विज्ञान की जड़ें भौतिकता में घुसी हुई हैं जबकि प्राचीन विज्ञान में आध्यात्म समाविष्ट था। विश्वास किया जाता है कि भौतिक विज्ञान अध्यात्म का मुकाबला नहीं कर सकता, चाहे वह कितना ही अधिक क्यों न बढ़-चढ़ जाय।

यदि आज भी परिश्रम करें तो कोई कारण नहीं कि पुरानी स्थिति को प्राप्त न कर लें। परिश्रम के साथ धैर्य की भी आवश्यकता होती है। यदि आप चाहें कि हथेली पर सरसों जमा लें तो ऐसा करना बहुत अर्थों में अधिक संभव नहीं है।

आप त्राटक के द्वारा पेट में उत्पन्न तीव्र दर्द को दूर कर सकते हैं, पेट पर हुए अफरा का शमन कर सकते हैं, वायु-गोला प्रभृति विकृतियों से रोगी को मुक्त कर सकते हैं। अजीर्ण, अग्निमांद्य, वमन, मिचली, अतिसार आदि भी त्राटक के प्रयोग से सहज काबू में आ सकते हैं।

हैजा पर भी सम्मोहन शास्त्रियों ने परिक्षण किये हैं और उसमें भी सफलता मिली है।। उनका कहना है कि भयंकर दस्त और वमन को भी रोगी को प्रसुप्त करके रोका जा सकता है। क्योंकि सम्मोहित प्रसुप्त अवस्था में केवल मन प्रसुप्त हो जाता है और यह जितने भी रोग तथा उनके उपसर्ग हैं, वे सब चेतन मन के ही द्वारा प्रकट किये जाते हैं। इसलिये चेतन सोता है तो उपसर्ग दब जाते हैं। अचेतन उन्हें क्रियाशील नहीं रहने देता। कैसी भी भयंकर पीड़ा हो, अवचेतन मन उस पर तुरन्त काबू पा लेता है। आँपरेशन आदि के समय जो बेहोशी की दवाएँ सुँघाई जाती है उनका तात्पर्य यही है कि चेतन को प्रसुप्त कर दिया जाय। चेतन प्रसुप्त रहें तो शरीर का कुछ भी करते रहो, प्राणी को उसका आभास नहीं होता।

चेतन जाग्रत है तो दाँत की पीड़ा बढ़ी-चढ़ी प्रतीत होगी। यदि

रोगी दाँत निकलवाये तो पीड़ा और भी बढ़ जायगी, इसलिये चिकित्सक-गण इंजेक्शन आदि का प्राविधान करते हैं। किन्तु सम्मोहक के द्वारा दाँत निकालने की जो क्रिया की जायगी, उसमें इंजेक्शन आदि की अपेक्षा नहीं होती। दाँत निकाल देगा वह, केवल सम्मोहित करके और रोगी उसकी पीड़ा का अनुभव भी नहीं कर पायेगा।

यही कारण है कि बहुत बुरी तरह चीखते-चिल्लाते हुए रोगी भी सम्मोहित होने पर तुरन्त आराम का अनुभव करते हैं। विदेशों में तो अनेक चिकित्सक केवल इसी पद्धति के द्वारा रोगी को पूर्णरूप से रोग मुक्त कर देते हैं। विदेशों में इस पद्धति पर अब भी नित्य नवीन परीक्षण होते ही रहते हैं।

कोई नेत्र का आँपरेशन होना है, बिना इन्जेक्शन लगाये वह हो नहीं सकता। क्योंकि उसमें होने वाली पीड़ा से रोगी छटपटायेगा, चीखेगा और उस स्थिति में आँपरेशन भी सरलता से होना असम्भव होगा। किन्तु सम्मोहक उस समय बिना आँपरेशन के ही वैसी स्थिति उत्पन्न कर देगा कि रोगी रोये-चिल्लाये नहीं, शान्त पड़ा रहे, वरन् उसे आँपरेशन के कष्ट का कोई अनुभव ही न हो पाये।

यही स्थिति प्रसवावस्था में गर्भवती स्त्री की होती हैं। कभी-कभी तो वह पीड़ा असह्य देखी जाती है। उस स्थिति में भी सम्मोहन शक्ति अपना अद्भुत प्रभाव दिखाती है। जो स्त्री पीड़ा के कारण अत्यन्त व्याकुल थीं, वह सम्मोहित होकर पीड़ा का अनुभव नहीं करती और प्रसव का कार्य भी सहज रूप में सम्पन्न होजाता है।

कोई भी कष्ट हो—शारीरिक या मानसिक। रोगी कम बेचैनी का अनुभव करे या अधिक का। औषधियों से उसमें देर लग सकती है बहुत बार तो बदल-बदल कर देने पर भी दवाएँ काम नहीं करती और रोगी प्रायः निराश हो जाता है।

ऐसी स्थिति में भी त्राटक अथवा हिप्नोटिज्म के प्रयोग से बहुत कुछ लाभ उठाया जा सकता है। अनेक बार औषधियों के असफल होने पर भी सम्मोहन शक्ति से सफलता मिलती पाई गई है। क्योंकि उस समय रोगी का अचेतन मन अधिक क्रियाशील हो जाता है और वह रोगाक्रान्त अङ्ग को झटके दे-देकर रोगमुक्त कर देता है।

अचेतन मन मानवीय ऊर्जा को परिचालित कर उससे कार्य लेता है। वह ऊर्जा भी चेतन से उतना अधिक सम्बन्ध नहीं रखती, जितना अचेतन से रखती है। इसी कारण ऊर्जा अचेतन के संकेत पर कार्य करती हुए मनुष्य के हित-साधना में लग जाती है।

इन तथ्यों से शायद आप समझ गये हो कि रोगों की स्थिति का मुख्य कारण मानवीय ऊर्जा का प्रसुप्तावस्था में रहना है। जब उस ऊर्जा का जागरण होता है, तब रोग दुम दबा कर भागने लगते हैं।

और मानवीय ऊर्जा के जागरण का एक विशिष्ट विज्ञान है। प्राचीन काल में योगाचार्यों ने उस विज्ञान को आविष्कृत और प्रयुक्त किया था। उस समय के योगियों में एक से एक बढ़ कर चमत्कारी पुरुष हुए है, जो अपनी योग-साधनाओं के बल पर विश्व में प्रसिद्धि प्राप्त किये रहे थे और संसार के सभी छोटे-बड़े लोग उनके समक्ष नत मस्तक थे।

आज भी वह विज्ञान नष्ट तो नहीं हुआ है। यदि वह छिप गया है तो हमारी अपनी ही उपेक्षा वृत्ति से। भारत से वह विज्ञान तिब्बत पहुँचा। कहते हैं कि वहाँ के लामा लोग आज भी उन योग क्रियाओं से भले प्रकार परिचित हैं, जिन्हें आज हम आश्चर्यजनक मानने लगे हैं। वे लोग आज भी उनका अभ्यास करते हैं, किन्तु हम अपनी उस महान विद्या से अपरिचित होते जा रहे हैं।

आधुनिक वैज्ञानिकों ने कुछ कदम उठाये हैं उस दिशा में विशेषकर पश्चिमी देशों में इस ओर कुछ अधिक ध्यान दिया गया है। हमारे योगियों ने जो अत्यंत गरिमा और महिमा सम्पन्न त्राटक विद्या का

आविष्कार किया था, उसका कुछ सार लेकर सम्मोहन विद्या का अभ्यास आरम्भ किया उन्होंने । और बड़े-बड़े चमत्कार दिखा डाले । यदि आप उसकी मूल विद्या (त्राटक) की ओर ध्यान दें तो उससे बहुत आगे बढ़ सकते हैं ।

नेत्र रोग और त्राटक-साधना—

त्राटक-साधना के द्वारा जहाँ नेत्रों की आकर्षण शक्ति बढ़ाई जा सकती है अथवा दूर-दृष्टि प्राप्त की जा सकती है, वहाँ नेत्रों से सम्बन्धित विभिन्न रोगों को भी दूर किया जा सकता है । त्राटक का अभ्यास आँखों से ही किया जाता है, इसलिए उसका सब से अधिक और सर्व प्रथम प्रभाव भी आँखों पर ही पड़ता है । इसलिये योगाचार्यों की मान्यता है कि त्राटक अथवा ध्यान के अभ्यास से सभी प्रकार के नेत्र-रोगों का निवारण किया जा सकता है ।

नेत्र रोगों के सभी प्रकारों, सभी उपसर्गों में त्राटक एक बहुत उपयोगी उपाय है । त्राटक भी ध्यान का ही एक रूप है और जो लाभ ध्यान से हो सकता है, वह त्राटक से भी हो सकता है । अन्तर इतना है कि ध्यान के लिये बन्द नेत्र उपयुक्त समझे जाते हैं, जबकि त्राटक में खुले नेत्रों से साधना की जाती है ।

ध्यान में नेत्र अर्द्ध उन्मीलित अवस्था में भी रह सकते है । त्राटक में भी आप चाहें तो नेत्रों को पूरे खोले रखने की अपेक्षा आधे खुले (अर्ध-उन्मीलित) रखें । वरन् पूरे खोलने की अपेक्षा अधखुले नेत्र अधिक सुविधा जनक रहते हैं । उनसे थकान का बहुत कम अनुभव होता है ।

त्राटक की कुछ विधियाँ नेत्र रोगों पर—

आप किसी नेत्र रोग से पीड़ित हैं तो ध्यान रखिये कि जिससे शान्ति मिल सके, वह उपाय कीजिये । यदि आप त्राटक का अभ्यास

अधिक समय तक नहीं कर सकते तो कम समय ही कीजिये। जितनी भी देर कर सकें उतना भी लाभकर ही रहेगा। यहाँ कुछ सरल विधियों पर प्रकाश डाला जा रहा है—

(१) यदि नेत्रों में दर्द और जलन हो, चैन न पड़ता हो किसी प्रकार, तो एक कच्चा आलू छीलें और उसे पीस कर टिकिया वना लें। पहिले गुलावजल से आँखों को धोलें और तव उस कच्चे आलू की टिकिया पर त्राटक जैसा अभ्यास करें। ध्यान रहे कि आँखों के साथ जोर-जवर्दस्ती न की जाय किसी प्रकार की। वस टिकिया को सामने रखें और उसकी ओर देखें। जब पलक झपकें, झपकने दें, जब तक खुले रहना चाहें, खुले रहने दें। इस प्रकार के अभ्यास से आप पायेंगे कि वेचैनी दूर होने लगी है।

(२) एक वोर्ड पर वड़े अक्षर में 'ॐ' अथवा 'श्री' लिखकर सामने रखें। उसकी ओर उसी प्रकार देखें, जैसे आलू की टिकिया पर देखने को कहा गया है। यदि दृष्टि मन्द हो गई हो तो यह अभ्यास दीर्घ काल तक करना होगा। किन्तु जव भी करें, ऐसे करें कि किसी प्रकार का कष्ट प्रतीत न हो। नित्य प्रति अभ्यास के बाद आँखों को त्रिफला के पानी से धोलिया करें।

(३) यदि आँखों में दर्द के साथ सिर दर्द भी हो तो हरे रंग के वस्त्र, काँच अथवा रत्न पर उक्त विधि से ही त्राटक का अभ्यास करें। साथ ही सिर पर सूखा नीला वस्त्र भी लपेट लें। इससे सिर-दर्द भी कम होगा और दर्द भी घटेगा।

(४) यदि आँखों में लाली के साथ दर्द भी है तो गहरे नीले काँच को सूर्य के आगे लगाकर उससे छनने वाले प्रकाश को आँखों पर डालें। सूर्य का यह प्रकाश भौंहों और ऊपरी पलकों पर ही पड़ें तथा दृष्टि नीचे की ओर रहे जहाँ नीला वस्त्र विछा हो। इससे भी दर्द में लाभ होता है तथा लाली भी घटती है। अभ्यास के वाद आँखों में गुलावजल के छींटे देने चाहिये।

(५) प्रातःकाल किसी सरल आसन से बैठें और नेत्र-दृष्टि को किसी काली बूँद पर स्थिर करें। साथ ही श्वास खींच कर तब तक कुम्भक किये रहें, जब तक किसी प्रकार की कठिनाई का अनुभव न हो। कठिनाई प्रतीत होते ही श्वास निकालें और दृष्टि भी झपका लें। जितनी देर कुम्भक किया है, उससे दुगुनी देर तक श्वास लें और छोड़ें तथा आँखों को भी बन्द रखें। उसके बाद पुनः इसी प्रकार कुम्भक के साथ त्राटक करें। यह क्रम तीन-चार बार सरलता से दुहराया जा सकता है।

(६) चित्र को एकाग्र करना भी बहुत आवश्यक है। क्योंकि एकाग्र हुए चित्त से त्राटक करना अधिक लाभकारी हो सकता है। इसके लिये आप अपनी किसी भी मन पसन्द वस्तु को सामने रख सकते है। बस, किसी भी वस्तु को रखिये अपने सामने और कीजिये उसे देखने का अभ्यास। आप पायेंगे कि जो भी नेत्र-कष्ट था आपको, वह दूर होने की दिशा में है।

(७) साधना करते हैं तो श्रद्धा और विश्वास पूर्वक कीजिये, अन्यथा कोई फल नहीं मिलना है। आपको। जब हमें किसी कर्म पर श्रद्धा नहीं, विश्वास नहीं तो उसका लाभ भी कैसे मिलें ? सभी लाभ और उपलब्धियाँ श्रद्धा की पृष्ठ भूमि में विश्वास के साथ ही संजोयी जाती है।

आँवले का एक हरा फल लीजिये और विश्वास के साथ उसे देखिये। विश्वास होगा तो श्रद्धा भी उत्पन्न हो जायगी। और जब यह दोनों मिल कर उस फल को आपने नेत्रों के लिये केन्द्र बिन्दु बना देंगे तब आप पायेंगे कि आपको कुछ शान्ति मिय रही है और पीड़ा का निवारण होता जा रहा है।

(८) रात्रि के समय चन्द्रमा की ओर देखिये। मन में भावना कीजिये कि चन्द्रमा में अमृत भरा है। आपकी आखें उस अमृत का आकर्षण कर रही है। और सचमुच कुछ दिनों के अभ्यास में ही आपको

लगेगा कि आपकी आँखें दोष-रहित तथा स्वस्थ होती जा रही हैं। उनमें दृष्टि की तीव्रता भी आने लगी है।

(६) आप चाहें तो किसी तारे का त्राटक भी कर सकते हैं। चुन लीजिये उस तारे को और नित्य प्रति एक निश्चित समय तक देखते रहिये उसे। जब आँखें झपकना चाहें झपकने दीजिये। हम नहीं कहते कि उनके प्रति बल प्रयोग करें। आप अभ्यास करने लगेंगे तो धीरे-धीरे स्वयं ही सफलता मिलने लगेगी आपको। आशा और धैर्य के साथ की जाने वाली आपकी त्राटक साधना कभी निष्फल नहीं जायगी।

मणि-रत्नों के त्राटक का रोग नाशक प्रभाव

मणि-रत्न मानव-शरीर के बहुत अनुकूल रहते है। क्योंकि इनका सम्बन्ध ग्रहों से भी है। इनका त्राटक करने से साधक स्वयं तो स्वस्थ और निरोग रहता ही है, अपने दृष्टिपात मात्र से दूसरों की अनेक व्याधियों को दूर करने में समर्थ होता है। यहाँ विभिन्न मणि-रत्नों में निहित गुण, कर्म और प्रभाव पर प्रकाश डाला जाता है।

माणक्य में निहित गुण–

माणक्य में अनेक रोगों को दूर करने की शक्ति है। शारीरिक दुर्बलता, धातुगत दुर्बलता, पुंसत्वहीनता, वात-विकार, रक्त-विकार उदर-विकार आदि के लिये इसका प्रयोग उपयोगी माना जाता है। मलावरोध, उदरशूल, शिरः शूल, अपच, अग्निमांद्य, अतिसार, रक्तातिसार, अर्श आदि पर भी उपयोगी है। शरीर के किसी भी अङ्ग में दर्द हो माणक्य उस पर अनुकूल प्रभाव डालता है। पाण्डु, पक्षाघात, नेत्र

रोग, खाँसी, हिचकी, आदि पर भी हितकर है। खून की कमी में भी इसका प्रयोग किया जाता है। यह कीटाणु-नाशक भी हैं।

यह तो रहे भौतिक और स्थूल गुण, अब इसके सूक्ष्म गुणों पर भी ध्यान दीजिये—सब प्रकार के भयों को दूर करने में आप इसकी ऊर्जा से लाभ उठा सकते हैं। इससे इस जन्म में कीर्ति और हर जन्म में सुयश-प्राप्ति होती है। ग्रहों की बाधा दूर करने में भी माणक्य बहुत प्रभावशाली है। इसके प्रभाव से धन-धान्य की वृद्धि होती है तथा चोर, डाकू, शत्रु आदि का भय भी दूर हो जाता है। भूत-बाधा-नाश में भी इसका प्रयोग हितकर हो सकता है।

माणक्य सुख-सन्तान की वृद्धि में सहायक होता है। प्रेम के मामले में भी उपयोगी और अनुकूल हैं। समाज में पद-प्रतिष्ठा, धर्म में रुचि, पुण्य-दान की ओर झुकाव, परोपकार में संलग्नता आदि के उद्देश्य से भी इसका प्रयोग उचित रहता है। इसका प्रभाव पाप-बुद्धि को नष्ट करने में समर्थ है। यह रत्न सूर्य ग्रह से सम्बन्धित है।

माणक्य का रंग लाल होता है। यदि आप इसे किसी स्वच्छ विना रङ्ग के काँच के पात्र में रख दें तो लगेगा कि उसमें सब ओर हल्के लाल रङ्ग की किरणी निकली हुई हैं। यदि आप इसे मोतियों के मध्य में रख दें और सूर्य के प्रकाश में रखें तो सभी मोती लाल रङ्ग के दिखाई देंगे। यदि इसे कमल की बन्द कली पर रख दें तो वह कली खिल जायगी। यदि गाय के दूध में डाल दें तो वह दूध गुलाबी जैसे रङ्ग का दिखाई देगा।

माणक्य का त्राटक—

माणक्य का त्राटक करने से साधक को उक्त सभी गुणों की प्राप्ति तो होती ही है, उसके हृदय की कली खिल जाती है अर्थात् मन अत्यन्त प्रसन्नता से भर जाता है। यदि खून की कमी हो तो वह पूरी हो जाती

है। रक्त संचार क्रिया नियमित होकर उसके दोषों का निवारण होता है।

आप माणक्य का त्राटक करते हैं तो अपने मन में प्रसन्नता भर लेते हैं। आपको लगेगा कि आपका शरीर एकदम स्वस्थ, हृष्ट-पुष्ट तथा सुन्दर हो गया है। और ध्यान रखिये कि उससे आप अपना ही हित-साधन नहीं करते, दूसरों का भला करने में भी समर्थ होते हैं।

किन्तु इन गुणों की प्राप्ति के लिये असली माणक्य लेना चाहिये। आजकल नकली माणक्य बहुत आ रहे हैं, जिनमें चमक भी असली की अपेक्षा अधिक होती है।

यदि माणक्य नकली है तो वह कोई लाभ नहीं करेगा, वरन् सम्भव है कि उसकी लाली नेत्रों के लिये हानिकारक और विपरीत प्रभाव वाला हो जाय।

दोषपूर्ण माणक्य पर भी त्राटक नहीं करना चाहिये। इससे भी हानि हो सकती है। दोषपूर्ण माणक्य के अनेक प्रकार हैं—दुरंगा, श्वेत काली आभा वाला, मट मैला, धुँए जैसे रङ्ग का, रेखा त्रिभुज, त्रिशूल आदि से युक्त, चमक रहित, गर्त्तयुक्त, दूधिया रंग का, क्रास जैसे चिन्ह वाला आदि। माणक्यों में एक साथ ही अनेक दोष देखे जाते हैं।

दुरंगा माणक्य स्वयं साधक को और उसके पिता को कष्ट देने वाला हो सकता है। श्वेत-काली आभा वाला माणक्य धन और यश का नाशक, मटमैला उदर रोग उत्पन्न करने वाला और सन्तानोत्पत्ति में बाधक तथा धुँए जैसे रंग का दैवी-विपत्ति देने वाला होता है। आड़ी-तिरछी रेखाओं वाला साधक के घर में अनेक प्रकार के उपद्रव तथा ग्रह-कलह कराता है। त्रिशूल आदि से युक्त सन्तान, धन, कीर्ति में बाधक तथा अल्पजीवी बनाने वाला होता है। क्रास जैसे चिन्ह वाले माणक्य का त्राटक चोट आदि से पीड़ित करता है। चमक-रहित हो तो बांधवों को कष्ट, गढ़े से युक्त हो तो रोगप्रद. दूधिया रंग का हो तो पशु-धन

नाशक होता है। एक साथ ही अनेक दोषों वाले माणक्य को तो दूर से ही प्रणाम कर देना चाहिये। क्योंकि वह आकस्मिक घटनाओं में डालने वाला अथवा मृत्युकारक होता है।

माणक्य का त्राटक करते हैं, अवश्य कीजिये, किन्तु ध्यान रखिये कि दोष-पूर्ण त्राटक पर प्रयोग आरम्भ न कीजिये। नकली माणक्य भी त्याज्य है, उस पर किया जाने वाला त्राटक भी हानिकारक हो सकता है।

मूँगा और उसका त्राटक–

मूँगा भी लाल रंग का ही एक रत्न है। संस्कृत में इसे प्रवाल कहते हैं। इसका सम्बन्ध मंगल ग्रह से माना जाता है। यह गहरे लाल गेरुआ, सिन्दूरिया, हिंगुलिया आदि रंग में भी मिलता है। कुछ मूँगा गुलाबी, श्वेत, काले, पाण्डुर तथा धूसर वर्ण के भी देखे जाते हैं। यह रत्न गोल, लम्बा, सीधा, चिकना, चमकदार, पक्व बिम्बफल के समान, मोटा, कोणयुक्त, वृणादि से रहित हो तो अच्छा माना जाता है।

मूँगा वस्तुतः समुद्र में होता है। लाल रङ्ग की एक जड़ी जैसी उत्पन्न होती है समुद्र में, उसे काट कर भी दाने का रूप दे दिया जाता है। कोई कोई मूँगा को समुद्र का एक प्रकार का पत्थर ही मानते हैं। इससे गुण इस प्रकार बताये गये हैं—

पक्षाघात, अर्दित और कम्प के लिये हितकर, रोध का उद्घाटक, यकृत और प्लीहा को शोधने वाला, रक्तातिसार का बद्धक, मूत्रल तथा आमाशय के लिये बलदायक है। बालकों के डरने या नींद में चौंकने तथा ग्रह बाधा, भूतबाधा सूखा रोग आदि में हितकर है। मृगी, हिस्टीरिया, उन्माद, हृद्रोग, रक्तचाप एवं दृष्टिदोष का निवारण करने वाला है। उदरशूल आदि के लिये भी प्रभावशाली माना जाता है। गर्भिणी के के लिये भी गर्भस्राव या गर्भपात की स्थिति में हितकर है। त्राटक

साधक यदि ऐसी स्त्री के उदर पर दृष्टिपात करे तो उससे यह लाभ सम्भव है।

रक्त-विकार, कफ-विहार, वायु-विकार, श्वास, कास, क्षय, रक्त-पित्त, रक्तव्रण, अन्त्रव्रण, शुक्रमेह, सुजाक, अति स्वेद रक्मतिसार, रक्तार्श, बिगड़ा जुकाम या पीनस, चर्म रोग, वात रोग, स्नायु-रोग तथा मानसिक अवसाद आदि में भी यह हितकर माना जाता है।
सूक्ष्म रूप से मूँगा का प्रभाव भूत, प्रेत, डंकिनी, शंकिनी आदि पर भी पड़ता है। इसके प्रभाव से वे सब दूर भागते हैं। आँधी, तूफान, विद्युत्, बाढ़ आदि से रक्षा होती है। छल, कपट, माया मन्त्र-तन्त्र आदि का प्रभाव भी मूँगा का त्राटक करने वाले पर नहीं पड़ता।

मगल ग्रह की बाधा उसे व्याप्त नहीं होती जो मूँगा पर त्राटक का अभ्यास करता है। ग्रह की दृष्टि से जिनकी कुण्डली में मंगल दुष्ट स्थान पर तथा विपरीत प्रभाव वाला हो, वे उसके दोष से मूँगा के त्राटक द्वारा बच सकते हैं।

आप मूँगे का त्राटक करें तो उपर्युक्त रोगों तथा ग्रह बाधाओं से बचे रह सकते हैं। आपकी वह त्राटक-साधना केवल आपके लिये ही हितकर न होगी, वरन् अन्य लोगों के लिये भी लाभदायक होगी। आप उस पर दृष्टिपात करके ही दूसरों को रोग-मुक्त एवं सुखी बना सकते हैं।

दोषयुक्त मूँगा पर त्राटक का निषेध–

किन्तु मूँगा का त्राटक प्रभावशाली तभी हो सकता है, जब उसमें किसी प्रकार का दोष न हो। आजकल नकली मूँगा भी पर्याप्त मात्रा में आ रहे हैं। उन पर त्राटक करने से भी कोई लाभ नहीं हो सकता। वरन् हानि की ही अधिक सम्भावना हो सकती है।

दोषपूर्ण मूँगा दुरंगा, सफेद या काले छीले वाला, लाख जैसे रङ्ग का, चीरदार, गड्ढेदार, छेद युक्त तथा टूटा हुआ हो सकता है। जो

मूँगा घुना हुआ हो वह भी शरीर में दर्द, सिर दर्द, आधसीसी आदि उत्पन्न करने वाला होने से त्राटक कर्म में निषिद्ध माना जाता है।

दुरंगा मूँगा सुख-सम्पत्ति और कीर्ति का नाशक है। सफेद धब्बे या छींटे वाला रोग बढ़ाने और प्रसन्नता नष्ट करने वाला होता है। काले धब्बे वाला मूँगा अरिष्टकारक, मृत्युकारक हो सकता है। उसके प्रभाव से कोई आकस्मिक दुर्घटना हो सकती है।

लाख जैसे रङ्ग का मूँगा शस्त्रभय तथा चोर-डाकू का भय देने वाला है। जिसमें चीरा लगा हो वैसे मूँगा का त्राटक शास्त्रघात का कारण होता है। गड्डेदार मूँगा दुःखों की बढ़ाने वाला और पति-पत्नी दोनों के लिये प्राणघातक हो सकता है।

छेद युक्त मूँगा शारीरिक स्वास्थ्य के लिये हानिकारक है। टूटा हुआ, खण्डित मूँगा सन्तान कष्ट में कारण तथा सुख-सम्पत्ति को भी विनष्ट करता है।

शुद्ध, स्वच्छ मनोमोहक दाना लीजिये मूँगे का। ऐसा दाना लीजिये जो नकली न हो, जो दोषयुक्त न हो। इस प्रकार के श्रेष्ठ मूँगा पर त्राटक करने से आप मूँगा में निहित गुणों के स्वामी हो सकते हैं। इससे आप अपना और दूसरों का हित साधन करने में भी समर्थ होंगे।

मोती और उसका त्राटक—

मोती को संस्कृत में मुक्ता और आंग्ल भाषा में पर्ल कहते हैं। मोती की प्राप्ति आदि के भेद से इनके आठ नाम प्रसिद्ध हैं—(१) शंख मुक्ता, (२) शुक्ति मुक्ता, (३) वंश मुक्ता, (४) मेघ मुक्ता, (५) सर्प मुक्ता, (६) मीन मुक्ता, (७) शूकर मुक्ता, और (८) गजमुक्ता। इनकी उत्पत्ति नामानुसार क्रमशः शंख से, सीप से, बांस से, मेघ से, सर्प से, समुद्र की मछलियों से, शूकर से, और हाथियों से होती है। इनके गुण भी प्रायः विभिन्न विशेषताएँ लिये होते हैं—

शंख मुक्ता से सुख-सम्पत्ति, स्त्री-सन्तान, सुयश और स्थिर लक्ष्मी

की प्राप्ति होती है। यह मोती यदि कहीं मिल जाय तो दरिद्रता और पाप को भी नष्ट करता तथा सभी प्रकार की मनोकामनाओं को पूर्ण कर देता है।

शुक्ति मुक्ता समुद्र में सीपियों में उत्पन्न होता है। प्राप्ति में यह सुलभ है। इसमें चन्द्रमा के सभी गुण विद्यमान रहते हैं। इसलिये ताप दूर करके शीतलता प्रदान करने वाला, श्वेत वर्ण की वस्तुएँ प्राप्त कराने और उनके व्यवसाय से लाभ कराने वाला, कन्या-दायक, तथा कफ-रोग नाशक होता है। शीतवीर्य गुण के कारण उष्मा प्रकृति वाली को अधिक उपयोगी है। यह रत्न चन्द्रमा से सम्बन्धित है।

वंश मुक्ता जंगली बांस में मिलता है। किन्तु दुष्प्राप्य है। इससे सब प्रकार के सौभाग्यों की वृद्धि होती है। अक्षय धन, यश, मान, प्रतिष्ठा, पदवृद्धि' राज्य सुख, सम्पत्ति आदि की वृद्धि होती है। यह समस्त कामनाओं को देने में समर्थ है।

मेघ मुक्ता कभी-कभी वर्षा के बूँदों के साथ आशा से गिरता है। इस कारण यह भी दुर्लभ है। इसके त्राटक से सभी कामनाएँ पूर्ण होती और अक्षय धन मिलता है।

सर्प मुक्ता भी सहज रूप से उपलब्ध नहीं है। क्योंकि यह वासुकी वश के नागों के मस्तक में होता है। यदि यह मिल जाय और इसका त्राटक किया जाय तो साधक को धन, सन्तान, सुयश आदि का कारण हो सकता है। इसके द्वारा सभी अभिलाषाएँ पूरी हो सकती हैं।

गजमुक्ता हाथियों के मस्तक में मिलता है। किन्तु यह एकदम अप्राप्य नहीं है। मिल जाय तो इसके त्राटक से साधक को अत्यन्त शक्ति साहस, उत्साह आरोग्य तथा शान्ति की प्राप्ति होती है। वस्तुतः यह मोती जिस स्थान पर रहता है, वहाँ कभी किसी प्रकार का विघ्न उपस्थित नहीं होता।

मोतियों की पहिचान उनके तत्वों की अधिकार के अनुसार भी की

जाती है। मोती पञ्चतत्वात्मक ही होते हैं, तो भी किसी एक तत्व की अधिकता होने पर उसमें उसी के अनुरूप गुण होता है। जल तत्व प्रधान मोती चमकदार और स्वच्छ होता है। अग्नि की प्रधानता वाले में रक्तिम आभा होती है। वायु तत्व वाला मोती नीलाभ, लहरदार और कुछ गर्जनशील होता है। आकाश तत्व वाला वजन में हल्का और चमक रहित रहता है। किन्तु पृथिवी तत्व वाला मोती भारी होता है।

मोती में जिस तत्व की प्रधानता हो, उसी तत्व की प्रधानता साधक में हो तो वह बहुत हितकर होता है। उसके परिणाम शीघ्र ही फलित होते हैं। साधक को असली मोती का ही प्रयोग करना चाहिये, क्योंकि अभीष्ट लाभ असली से ही उठाया जा सकता है। असली मोती सुडौल, गोल, ठोस, हल्का, पानी के समान परछाईं वाला, सुकोमल, चन्द्रमा जैसी कान्ति वाला, उज्वल, चिकना तथा स्वच्छ होता है।

मोती हृदय को शक्ति देने वाला, हृद्रोग नाशक, पथरी अर्श, उदर विकार, उदर शूल, दन्तरोग, पायोरिया, त्वचा के विकार, मृगी, अपस्मार, उन्माद, मुर्च्छा, रक्तचाप, मूत्र प्रदाह, वात-रोग, जोड़ों में दर्द, रक्तस्राव, मुख से खून जाना, रक्तातिसार, क्रमि आर्तव, वृक्क-विकार, आमाशय के विकार, स्नायु-दौर्बल्य आदि में बहुत गुणकारी है। दोषों को स्वच्छ करने वाला, उत्तमांग को बल प्रद, रोध का उद्घाटक तथा प्रसन्नताप्रद है। नेत्र विकार, धुन्ध, जाला, माड़ा, नाखूना आदि को हितकर है। चेचक में भी लाभ करता है।

मोती का सूक्ष्म प्रभाव मन पर भी कम नहीं होता। इससे मानसिक शान्ति मिलती है, कान्ति, बल, बुद्धि का विकास होता है। तेज तथा रूप सौन्दर्य की प्राप्ति के लिए भी यह सहायक है। सभी प्रकार की मनोकामनाओं को पूर्ण करता और मान-सम्मान दिलाता है। महिलाओं के लिये भी यह बहुत उपयोगी है।

मोती एक ईश्वरीय वरदान है मनुष्य जाति के लिये। इसकी त्राटक

साधना के द्वारा आप अभूतपूर्व, अद्‌भुत एव दिव्य शक्ति प्राप्त कर सकते हैं। इसकी साधना आप स्वयं के लिए तो लाभकारी होगी ही, परोपकारार्थ प्रयोग करने से जन कल्याण भी हो सकता है। इसके प्रभाव से।

किन्तु दोषपूर्ण मोती का प्रयोग कदापि नहीं करना चाहिये साधना में दूषित मोती निष्फल प्रभाव वाला ही नहीं होगा, हानिकारक भी हो सकता है। यदि आप किसी प्रकार से दोष युक्त मोती को प्रयोग में लाते हैं तो अपनी ही हानि करते हैं।

दूषित मोती, प्रकार और हानियाँ —

दूषित मोती भी दोष भेद से अनेक प्रकार के हैं। विद्वानों ने उनके प्रकारानुसार नामकरण भी कर दिया है। यथा—खण्डित, मटिया, म्यानी, रक्तमुख, ताम्रक, श्यामाभ, गिडली, सुन्न, गर्त्त मय, चपटा, त्रिकोण, चौकोर, चोभ, रेखायुक्त लहरयुक्त, लवा, घब्बादार, छाले, दार, गरजदार और काकदोषी। मिश्रित दोषों के कारण उनके रूप, गुण में और भी परिवर्तन हो जाता है।

खण्डित या टूटा हुआ मोती बहुत कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। शास्त्र पीड़ा, चोट तथा अन्य प्रकार की हानि भी पहुंचा सकता है। कुछ मत में ऐसा मोती परिवार में अनबन का कारण बन जाता है। पति-पत्नी में झगड़ा, बाँधवों से कलह आदि में भी खण्डित मोती एक विशेष कारण बन सकता है।

मटिया मोती का अभिप्राय है उस मोती से जिसके भीतर मिट्टी भरी हो। इसके फल स्वरूप 'सोना पकड़ें मिट्टी हो जाय' वाली कहावत चरितार्थ हो सकती है। यह सभी प्रकार की अभिलाषा पूर्ति में बाधक तथा साधना करने पर निष्फल ही नहीं, विपरीत परिणाम वाला सिद्ध हो सकता है।

म्यानी मोती को तगज मोती भी कहते हैं ! इसके ऊपरी आवरण के रूप में एक झिल्ली सी होती है। परतें कम पहने के कारण भीतरी भाग का कालापन ऊपर से ही दिखाई देता है। ऐसा मोती घटिया किस्म का माना जाता है और साधना करने वाले के लिये कष्टकारी तथा हानिकार भी सिद्ध होता है।

रक्तमुख में एक स्थान पर कुछ लाली सी होती है। वह स्थान कुछ उभार युक्त होता है, इसलिए इसे रक्तमुख कहते हैं। इसकी साधना शरीर को पीड़ा पहुँचाने वाली होती है। इससे धन, सम्पत्ति, सम्मान आदि सभी की हानि सम्भव है।

तामुक को ताम्रमुख या ताम्रक भी कहते हैं। इसका रंग तांबे के समान होता है। इसका प्रभाव अत्यन्त अहितकर माना जाता है। लोगों की धारणा है कि तामुक मोती-वन्धु-वान्धव, कुटुम्व आदि के लिए अधिक हानि कारक है।

श्यामाभ में कालापन होता है। इसे कहीं रख दो तो इसकी छाया (शेड) भी काली पड़ती है। इसके प्रभाव से अचानक ही व्यर्थ निन्दा का पात्र बनना पड़ सकता है।

गिटली का आभिप्राय उस मोती से है, जिसमें चारों ओर एक ऐसी रेखा खिंची होती है, मानों मोती के दो खण्ड मिलाकर जोड़ दिये गये हो। इस प्रकार के मोती पर की जाने वाली साधना विपरीत परिणाम वाली, भयोत्पादक, रोग उत्पन्न करने वाली तथा हृदय को कमजोर करने वाली होती है।

सुन्न का अभिप्राय उस मोती से है जो चमकदार न हो। ऐसे मोती की साधना साधक को दरिद्र बनाने वाली तथा तेज हरण करने वाली हो सकती है।

गर्त्तमय मोती गड़ढेदार होता है। यह साधक को रोगी और अस्वस्थ बनाने वाला और उसकी धन-सम्पत्ति को भी हानी पहुँचाने

वाला हो सकता है।

चपटा मोती भी साधना में निषिद्ध है, क्योंकि इस सुख-सौभाग्य को नष्ट करने का अवगुण है। यह मोती चिन्ताओं को भी बढ़ाने वाला कहा जाता है—

त्रिकोण या तिकोने आकार का मोती पुरुषों के लिए विशेष रूप से हानिकारक है। इससे बल-वीर्य नष्ट होता और नपुंसकता उत्पन्न होती है। यह बुद्धि को भी घटाता है।

चौकोर आकार का मोती महिलाओं के लिये अहितकर समझा जाता है। यदि कोई पुरुष साधक इस मोती पर त्राटक करे तो उसे पत्नी से सम्बन्धित हानि हो सकती है।

चोभ संज्ञक मोती चोंचदार होता है। इस पर चेचक जैसे दाग भी हो सकते हैं। ऐसा मोती पुत्रादि की हानिप्रद तथा वंश के लिए अनिष्ट करते वाला हो सकता है।

रेखायुक्त मोती में लम्बी सी एक या अधिक रेखाएँ दिखाई देती हैं। इसके प्रभाव से धन वैभव की हानि और दु खों की वृद्धि होती है।

लहरयुक्त मोती का अभिप्राय उससे है जिसके मध्य में लहरें सी दिखाई दें। ऐसे मोती पर कीजाने वाली साधना धन की हानी करती और मन को क्षुब्ध बनाती है।

दुर्बल अंग वाला मोती लवा कहलाता है। इसकी साधना शारीरिक शक्ति को क्षीण करने वाली तथा बुद्धि को भी नष्ट करने वाली होती है।

धब्बादार और छाले से उठे हुए मोती धन, सम्पति, सौभाग्य आदि के लिए अहित करने वाले होते हैं। जिस मोती में ददार हो या खण्डित हो वह दुःखदायी होता है।

काकदोषी उस मोती को कहते हैं, जिसके कण्ठ में काला धब्बा हो।

यह सन्तान पक्ष में अहितकर होता है तथा साधक को निन्दा का पात्र बनाता है।

इस प्रकार दोषयुक्त मोती का प्रयोग न कीजिये साधना में, उक्त दोषों के अतिरिक्त कोई अन्य दोष हो तो उसे भी प्रयोग में न लाना ही उचित है। नकली मोती भी साधना में पूर्णरूपेण त्याज्य हैं। किन्तु ध्यान रहे कि अनेक प्रकार के इमीटेशन मोती बाजार में उपलब्ध होते होते हैं, जो रंग-रूप में सच्चे मोती के समान प्रतीत होते हैं। आप साधना के लिये जो मोती लें, उसकी ठीक प्रकार से जाँच करालें।

यदि आप सच्चे मोती पर विधिवत त्राटक-साधना करें तो उससे बहुत कुछ लाभ उठा सकते है। उस साधना से आपको जो अभूतपूर्व शक्ति सामर्थ्य प्राप्त होगी, वह आपके लिये तो हितकर होगी ही, उससे आप दूसरों का भी बहुत कुछ उपकार करने में समर्थ हो सकेंगे।

पन्ना और उसका त्राटक–

यह हरे रंग का एक प्रसिद्ध रत्न है। इसे पन्ना, पन्नग, सौपर्णि, हरित्मणि, मरकत मणि आदि करते हैं। आंगल भाषा में यह एमराल्ड कहा जाता है। यह मुख्यतः पांच प्रकार का पाया जाता है—(१) हरे पानी के समान रंग का, (२) मोर पंख जैसे रंग का, (३) सिरस पुष्प जैसे रंग का,(४) हल्के सेंडुल फूल के रंग का, (५) तोते जैसे रंग का।

हरे रंग के अतिरिक्त इसमें यह भी विशेषताएँ मिलती हैं कि यह स्वच्छ पारदर्शी, चिकना, वजन में हल्का, अधिक तेजोमय तथा चमकदार होता,है। इससे किरणों सी निकलतीं और फैलती हैं। कोमलता युक्त और सुन्दर होता है तथा टेढ़ा-मेढ़ा नहीं होता।

पन्ना बुध ग्रह को अनुकूल बनाने वाला ग्रह माना जाता है। यदि जन्म कुण्डली में बुध का प्रभाव अनिष्टकर प्रतीत हो तो आप पन्ना पर त्राटक साधना करके देखिये। जितना लाभ उसके धारण से होना

चाहिए, उससे अधिक लाभ उसके त्राटक से होगा। यह रत्न बुध से सम्बन्धित है।

पन्ना का शरीर पर प्रभाव–

पन्ना गुर्दे के विकारों में अधिक उपयोगी है। इससे बवासीर, पथरी, पित्त ज्वर, पित्तज विकार, रक्त विकार, रक्त स्रावादि में लाभ होता है। गुदा में गाँठ, पाण्डु, कास, श्वास, ग्रहणी, शोथ, अपच, आधाशीशी, वमन आदि में भी यह हितकर है। मृगी, उन्माद, हिस्टीरिया, हृदय की व्याकुलता, जलोदर, मूत्रकृच्छ, कुष्ट आदि चर्म-विकारों के दूर होने में सहायक है। वस्तुतः पन्ना हृदय, मस्तिष्क, यकृत्, आमाशय तथा प्राण को भी बलप्रद है। इससे उष्णता दूर होती है। कृमि दोष और नेत्र-रोगों का भी निवारण होता है। पुरुषों के स्वप्नदोष प्रभृति रोगों में भी प्रभावकारी तथा महिलाओं के लिए भी हितकर है, गर्भ पुष्ट करने वाला और सुख पूर्वक प्रसव कराने वाला होता है। शोथ, व्रण, पेचिश आदि में उपयोगी तथा अग्निमांद्य दूर कर भूख बढ़ाने वाला है।

इससे सूक्ष्म प्रभाव से भूत-प्रेत दूर भागते और जादू टोना का प्रभाव नहीं होता। किसी को नजर लगी हो तो इसके प्रभाव से दूर हो जाती है। धन, सम्पत्ति, पद वृद्धि में भी सहायक है।

किन्तु त्राटक साधना में दूषित पन्ना का प्रयोग नहीं करना चाहिए। नकली या इमीटेशन पन्ना भी साधना के लिये निषिद्ध माना गया है। उससे हानि की ही सम्भावना रहती हैं। दोष युक्त पन्ना के भी अनेक भेद हैं—रेखायुक्त, गड्ढेदार, दुरंगा, धुँधला, गाँझा आदि। कुछ दोषों तथा उनकी हानियों पर यहाँ प्रकाश डाला जाता है—

सीधी, टेढ़ी या पतली रेखाएँ हों तो वह पन्ना धन को नष्ट करने वाला माना गया है। यदि जाल जैसा हो तो वह भी धन, वैभव, स्वास्थ्य-नाशक तथा सम्मान को भी नष्ट करने वाला होता है।

जिसमें गड्ढा हो वह शस्त्राघात का भय उत्पन्न करने वाला होता है। इसके प्रभाव से व्यवसाय में हानि तथा अन्य पक्षों में भी प्रतिकूलता प्रतीत होती है।

धब्बेदार पन्ना स्त्री-पक्ष के लिये विशेष रूप से अहितकर है। काले रंग का धब्बा हो तो पत्नी से अनबन आदि हो सकती है। इसलिए भी साधना में इसका निषेध है।

धुँधले वर्ण का पन्ना सन्तान पक्ष में अहितकार समझा जाता है। जो रूखा और खुरदुरा हो, वह पशुधन के लिये विशेष रूप से हानि कारक है।

दोरंग का दिखाई देने वाला पन्ना बल, वीर्य और बुद्धि को घटाने वाला है। इसका प्रभाव शारीरिक स्वास्थ्य पर विशेष रूप से विपरीत होता है।

किन्तु जिस पन्ना पर चमक न हो, वह सब प्रकार से दुःखदायी होता है। इसके प्रभाव से धन हानि तो होती ही है, शारीरिक कान्ति तथा तेज भी नष्ट हो जाता है।

जिस पन्ने का रंग स्वर्ण के समान चमकदार और मुख पीला हो, वह सब प्रकार से कष्टकर होता है। यदि पन्ना में पीले रंग की बूँदें या छींटे हों, वह सन्तान पक्ष में अहितकर होता है।

पन्ना का त्राटक करने के लिये बिल्कुल स्वच्छ, इकसार, तथा निर्दोष पन्ना लीजिये। उसकी साधना सफल होने पर आप पन्ना के सभी गुणों के स्वामी हो सकते हैं। उससे अपना ही लाभ नहीं, दूसरों को भी पर्याप्त लाभ पहुँचाने में समर्थ होंगे।

पुखराज और उसका त्राटक–

पुखराज को पुष्प-पराग, पीत मणि, पीत स्फटिक आदि कहते हैं। आंग्ल भाषा में यह टोपाज या टोपे कहा जाता है। यह पीले रंग का

एक प्रसिद्ध रत्न है। रङ्ग भेद से इनके प्रकारों में भिन्नता भी पाई जाती है। यथा केसर के समान रङ्ग का, हल्दी के समान रङ्ग का, सोने के समान रङ्ग का, कमरख के से रंग का और नीबू जैसे रंग का। कोई पुखराज अत्यन्त सफेद रंग का भी होता है, जिसे चन्द्रमणि कहते हैं। कुछ सफेद पुखराज पीलेपन पर भी होते हैं।

शुद्ध पुखराज में कुछ विशेताएँ भी मिलती हैं, जैसे चमक, चिकनाहट पारदर्शिता, व्यवस्थित किनारे,पीला वर्ण आदि। सर्व श्रेष्ठ पुखराज की पहिचान में कहा जाता है कि हाथ में लेने पर वजनी प्रतीत हो, पीली आभा हो, पारदर्शी तथा धब्बे-धारी आदि से रहित हो, छिद्र आदि न हों, चमकदार और स्पर्श में चिकना हो, समान अंग वाला और चम्पा पुष्प के समान पीताभ हो। अथवा रंग-हीन, पानी के समान स्वच्छ एवं पीलेपन की झलक वाला हो। पुखराज गुलाबी, लाल या हरे हल्के रंग के या नीले हल्के रंग के भी होते हैं। किन्तु गुलाबी या लाल आभा वाला असली पुखराज प्रायः दुष्प्राप्य ही होता है।

साधना से त्याज्य पुखराज–

दोषयुक्त पुखराज साधना में त्याज्य माने गये गये हैं। इनके भी बहुत-से प्रकार हैं, जिनमें से बहुतों की चर्चा यहाँ की जाती है। यह भी गढ्डेदार, धारीदार, बूँददार, जालदार आदि के भेद से अनेक प्रकार के है, जिनके विषय में जानकारी उपयुक्त होगी—

गढ्ढेदार पुखराज धन-नाशक होने से दरिद्र बनाने वाला होता है। धारीदार पुखराज गृह-कलह का कारण है। जिसमें एक खड़ी लकीर-सी हो वह 'चीरी' संज्ञक पुखराज बांधवों से विरोध का कारण होता है' इसके प्रभाव से चोर,भय भी हो सकता है।

जिस पुखराज में छींटे हों वह दुःखदायी होता है। अधिक रंग के छींटे हों तो उसके प्रभाव से रोग, शोक और चिन्ता उत्पन्न हो सकती

है। यदि सफेद रंग की बूँदें हों तो पशु-धन को क्षय करने वाला होता है। यदि एकाद बूँद हो तो उसका प्रभाव अधिक हानिकारक नहीं होता।

यदि पुखराज चमक-रहित हो तो वह मनुष्य को निस्तेज और रोगी बना देता है। इसमें एक दोष स्वजनों तथा बान्धवादि से द्वेष उत्पन्न कर देने का भी माना जाता है।

यदि पुखराज में काली बूँदें हों तो आर्थिक हानि का कारण हो सकता है। यदि काला धब्बा हो तो उसका कुप्रभाव पशुधन पर ही विशेष रूप से पड़ता है।

यदि लाल रंग की बूंदों वाला पुखराज हो तो वह धन-धान्य के पक्ष में हानिकारक होता है। यदि अभ्रक के रंग का पुखराज हो तो उससे शरीर व्याधि ग्रस्त होता है।

यदि पुखराज का रंग दुधिया हो तो यह भी हानिकारक है। इसके प्रभाव से शरीर को चोट लग सकती हैं। यदि जाल का चिन्ह हो उदर शूल कारक तथा सन्तान पक्ष में हानि कारक होता है।

मलीन, भदरंग, अथवा मिश्रित रंग का, कहीं कोई रंग, कहीं कोई रंग का हो तो सौन्दर्य पक्ष में हानिकर होता है। त्वचा में वर्ण परिवर्तन श्वित्र आदि की सम्भावना हो सकती है। यदि पुखराज स्पर्श में बाल के समान किरकिरा हो तो इसके प्रभाव से शरीर की त्वचा रूखी तथा व्रणयुक्त हो सकती है।

लाल पीले या सफेद पीले दुरंगे पुखराज भी त्वचा को भदरंग बनाने वाले होते हैं। पाण्डुर या मुनक्का जैसे रंग का पुखराज भी इसी प्रकार त्याज्य समझा जाता है। टेढ़े-मेढ़े या ऊँचे-नीचे आकार का पुखराज भी पूर्ण रूप से निषिद्ध समझना चाहिए।

निर्दोष पुखराज के गुण-प्रभाव–

पुखराज सब प्रकार के ज्वर, विशेष कर पित्तज्वर, सामान्य या

एकान्तिक ज्वर में हितकर है। कफ-वायु के विकार, त्वचा दोष, कुष्टादि रोग, अन्त्रशोथ, श्वास, कास, पीनस, पाण्डु, अर्श, हृद्रोग, वृक्क रोग, नेत्र रोग, दन्त रोग, मुख की दर्द, रक्त चाप, रक्त स्राव, शिर शूल, प्रदाह, नकसीर, जले-कटे व्रण, मिचली, वमन, विशूचिका आदि में विशेष रूप से हितकर माना जाता है।

सब प्रकार की व्याधियों को दूर करने में यह सहायक हो सकता है। उन्माद, भूतोन्माद आदि में भी हितकर है। शरीर में बल की भी वृद्धि करता है। इसके सूक्ष्म प्रभाव से भूत-प्रेत दूर भागते हैं। अन्न, धन, सुयश आदि की वृद्धि तथा श्रेष्ठ मति की प्राप्ति होती है। कायरता, भय, शोक, चिन्ता तथा क्रोध के निवारण में भीं उपयुक्त है।

ग्रह पीड़ा को दूर करने में भी पुखराज सहायक होता है। इसकी साधना से धर्म में रुचि होती है और आध्यात्मिक विचारों का पोषण होता है। मनुष्य पाप-कर्मों में रुचि नहीं रखता और स्वार्थ भावना का भी त्याग करके परोपकारी बन जाता है।

यदि मन में शान्ति चाहते हैं, यदि सांसारिक विकृतियों से बचना चाहते हैं तो आपको पुखराज पर त्राटक की साधना करनी चाहिये। आप त्राटक साधना में सफल होने पर उक्त गुणों से सम्पन्न होकर अपना और लोक का हित कर सकते हैं। पुखराज वृहस्पति ग्रह से सम्बन्धित रत्न हैं।

गोमेद और उसका त्राटक–

गोमेद को पिंगस्फट, राहु-रत्न, गोमेदक आदि नामों से पुकारा जाता है। अंग्ल भाषा में इसे जिरकान कहते हैं। इसका रंग गोमूत्र के समान पीला, कुछ लालाभ और कुछ श्यामाम होता है। प्रायः शहद जैसे वर्ण की आभा भी दिखाई देती है गोमेद में। यह रत्न राहु से सम्बन्धित है तथा जिनके लिये राहु की दिशा अनिष्ट कारी हो, उनके

लिये विशेष रूप से हितकर है ।

शुद्ध गोमेद सुन्दर, चिकना, चमकदार, पानीदार और उज्वल होता है । उत्तम कोटी के गोमेद में कोमलता, भारीपन, समानता, स्वच्छता और आभा होती है । जिसमें पर्त न हो ऐसा गोमेद लाभदायक माना गया है । जिसमें सहज आकर्षण हो तथा जो हीरे से होड़ लेता हो चमक में वह भी उपयोगी होता है ।

असली गोमेद को आप कसौटी पर घिसें तो भी उसकी कान्ति में अन्तर प्रतीत नहीं होगा । यदि आप उसे लकड़ी के बुरादे से घिसें तो चमक बढ़ सकती है । यदि उसे दूध में डाल दें तो दूध का रंग बदल जाता है । गोमूत्र में डालने पर उसके रंग में भी परिवर्तन आता है । किन्तु दूध या गोमूत्र में रंग का परिवर्तन बहुत देर तक रखने पर ही होता है ।

दूषित गोमेद का निषेध–

गोमेद भी यदि सदोष हो तो त्राटक साधना में उसका प्रयोग नहीं करना चाहिए । अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही अधिक सम्भावित है । इसी प्रकार नकली गोमेद का प्रयोग भी इस साधना में अधिक हितकर नहीं होता । वरन् सम्भव है कि उल्टे हानि ही उठानी पड़े ।

अन्यान्य रत्नों के समान गोमेद में भी अनेक प्रकार के दोष पाये जाते हैं । उनमें दोष के अनुसार ही विपरीत प्रभाव पाया जाता है । इस विषय में कुछ चर्चा किया जाना उचित होगा—

यदि गोमेद धब्बेदार हो तो यह अत्यन्त हानिकारक होता है । मन में चञ्चलता बढ़ जाती है । घर में रहने को चित्त नहीं करता । वरन् कभी-कभी ऐसा योग उपस्थित हो जाता है कि साधक को अपना घर, नगर और देश तो छोड़ने को बाध्य हो जाना पड़ता है ।

यदि गोमेद में सफेद बूँदें हों तो इसके प्रभाव से स्वास्थ्य पर विप-

प्रभाव पड़ता है। रोग तथा भय हो सकता है। किन्तु यदि काली बूँदें हों तो इसका प्रभाव स्त्री-पक्ष पर अधिक पड़ता है। इससे स्त्री को कष्ट उठाना पड़ सकता है। यदि लाल बूँदे हों तो सन्तान पक्ष में हानिकारक हो सकता है।

यदि गोमेद दुरंगा हो तो पिता के लिये हानिकारक हो सकता है। किन्तु लाल रंग वाला या भदरंग गोमेद चर्म रोग उत्पन्न करता है। उससे शरीर पर चकत्ते पड़ सकते हैं। चमड़ी रूखी, भद्दी या भदरंग हो सकती है।

यदि गोमेद में गड्ढे पड़े हों तो वह धन-सम्पत्ति के पक्ष में अहितकर होता है। यह आय कम और व्यय अधिक कराने वाला तथा अपयश प्राप्त कराने वाला भी हो सकता है।

जिसमें जल जैसे चिन्ह बने हों, उस गोमेद से रोग की उत्पत्ति हो सकती है। जिस गोमेद में सुन्दरता न हो, देखने में अच्छा प्रतीत न हो वह भी व्याधि कारक माना जाता है।

रूखा गोमेद प्रतिष्ठा को ठेस पहुंचाने वाला होता है। पदावनति, अपयश आदि की स्थिति उत्पन्न हो सकती है। जिस गोमेद में चमक न हो वह मनुष्य को बुद्धिहीन बनाता है। जिसमें लकीरें या क्रास के चिन्ह हों वह रक्त-विकार उत्पन्न करने वाला होता है।

यदि जाल का चिह्न हो तो गृह-कलह, प्रतिष्ठा नाश या स्त्री के लिये अस्वास्थ्यकर होगा। यदि उक्त दोषों में एक से अधिक दोषों का मिश्रण पाया जाय तो उसमें अधिक दोष हो सकते हैं। ऐसा गोमेद प्रत्येक पक्ष में अवनति करने वाला होने से पूर्ण रूपेण त्याज्य होता है।

गोमेद के त्राटक का प्रभाव—

गोमेद के द्वारा अनेक रोग दूर किये जा सकते हैं, जैसे क्षय, धातु क्षय, उपदंश, प्रमेह, त्वचा के दोष, अपच, अग्निमांद्य, नकसीर, रक्त-

दोष, मस्तिष्क दौर्बल्य, वायुगोला, वायुशूल, यकृत्, प्लीहा, वृक्क-दोष, धुन्ध, दुर्गन्ध, बवासीर आदि । यह पित्त-शामक और पाचक है ।

सूक्ष्म प्रभाव वाला होने पर यह बुद्धि वर्धक होता है । मुखमण्डल का कालापन दूर करके तेज की वृद्धि करता है । धन सम्पत्ति, पदोन्नति, सन्तान वृद्धि आदि में भी यह अनुकूल रहता है । शत्रु को परास्त करना इसके साधक के लिये सहज सम्भव है । अनेक प्रकार के मनोविकारों को दूर करने में यह बहुत उपयोगी है ।

हीरा और उसका त्राटक–

हीरा सर्वाधिक प्रसिद्ध रत्न है । आबाल वृद्ध, स्त्री-पुरुष सभी इसके नाम से परिचित हैं। इसे हीरक, वज्रमणि, कुलिश, अर्क आदि नाम भी दिये गये हैं । आंग्ल भाषा में हीरा को डायमण्ड कहते हैं । यह रत्न शुक्र ग्रह से मुख्य रूप से सम्बन्धित है । यदि किसी की जन्य कुण्डली में शुक्र का प्रकोप पाया जाय तो उसे अनुकूल बनाने के लिये हीरा का त्राटक करना चाहिए ।

हीरा प्राय: श्वेत वर्ण का होता है । उसमें चमकीलापन, कठोरता, सुन्दरता, चिकनापन आदि गुण पाये जाते हैं । अँधेर में यह पटवीजना (जुगनूँ) के समान चमकता है । अधिक कठोर होने के कारण ही हीरा को 'वज्र' कहा जाता है । यदि घिसना चाहें तो यह घिसा नहीं जाता और घिसने पर उसकी चमक भी यथावत बनी रहती है । स्पर्श में हीरा ठण्डा रहता है ।

हीरे के तीन लिंगभेद भी हैं। अधिक चमकदार, इन्द्रधनुषी आभा वाला पुंल्लिग होता है । इसमें रेखा, बूँद, धब्बा आदि कुछ नहीं होना चाहिए । यह अठपहलू आकार का होता है । किन्तु कुछ गोल, चपटा, षट्कोणी आकार का हीरा स्त्रीलिंगी माना जाता है । इसमें विन्दु या रेखाएँ भी हो सकती हैं । गोल आकार का, कोण एवं तीक्ष्ण किनारों

से रहीत हीरा नपुंसक लिंगी है। त्राटक-साधना में आप अपने उद्देश्य के अनुसार पुंल्लिगी, स्त्रीलिंगी या नपुंसक लिंगी हीरा का प्रयोग कर सकते हैं।

प्राचीन ग्रन्थों में हीरा के आठ मुख्य भेद मिलते हैं—(१) वसन्ती, (२) वज्रनील, (३) श्याम वज्र, (४) हंसपति, (५) श्रीपति, (६) वनस्पति, (७) तेलिया, और (८) पीताभ। पीताभ को सनलोई नाम भी दिया गया है। इन नामों का कारण उनके गुणानुसार हैं—

वसन्ती, गेंदा के रंग का या पुखराज जैसे रंग का हीरा भगवान् शंकर को अधिक प्रिय है। यदि इस हीरे पर त्राटक किया जाय तो भगवान् शंकर की कृपा प्राप्त होती है। एक सज्जन ने बताया कि वसन्ती हीरा की त्राटक-साधना और महा मृत्युञ्जय का जप मारकेश जैसे कुयोग को दूर करने में समर्थ हैं।

श्रीपति संज्ञक हीरा भगवान् विष्णु को अत्यन्त प्रिय है। वे इसे हृदय पर धारण किये रहते हैं। इसका रंग अनार के समान हल्का गुलाबी अथवा कमल पुष्प के समान होता है। इसके त्राटक से भगवान् विष्णु की प्रसन्नता प्राप्त होती है। यदि इसका साधक विष्णु सहस्रनाम का पाठ करे तो अनेक कामनाओं में सफल होता है। यदि श्रीपति संज्ञक हीरा की साधना के साथ श्रीमद्भागवतोक्त गजेन्द्र स्तोत्र का पाठ भी किया जाय तो सब प्रकार के संकटों से छुटकारा मिल सकता है।

हंसपति नामक हीरा या बगुला के पंख के समान अथवा दूध-दही के रंग का श्वेत होता है। यह हीरा ब्रह्माजी धारण करते हैं। इसके त्राटक से श्रेष्ठ बुद्धि, विद्या आदि की वृद्धि होती तथा वेद-शास्त्र आदि में गति बढ़ जाती है।

वज्रनील संज्ञक हीरा नीलकण्ठ पक्षी या अलसी पुष्प के वर्ण का होता है। देवराज इन्द्र इसे सदैव धारण किये रहते हैं। इसलिये इसके त्राटक से इन्द्र की प्रसन्नता होती है। अतिवृष्टि हो या अनावृष्टि हो तो

इसके त्राटक से लाभ उठाया जा सकता है। चावल आदि की खेती करने वालों या चावल का व्यापार करने वालों के लिये भी इससे अपेक्षित लाभ सम्भावित है।

श्याम वज्र का रंग काला होता है। यह हीरा भगवती काली को अधिक प्रिय है। जो लोग महाकाली की प्रसन्नता प्राप्त करना चाहते हों वे श्याम वज्र के त्राटक के द्वारा अनेक अभीष्ट में सफल हो सकते हैं। चाहें तो उसके साथ ही महाकाली की अन्य साधना, अर्चना आदि भी अपेक्षानुसार कर सकते हैं।

वनस्पति संज्ञक हीरा पानी जैसे रंग का होता है। यह हीरा जल के स्वामी वरुण को अत्यन्त प्रिय है। इसकी साधना से वरुण देव प्रसन्न रहते हैं तथा साधक की जल भय से रक्षा करते हैं।

तेलिया हीरा कालेपन पर होता है, किन्तु इसमें चमक अधिक होती है। यह यमराज को अधिक प्रिय है। इसकी त्राटक साधना यमराज को प्रसन्न करने वाली तथा मृत्यु पर विजय प्राप्त कराने वाली है।

पीताभ या सनलाई नामक हीरा मुख्यत: पीले रंग का होता है। किन्तु कुछ कालेपन पर, लालपन या भूरेपन पर भी पाया जाता है। इससे देवगुरु वृहस्पति की भी प्रसन्नता प्राप्त की जा सकती है।

हीरे पारदर्शक और अपारदर्शक दोनों प्रकार के पाये जाते हैं। किन्तु उत्तम कोटि के हीरे में पारदर्शकता मुख्य गुण माना जाता है। जो हीरा निर्दोष हो उसी का प्रयोग उचित है। यदि निम्न दोष पाये जाँय तो त्राटक साधक को उसका त्याग कर देना चाहिये—

जिस हीरे में चमक न हो उसे सुन्न कहते हैं। ऐसे हीरे पर त्राटक करने से शरीर में शिथिलता, सुन्नता आती और मनोद्वेग हो जाता है। यह धन-पक्ष में भी हानिकारक है।

जो हीरा बूँद युक्त हो वह हानिकारक है। कुछ के मत में वह स्वास्थ्य नाशक तथा आयु को घटाने वाला होता है। यदि किसी हीरे

में आड़ी रेखा हो तो वह दुःखदायी होता है। साधक के लिये उससे शारीरिक विषाद हो सकता है।

यदि हीरे में खड़ी रेखा हो तो वह मृत्युकारक हो सकता है। यदि तिरछी रेखा हो तो वह स्त्री के लिये कष्टकारी होगा। इसके प्रभाव से गृह कलह भी सम्भावित है।

यदि हीरे के मध्य में धार या जोड़ जैसा प्रतीत हो तो वह अनिष्टकर होता है। उसके प्रभाव से व्याधियाँ, चोर-भय, शत्रु भय या अग्नि-भय भी हो सकता है।

जिस हीरे में गड़ढा हो, वह स्वास्थ्य पक्ष में अहितकर और रोग उत्पन्न करने वाला हो सकता है। व्यावसायिक पक्ष में भी उसके प्रभाव से हानि हो सकती है।

जिस हीरे में जौ के आकार का चिन्ह हो वह भी हानिकारक माना जाता है। यदि जौ का चिन्ह काले रंग का हो तो धन-सम्पत्ति के लिये अहितकर है। यदि जो का चिन्ह लाल रंग का है तो उससे धान्यादि की क्षति हो सकती है।

यदि हीरे में लाल रंग का दाग हो तो धन-धान्य नष्ट करने वाला और पीले रंग का दाग हो तो सब प्रकार से हानिकारक है। यदि काला दाग हो तो अनिष्टकारक है।

यदि कौए के पंजे जैसा काला चिन्ह किसी हीरे के मध्य भाग में हो तो वह 'काकपद' संज्ञक दोष वाला होता है। वह अत्यन्त हानिकारक और मृत्युदायक समझा जाता है।

अभ्रक जैसी आभा वाला हीरा या धूम्र वर्ण का हीरा भी दुःख देने वाला होता है। हीरे के कोण, धार, या मध्य भाग में कोई भी दोष हो तो वह भी सुख-नाशक है। तेलियापन, अधिक भूरापन आदि भी हीरे के दोषपूर्ण होने के लक्षण हैं। ऐसे हीरा त्राटक-साधना में पूर्णतया वर्जित है।

हीरा नकली हो तो उसके त्राटक से भी कोई लाभ नहीं होगा। असली हीरा की एक मुख्य पहिचान है कि यदि उसे धूप में रख दें तो इन्द्रधनुष जैसी किरणें निकलती दिखाई देंगीं। यदि उसे पिघले हुए गर्म घी में डाल दें तो घी जम जायगा। यदि गर्म घी, गर्म दूध या गर्म पानी में डाल दें तो वह तुरन्त ठण्डा हो जायगा।

असली हीरा पर असली हीरा की ही खरोंच पड़ सकती है। अन्य किसी भी वस्तु की खरोंच नहीं पड़ पाती। असली हीरा का त्राटक करने वाला मनुष्य विपरीत लिंगी को सहज ही अपनी ओर आकर्षित करने और उसे वश में रखने में समर्थ होता है।

ध्यान रहे कि इमीटेशन हीरा ही बाजारों में अधिकता से उपलब्ध है और वह भीं बहुत महँगा मिलता है। रासायनिक मिश्रणों के द्वारा वे हीरे भी ऐसे ढँग से बनाये जाते हैं कि अच्छे-अच्छे पारखी भी उनकी परख में चूक जाते हैं। आप हीरा का त्राटक चाहें तो उसके लिये असली हीरा प्राप्त करें और किसी भरोसे के व्यक्ति से पहिचान करालें। त्राटक साधना में अपेक्षित लाभ के लिये असली हीरा फलकारी हो सकता है।

हीरा का रोग निवारक प्रभाव–

हीरा पर त्राटक का अभ्यास सिद्ध होने पर साधक में उससे सम्बन्धित रोगों के निवारण की सामर्थ्य आ जाती है। उन रोगों से वह स्वयं तो पीड़ित नहीं रहता, दूसरों को भी दृष्टिमात्र से ही रोगमुक्त करने में सफल हो सकता है। हीरा में निम्न रोगों को नष्ट करने की शक्ति है—

उन्माद, मृगी, हिस्टीरिया, नपुंसकता, शुक्रदोष, रजोदोष, वायुविकार, संग्रहणी, शिरः शूल, आधासीसी, अतिसार, आध्मान, रक्तातिसार अर्श, भगंदर, स्वरभंग, क्षयरोग, पाण्डु, जीर्णज्वर, हृद्रोग, रक्त-

चाप, फुफ्फुस-प्रदाह, कष्टार्तव' प्रदर, चक्षु रोग, आदि में इससे बहुत लाभ होता है। कष्ट प्रसव की स्थिति में यह शीघ्र प्रसव कराने वाला है। दोनों पर भी इसका प्रभाव डाला जा सकता है। षट्कोण हीरा मृगी को दूर करने में अधिक प्रभावशाली समझा जाता है।

इसका सूक्ष्म प्रभाव शरीर की समस्त धातुओं पर पड़ता है। मुख द्वारा सेवन करने पर यह सर्प-विष के समान एक घातक विष सिद्ध होता है। इसलिये त्राटक-साधना के द्वारा इससे अधिक लाभ उठाया जा सकता है।

तांत्रिक प्रभाव–

त्राटक के द्वारा हीरा का तान्त्रिक प्रभाव ग्रहण किया जा सकता है। यह सामान्य भय, आशंका, झिझकी आदि को शीघ्र ही दूर कर देता है। राजभय से बचाने वाला और शत्रु को पराजित करने वाला है। इसके द्वारा जादू-टोने का प्रभाव दूर हो जाता है तथा भूत-प्रेत की बाधा समाप्त हो जाती है।

यदि कोई स्त्री इसकी त्राटक-सिद्धि करले तो वह पुरुष को सहज ही वश में कर सकती है। यदि कोई पुरुष करे तो वह स्त्री के वश में कर सकता है। इसके प्रभाव से विषैले जीव जन्तु भाग जाते हैं तथा शरीर और मन दोनों ही स्वस्थ रहते हैं।

हीरा का त्राटक शास्त्रज्ञान में पारंगत बना देता है। इसके प्रभाव से श्रेष्ठ बुद्धि और पद-प्रतिष्ठा की प्राप्ति होती है। सुयश, अन्न, धन, वैभव आदि की वृद्धि भी हो जाती है। इसका त्राटक करने वाले को विद्युत् का झटका (शॉक) उतना तीव्र नहीं लगता।

वैदूर्यमणि और उसका त्राटक–

वैदूर्य के भी भाषा-भेद और स्थान-भेद से अनेकों नाम हैं—सूत्र-मणि, बालसूर्य, अभ्ररोह, विदुरत्न, लहसुनिया आदि। आंग्ल भाषा में

इसे कैट्स आई स्टोन कहते हैं। यह रत्न कई रंगों में पाया जाता है, जैसे—सफेद, पीला, हरा, काला आदि। किसी भी रंग का वैदूर्य हो, सभी में प्राय: सफेद रंग की धारियाँ होती हैं। किसी-किसी में धूम्र-वर्ण की धारियाँ भी देखी जाती हैं।

वैदूर्य में चिकनाहट, भारीपन, चमकीलापन आदि विशेषताएँ पायी जाती है। कुछ वैदूर्यों में यज्ञोपवीती के समान तीन धारियाँ रहती हैं, यह अत्युत्तम कोटिका माना जाता है। शुभ वैदूर्य अच्छे घाट का तथा सुन्दर होता है। यह रत्न केतु ग्रह से सम्बन्धित माना गया है।

जिसमें कालापन, श्वेतपन, स्वच्छता, मध्य में रेखा, आदि हों वह उत्तम प्रकार का होता है। रत्न के मध्य में सूत के समान पड़ी हुई रेखाएँ जितनी सीधी, सरल, सुन्दर और चमकदार होंगी, उतना ही अच्छा समझा जायगा वैदूर्य। घिसने पर भी स्वच्छ प्रतीत हो तो यह भी शुभ होता है। कुछ प्रकार के वैदूर्यों में कोई रेखा नहीं होती, साधना में वह भी ग्राह्य माना जाता है। वरन् कुछ अनुभवियों का तो यह कहना है कि त्राटक-साधना में बिना रेखा का वैदूर्य ही अधिक प्रभाव-शाली होता है।

जिस वैदूर्य में बिल्ली की आँख (विडालाक्ष) के समान पिंगल वर्ण की छाया प्रतीत हो, वह उत्तम माना जाता है। बाँस या ढाक के पत्ते के समान कान्ति वाला तथा मोर कण्ठ जैसी आभा वाला वैदूर्य भी श्रेष्ठ है। यदि किसी वैदूर्य में स्वर्ण के समान चमकदार आभा प्रतीत हो, वह भी उत्तम है। हाथ में लेकर हिलाने-डुलाने पर स्वर्ण जैसी, सूर्य-प्रकाश जैसी, नीले या हरे पन पर अथवा दूधिया आभा झल-कने लगे तो ऐसा वैदूर्य भी साधना में ग्राह्य माना गया है।

ध्यान रहे अन्य रत्नों के समान वैदूर्य भी नकली बनाया जाता है। यह युग ही इमीटेशन का है, किन्तु साधना के लिये असली वैदूर्य लेना ही हितकर है। आप वैदूर्य की प्राप्ति किसी अधिक विश्वस्त व्यक्ति से

करें और फिर भी उसकी परीक्षा ठीक प्रकार से करालें। कुछ पहिचान यह भी है कि आप उसे घोर अन्धकार में रख दें तौ उससे किरणें निकलती प्रतीत होंगी। क्योंकि यह रात्रि में बिल्ली की आँख के समान चमकता हैं। यदि इसे किसीं साफ कपड़े से रगड़ें तो चमक बढ़ जाती है। यदि किसी साबुत हड्डी के ऊपर रख दें वैदूर्य को तो हड्डी में आर-पार छेद हो सकता है।

यह भी स्मरण रहे कि दोषपूर्ण वैदूर्य प्रयोग करने से विपरीत प्रभाव वाला होता है। आप त्राटक-साधना में वैदूर्य का प्रयोग करना चाहें तो सदोष वैदूर्य से होने वाली हानियों को ध्यान में रखते हुए उसका त्याग कर दें।

यदि वैदूर्य में क्रास का चिन्ह हो तो इसके प्रभाव स्वरूप शास्त्राघात का भय हो सकता है। इसलिये ऐसा वैदूर्य त्राटक साधना में पूर्णरूप से वर्जित है।

यदि वैदूर्य में धब्बा हो तो वह भी निषिद्ध हैं। उसके कारण स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। रोग, मानसिक अशांति तथा शत्रु भय भी रह सकता है।

यदि उसमें काली बूँदें हों तो अत्यन्त हानिकारण और मारक योग उपस्थित करने वाला हो सकता है। यदि लाल रंग की बूँदें हों तो सन्तान पक्ष में, विशेष कर पुत्र के लिये कष्टकारी होना चाहिये।

यदि सफेद बूँदें हों तो साधक के बड़े भाइयों के लिये दुःख देने वाला हो सकता है। यदि शहद के रंग की बूँदें हों तों ऐसा वैदूर्य पत्नी के लिये अहितकर होता है।

यदि वैदूर्य में जाल जैसा चिन्ह हो तो बन्दीगृह का भय, राज दण्ड का भय तथा पत्नी का कष्ट पहुंचाने वाला हो सकता है। यदि लाल रंग के धब्बे या छींटे हों तो उसके प्रभाव से गृह-कलह की सम्भावना हो सकती है।

धूम्र वर्ण का वैदूर्य परिवार और सन्तान के लिये अहितकर समझा जाता है। चमक-रहित वैदूर्य शारीरिक स्वास्थ्य और धन-पक्ष में अहितकर हैं।

यदि आप वैदूर्य पर त्राटक साधना करते हैं तो अवश्य ही बहुत-से दिव्य गुणों के स्वामी हो सकते हैं। उसका प्रभाव निम्न माना जाता है—

आमवात, ग्रहणी, रक्तातिसार, कफजन्य विकार, कफ-वायु के उपद्रव, मधुमेह, उपदंश, नेत्र रोग, मूत्रकृच्छ्र, उदर विकार, पित्त दोष, अर्श, अजीर्ण, वायुगोला आदि में उपयोगी है। मधुमेह के रोगियों को भी इसके त्राटक से लाभ होता है।

सूक्ष्मरूप से इसका प्रभाव मन-मस्तिष्क पर भी पड़ता है। यह सुख-शान्ति तथा सन्तान-सुयश आदि का देने वाला है। शत्रु को स्तम्भिक करता और शस्त्राघात से बचाता है। भूत-बाधा उन्माद, अपस्मार, राजदण्ड का भय, आकस्मिक दुर्घटना आदि से बचाने में भी यह उपयोगी समझा गया है।

नीलम और उसका त्राटक—

नीलम भी एक प्रसिद्ध रत्न है। इसे नीलमणि, इन्द्रनील, शौरिरत्न आदि नामों से भी कहते हैं। आंग्ल भाषा में इसे 'सोपायर टरग्यूज' कहते हैं। ज्योतिषियों के मत में 'नीलम' शनि से सम्बन्धित रत्न है। यदि शनिग्रह का प्रकोप हो तो इसके त्राटक से लाभ उठाया जा सकता है। शनि की दिशा वालों के लिये उपयोगी है।

नीलम के दो मुख्य भेद हैं—इन्द्रनील और जल नीला। जो नीलम भीतर श्याम आभा वाला अथवा बैंगनी आभा वाला (नीले-लाल मिश्रित) हो तथा अपेक्षाकृत भारी हो वह इन्द्रनील कहलाता है।

इससे भिन्न अर्थात् भीतरी भाग श्वेत और चारों ओर नीलिमा युक्त तथा अधिक भारी न हो उस प्रकार के नीलम को जलनील कहते

हैं। मुख्यत: नीलम में निम्न विशेषताएँ रहें तो वह अधिक उत्तम प्रकार का माना जाता है—

स्वच्छ, चिकना, चमकदार, पारदर्शक, मोरपंख जैसे वर्ण का, सुडौल कोण वाला, एक ही रङ्ग का, अच्छे पानी, स्पर्श में कोमल प्रतीत होने वाला हो। नीलम को तृणाग्राही भी कहते हैं, जिसका कारण उसमें वैसा ही गुण होना है। यदि आप किसी तिनके को नीलम के पास तक ले जाँय तो वह उससे उसी प्रकार चिपक जाता है जैसे चुम्बक से लोहा।

नीलम में दोष—

अन्य रत्नों के समान नीलम में भी अनेक दोष और कुफल पाये जाते हैं। जैसे यदि-नीलम गढ्ढेदार है तो उसके प्रभाव से त्वचा के दोष-फोड़े-फुन्सी आदि हो सकते हैं। ऐसा नीलम विष प्रभाव और शत्रु-भय की वृद्धि करने वाला होता है।

यदि नीलम में जाल जैसा चिन्ह बना हो तो वह शारीरिक स्वास्थ्य को प्रभावित कर रोग उत्पन्न कर देता है। यदि उसमें बूँदें दिखाई दें तो वह हानिकारण है। उससे शारीरिक तथा मानसिक स्वास्थ्य का नाश, सुख का नाश तथा मन पर भी विपरीत प्रभाव पड़ता है।

जिस नीलम में सफेद डोरी या धारी प्रतीत हो, वह नेत्रों के लिये पीड़ा कारक है। जिसमें क्रास का चिन्ह हो वह शस्त्राघात एवं अपघात कराने वाला होता है। जिसमें जो का चिन्ह हो वह धन को नष्ट कराने वाला है।

दूधिया रंग का नीलम दरिद्र बनाता है। दुरंगा नीलम सन्तान और पत्नी के पक्ष में कष्टकारी तथा शत्रुओं की हलचल बढ़ाने वाला होता है। यदि नीलम चमक-रहित धूमिल हो तो वह अनेक प्रकार से हानिकारक तथा मित्रों और बान्धवों से विरोध कराने वाला अथवा उन्हें पीड़ा पहुँचाने वाला हो सकता है।

नीलम का शरीर पर प्रभाव–

नीलम यदि दोष-रहित हो तो वह अनुकूल प्रभाव उत्पन्न करने में समर्थ है। उससे सभी प्रकार के ज्वर दूर हो सकते हैं। विषय ज्वर, जीर्णज्वर आदि में विशेष रूप से हितकर है। सिर में गंजापन, रूसी, खुजली, त्वचा के रोग, वृक्क सम्बन्धी रोग, कर्णमूल प्रदाह, मूत्राशय प्रदाह, दुर्गन्ध, रसौली, मृगी, उन्माद, जलोदार, शिरःशूल, अर्द्धविभेदक, कटिशूल, हृच्छूल, स्नायविक शूल, वायु का दर्द, सन्धियों में दर्द, वमन, अजीर्ण, अग्निमांद्य, मुख से रक्त वमन, कुष्ट एवं श्वित्र, खाँसी, जुकाम, हिक्का, क्षय, दमा, जलोदर तथा मस्तिष्क दोषों में भी इसके प्रयोग से लाभ उठाया जा सकता है।

नीलम के द्वारा विष-प्रभाव भी दूर किया जा सकता है। अवयवों में शक्ति आती है तथा ठण्डक पहुँचाती है। प्रकृति को मृदु करने वाला रत्न है तथा नेत्रों के लिये विशेष रूप से उपयोगी है। इसकी प्रकृति ठण्डी और कुछ रूक्ष मानते हैं।

नीलम के सूक्ष्म विशिष्ट प्रभाव–

नीलम धन-धान्य तथा सुख-समृद्धि की वृद्धि करने वाला रत्न है। इसका प्रभाव शीघ्र ही प्रकट होता है। यह मन-मस्तिष्क को बलवान बनाने वाला, पद-सम्मान बढ़ाने वाला तथा वंश-वृद्धि करने वाला है। इसकी त्राटक-साधना समस्त रोग, शोक, दुःख दारिद्रय आदि को दूर करने में समर्थ है। इसके प्रभाव से शारीरिक सौन्दर्य एवं मुख पर तेज की वृद्धि होती है। चिन्ताएं आदि दूर हो जाती हैं।

नीलम कुबुद्धि का हरण करने में प्रभावशाली है। यह मूर्ख को भी विद्वान् बना देता है। इसका त्राटक सभी प्रकार के कुविचारों को नष्ट करने में समर्थ है। अशान्त मन भी इसकी साधना से शान्त और प्रसन्न हो जाता है।

किन्तु नीलम सभी के लिये अनुकूल ही पड़े, यह सम्भव नहीं। जिसके लिये अनुकूल हो वह उक्त समस्त सामर्थ्यों, समस्त लाभों का स्वामी हो सकता है। किन्तु यदि नीलम अनुकूल न पड़े तो विपरीत गुण वाला हो जाता है। प्रतिकूल नीलम सभी पक्षों में हानि पहुँचाता है।

ध्यान रखिये—यदि नीलम अनुकूल प्रतीत न हो, उससे किसी भी प्रकार की हानि अनुभव में आये तो उसकी साधना तुरन्त बन्द कर देनी चाहिये। अन्यथा अधिक हानि की सम्भावना हो सकती है। उस स्थिति में आप चाहें तो किसी अन्य रत्न का त्राटक आरम्भ कर सकते हैं। सदा ही यह देखना चाहिये कि जो रत्न अपनी प्रकृति और प्रयोजन से मेल खाता हो उसकी त्राटक-साधना अवश्य ही अनुकूल और हितकर सिद्ध हो सकती है।

वृक्ष, फल-फूल व जड़ी बूटियों के त्राटक के असाधारण लाभ

मणि-रत्नादि के समान ही आप फल-फूल तथा जड़ी-बूटी आदि पर भी त्राटक-साधना कर सकते हैं। अनुभवी व्यक्तियों का कहना है कि वृक्ष, फल-फूल आदि में जो गुण होते हैं, उनका प्रभाव तुरन्त ही शरीर के विभिन्न अवयवों और विभिन्न धातुओं पर पड़ता है, इस कारण इनके त्राटक की सिद्धि में भी अधिक सरलता रहती है।

प्रभाव की दृष्टि से भी वृक्ष, फल-फूल, जड़ी-बूटी आदि की उपयोगिता बढ़ी-चढ़ी है। क्योंकि इन सभी औषधि-गुण के साथ ही जीवनीय शक्ति बढ़ाने वाली विशेषता रहती है। शरीर के विभिन्न अवयवों और तन्त्रों पर इनका स्थूल और सूक्ष्म दोनों ही प्रकार का प्रभाव पड़ता है। इसलिये इनमें जहाँ पोषण की सामर्थ्य होती है, वहाँ रोग-निवारण की

भी शक्ति विद्यमान रहती है। आप इनकी साधना के द्वारा अपने मन-मस्तिष्क तथा शरीर को भी स्वस्थ, सुखी बना सकते हैं।

अखरोट का त्राटक–

अखरोट का वृक्ष प्राय: पर्वतीय क्षेत्रों में पाया जाता है। इसका फल स्वादिष्ट भी होता है ओर पोषक भी। इसमें औषधि गुणों की भी कमी नहीं है। यदि आप अखरोट के वृक्ष अथवा फल पर त्राटक का अभ्यास करें तो इन गुणों के स्वामी हो सकते हैं—(१) सरल पाचन शक्ति, (२) मृदु प्रकृति, (३) धातु वृद्धि, (४) हृद्रय की सफलता, तथा (५) आन्तरिक इन्द्रियों की पुष्टि आदि।

अखरोट हृदय की दुर्बलता नष्ट करके उसे सबल बनाने वाला है। मस्तिष्क दौर्बल्य को भी दूर करने में समर्थ है। यकृत् की कमजोरी के कारण शरीर की सभी क्रियाएँ गड़बड़ हो जाती हैं, उन्हें ठीक करने में यह बहुत सहायक होता है। यकृत्-दौर्बल्य के लिये ही नहीं आन्तरिक इन्द्रियों के दौर्बल्य के लिये भी यह एक उत्तम वस्तु है। इससे कफज खाँसी या शीत ऋतु की खाँसी में भी शीघ्रातिशीघ्र लाभ होजाता है।

उदर पर भी अखरोट का अनुकूल प्रभाव पड़ता है। यह आँतों की क्रिया ठीक करके अजीर्ण एवं अग्निमांद्य को दूर करने में सहायक सिद्ध होता है। पाचन यन्त्र पर पड़ने वाली रासायनिक क्रिया के फल स्वरूप व्यर्थ मल का लय और निष्कासन सहज ही हो जाता है। आन्तरिक इन्द्रियों की दुर्बलता दूर होने से शरीर स्वस्थ होता है। इसके द्वारा प्रकृति मृदु हो जाती है।

शरीरस्थ सप्त धातुओं पर भी इसका अनुकूल प्रभाव पड़ता है। इसलिये शारीरिक पुष्टि के लिये अधिक उपयोगी है। कास, श्वाश आदि में भी अखरोट हितकर समझा जाता है। यदि आप इसके त्राटक का अभ्यास करें तो उक्त गुणों के स्वामी हो सकते हैं तथा दूसरों को भी लाभ पहुंचा सकते हैं।

अंजीर का त्राटक–

अंजीर भी एक स्वादिष्ट फल है। इसमें भी पोषक गुणों के साथ ही औषधि गुण भी विद्यमान हैं। यह वायुनाशक और कफ नाशक भी है। इसलिये कफजन्य खाँसी के लिये बहुत लाभदायक है। शारीरिक धातुओं पर भी इसका अत्यन्त अनुकूल प्रभाव पड़ता है।

समस्त वात-विकारों में यह बहुत हितकर समझा जाता है। सन्धियों में होने वाले दर्द को शीघ्र लाभ पहुँचना है। यदि बहुमूत्र रोग हो तो अंजीर उसमें भी लाभकारी है। यकृत् और तिल्ली के लिये भी उपयोगी है। वृक्क (गुर्दों) की दुर्बलता में भी अनुकूल है। रक्त सञ्चार की अनियमितता तथा अन्यान्य प्रकार के अवरोधों का उद्घाटक है।

कफ जन्य विकारों को नष्ट करने में सहायक होता है। इसके द्वारा वायु का लय सहज ही हो जाता है। अर्द्धांग वात, ग्रधृसी, पक्षाघात आदि में भी इससे लाभ उठा सकते हैं। अपस्मार (मृगी) और योषापस्मार (हिस्टिरिया) में भी हितकर है।

शारीरिक कान्ति के वर्द्धन में भी अंजीर का योगदान रहता है। मुख पर उत्पन्न झाँई-मुँहासे आदि इसके प्रभाव से दूर हो सकते हैं। अंजीर शोथ में भी लाभदायक है।

आप अंजीर के वृक्ष या फल के त्राटक के अपने शारीरिक स्वास्थ्य को ठीक कर सकते हैं। शरीर स्वस्थ रहता है तो मन भी स्वस्थ रहता है। आप उन सभी गुणों का ग्रहण कर सकते हैं जो उसमें हैं।

अनार का त्राटक–

अनार एक प्रसिद्ध वृक्ष है। इसका फल भी सुस्वादु और रोग नाशक होता है यह उदर को मृदु करने वाला, रस को परिपक्व करने वाला और मूत्र प्रवर्तक माना जाता है। यदि घबराहट, अधिक प्यास या हृदय में दुर्बलता हो तो अनार के प्रभाव से वह दूर हो जाती है।

खून की कमी में भी अनार अधिक हितकर होता है।

यदि पेट कड़ा हो, अफरा जैसे लक्षण हों, पेट में दर्द, अपच, खट्टी डकार आदि हों तो अनार से लाभ हो सकता है। जिगर में दुर्बलता हो तो भी यह हितकर है। शरीर को मल-रहित तथा स्वच्छ करने में उपयोगी है। यदि पतले दस्त हों तो इसके प्रभाव से मल बँध जाता है।

यदि अनार खट्टा हो तो वक्षस्थल के प्रदाह को दूर करता है। यकृत् की उष्णता भी इसके प्रभाव से दूर हो जाती है। पाण्डु, वमन, रूखी खुजली तथा रक्त प्रकोप प्रभृति विकृतियों में भी यह लाभ कारी है। नशे को दूर करने वाला तथा हृदय की व्याकुलता को भी नष्ट करने वाला है। पैत्तिक वमन, हिक्का आदि के लिए भी हितकर है।

अनार के वृक्ष पर त्राटक-साधना सम्पन्न करने पर आप उक्त गुणों को अपने में समाविष्ट कर सकते हैं और अपने दृष्टिमात्र से दूसरों को इन गुणों से उपकृत कर सकते हैं।

अमरूद का त्राटक—

अमरूद को जामफल कहते हैं। यह भी स्वादिष्ट तथा पाचक होता है। इसकी प्रतिक्रिया पाचन तन्त्र पर भी बहुत अनुकूल होती है। यह शरीर तथा हृदय को बल प्रदान करने वाला और चित्त को प्रसन्न करने वाला हैं। इसके द्वारा साधक की पाचन शक्ति भी तीव्र होती तथा व्याकुलता दूर होती है।

मुख से खून गिरने की स्थिति में अमरूद अधिक उपयोगी होता है। हृदय की घबराहट हटाने में यह सहायक है। मस्तिष्क को तर रखने में इसकी बड़ी सहायता रहती है। अतिसार, अपच, कब्ज आदि सभी उदर सम्बन्धी विकारों में इसका महत्व है। कुछ अनुभवियों का मत है कि ज्वर की अवस्था में भी यह उपयोगी है। विशेष कर कब्ज के कारण उत्पन्न ज्वर में। आप अमरूद पर त्राटक का अभ्यास करने के इन

सभी गुणों को अपने में ही जाग्रत् कर सकते हैं। आपकी यह साधना 'पर जनहिताय' सिद्ध हो सकती है।

आँवले का त्राटक–

आँवला चिकित्सा शास्त्रियों ने रसायन माना है। यह मनुष्यों को स्वस्थ रखने के लिये वरदान स्वरूप तथा दीर्घायु प्रदान करने वाला है। इसका सीधा प्रभाव रस, रक्त पर पड़ता है, इसलिए हृदय और फेंफड़ों के लिये मजबूत बनाने वाला है। इसके प्रयोग से मस्तिष्क सम्बन्धी समस्त अवयव बलवान और सुदृढ़ होते हैं। जिनके स्नायु दुर्बल हों उनके लिये भी आँवले का प्रयोग हितकर माना जाता है।

इसके मुख्य गुणों में ओज का सञ्चालन, शुक्राशय की दुर्बलता का निवारण, नपुंसत्व-नाश आदि उल्लेखनीय हैं। यह बद्धक है तथा पाकाशय, आमाशय और आँतों में ऊपरी मल को गिरने से रोकता है। इसका प्रयोग दोषों को अशुद्ध नहीं होने देता अथवा अशुद्ध हुए दोषों को शुद्ध करने में सहायक होता है।

नेत्रों के लिये भी बहुत हितकर है। अनेक विकार दूर होते और दृष्टि में तीव्रता आती है। आँवले के वृक्ष या फल पर त्राटक करने वाले साधक को दूर दृष्टि की प्राप्ति सरलता से होती है। आँखों में किसी भी कारण से उत्पन्न प्रदाह, दर्द आदि में इसकी साधना उपयोगी है। सिर में गञ्जापन, केश श्वेतता आदि में भी यह लाभकारी है।

आम का त्राटक–

आम में स्नायु विकार नष्ट करने की शक्ति है। उससे प्राणों को शक्ति प्राप्त होती है तथा ओज की वृद्धि होती है। यह वृक्य, वस्ति, पाकाशय और आँतों को भी शक्ति देने वाला है। इसमें ग्रीष्म ऋतु में चलने वाली लूओं से बचाव का भी गुण है।

यह शुक्र को सान्द्र करने वाला तथा अतीसार का बद्धक है। इसकी

क्रिया शुक्राशय पर होने के कारण स्तम्भन का गुण भी है। इसके प्रयोग से पतले दस्त भी रुक जाते हैं।

आम के वृक्ष का त्राटक उक्त सभी गुणो का समावेश करता है। इसके छोटे फलों को भी त्राटक के लिये चुना जा सकता है। त्राटक साधना के लिये इसके कच्चे फल अधिक हितकर रह सकते हैं। यदि पत्ती पर करें तो भी उपयुक्त है किन्तु पत्ती साफ लेनी चाहिये।

आक का त्राटक–

आक को संस्कृत में अलर्क कहते हैं। यह एक छोटा वृक्ष है जो प्राय: वहुत स्थानों पर पाया जाता है। इसे तोड़ने पर दूध निकलता है, किन्तु वह दूध पीने के योग्य नहीं होता। उसे त्वचा पर लगाने से भी हानी होती है। इसमें लोटे-छोटे फूल भी आते हैं।

इसका मुख्य गुण कृमियों को नष्ट करना है। इसके प्रयोग से पेट के कीड़े मर जाते हैं। इसके पत्तों और पुष्पों में आहार को पचाने का गुण भी है। पाकाशय में उत्पन्न विकारों में भी यह अत्यन्त उपयोगी है। इसके पत्ते सर्दी से उत्पन्न हुई सूजन को भी दूर करने में लासप्रद होते हैं।

आप इसके वृक्ष पर त्रापक करके इसमें निहित सभी गुणों को ग्रहण कर सकते हैं। अथवा पत्ते आदि पर पृथक् रूप से भी त्राटक का अभ्यास किया जा सकता है।

आलूबुखारे का त्राटक–

यह रक्त विकार का शमन करने वाला तथा पित्त नाशक है। पित्त जन्य या रक्त जन्य ज्वर को भी दूर करने में समर्थं है। इसके द्वारा मलों में परिपक्वता आजाती है और प्यास भी दूर होती है। मल का शोधन करने वाला ओर खाज खुजली को मिटाते वाला हैं। इसके प्रयोग से प्रकृति कोमल होजातीं है।

इसके वृक्ष पर त्राटक करना अधिक हितकर है। फल भी प्रसिद्ध है और उन्हें गुणों से युक्त होता है, किन्तु साधना में फल की अपेक्षा वृक्ष या पत्ती का प्रयोग अधिक उचित है।

इमली का त्राटक–

इमली भी एक प्रसिद्ध वृक्ष है। इस पर फल भी लगते हैं, जिन्हें कटारा कहते हैं। आप त्राटक के लिये वृक्ष, उसकी पत्तियाँ तथा फल फूल भी चुन सकते हैं।

इमली रक्त प्रकोप में हितकर है। इसमें हृदय की व्याकुलता भी दूर होती है। यह आमाशय को बल प्रदान करती और प्रकृति को मृदु बनाती है। यदि सिर में चक्कर आते हों तो इसके प्रभाव से दूर हो सकते हैं। शरीर की पीड़ा का शमन कनना भी इमली का एक विशेष गुण है। कब्ज दूर करने में भी उपयोगी है।

इमली पर त्राटक करने से भी उक्त लाभ उठाये जा सकते हैं। यदि महामारी (प्लेग) फैल रही हो तो इमली का त्राटक करने वाला साधक उसके प्रभाव से बचा रह सकता है।

करोंदा का त्राटक--

करोंदा का क्षुप अनेक प्रान्तों में पाया जाता है। इस पर फल भी लगते हैं, जिनका स्वाद खट्टा-सा होता है। लोग इसका शाक और अचार भी बनाते हैं।

इससे बवासीर, जलोदर, गुर्दे के दर्द आदि का शमन होता है। पेट के कीड़े भी दूर होते हैं। शरीर में कहीं सूजन हो तो भी करोंदा हित-कर रहता है! यदि मूत्र साफ न उतरे तो भी करोंदा का प्रयोग उचित है। यदि कब्ज हो तो वह भी दूर हो जाता है। वस्तुत करोंदा रोध का उद्घाटक और कान्ति प्रद माना जाता है। आप इसके त्राटकसे उपर्युक्त त्राटक से उपर्युक्त सभी लाभों के स्वामी हो सकते हैं।

कचनाल का त्राटक—

इसे काँचनार भी कहते हैं। इसमें पत्र, पुष्प, फली आदि भी लगते हैं। यह आन्तरिक व्रण और गुदा के व्रण में लाभदायक है। रक्त-विकार दूर करने में यह अधिक हितकर है। यदि मुख के द्वारा रुधिर स्राव हो तो इससे लाभ होता है। स्त्रियों के अति आर्त्तव में भी यह उपयोगी है।

शुक्राशय पर भी इसकी अनुकूल प्रतिक्रिया होती है। इसलिये शुक्र-मेह को भी इससे लाभ हो सकता है। यदि दस्त हो रहे हैं तो काँचनार उसमें लाभ दायक होगा। पाकाशय और आंतों के लिये इससे शक्ति प्राप्त होती है इसके त्राटक से आप में काँचनार के समस्त गुण सहज ही आ सकते हैं।

कदम्ब का त्राटक—

कदम्ब एक प्रसिद्ध वृक्ष है। इसके पत्ते अखरोट जैसे होते हैं। इस पर फल और फूल भी आते हैं। यह वृक्ष प्रकृति में ठण्डा है इससे कृमियों का नाश होता है। महामारी के दिनों में इसके त्राटक द्वारा बहुत कुछ लाभ उठाया जा सकता है।

इसके द्वारा कफ तथा पित्त के विकारों का शमन होता है। रक्त के अनावश्यक रूप से जमाव या गाढ़ेपन को यह शीघ्र ही कम करता है। महिलाओं के वक्षस्थल के पोषण में भी यह सहायक है।

कनेर का त्राटक—

कनेर एक प्रसिद्ध वृक्ष है। इस पर पीला, लाल या सफेद पुष्प आता है। यह कठोर शोथ तक को भी दूर करने में समर्थ है। शरीर के अधोभाग में पाँवों की अँगुलियाँ पर्यन्त होने वाले दर्द में भी यह गुण करता है। यदि पीठ में दर्द हो, चाहे कितना ही पुराना हो, इसके प्रयोग से मिट जाता है।

कनेर से खुजली प्रभृति चर्मरोग दूर होते हैं। व्रण या ज़खम हो तो

उसके लिये भी हितकर है। शरीर की मलीनता दूर करके कान्ति की वृद्धि करता है।

ध्यान रहे कि कनेर का सेवन (खाने के रूप में) वर्जित है। किन्तु आप कनेर के वृक्ष पर त्राटक की साधना के द्वारा उसमें निहित गुणों को प्राप्त कर सकते हैं।

केला का त्राटक–

इसे कदली भी कहते हैं। इसके पत्ते ४-५ फीट तक लम्बे होते हैं। इसका फल भीतर से सफेद, स्वादिष्ट होता है। इसमें हृद्रोग के शमन का विशेष गुण है। वक्षस्थल को यह कोमल बनाता है। गुर्दे की दुर्बलता को ठीक करता तथा सूखी खाँसी और गले की खरखराहट को हितकर हैं।

शरीर को पुष्ट करने, उदर कृमि मिटाने तथा प्रकृति को स्वच्छ करने में भी उपयोगी है। यह अति भोज्य और दीर्घपाकी होते हुए भी प्रसन्नताप्रद है। इसकी जड़ पेट की कीड़ों को नष्ट करने में अनुकूल मानी गई है।

गुलाब का त्राटक–

गुलाब का वृक्ष काँटेदार होता है। उस पर गुलाबी रंग मधुर सुगन्ध वाले फूल आते हैं। आप इसके वृक्ष, पत्तियों तथा फूलों आदि पर भी त्राटक कर सकते हैं। यह प्राणों को और स्नायुओं को अत्यन्त बल देने वाला होता है। इससे हृदय की व्याकुलता दूर हो जाती है तथा दर्द गुर्दे में भी लाभ होता है। सिर दर्द ज्वर तथा मूर्च्छा भी इससे दूर हो सकती है।

एक त्राटक साधक ने बताया कि गुलाब में वायु के शमन का भी गुण है। यह शोथ और वात को लाभ कर देता तथा आवश्यक मूल के शोधनार्थ उसका रेचन भी कर देता है। आमाशय की स्निग्धता भी इससे नष्ट हो जाती है।

गूलर का त्राटक—

गूलर का वृक्ष होता है और उस पर फल भी लगते हैं। यह बवासीर, श्वांस-खाँसी, दन्त-पीड़ा, स्तन-शोध आदि के लिये बहुत लाभदायक समझा जाता है। कानों में दर्द हो तो वह भी इससे दूर हो जाता है। इसकी क्रिया उदर पर पाचन तन्त्र पर भी होती है। मधुमेह आदि में भी यह लाभदायक है।

आप इसके वृक्ष, पत्ते, फल-फूल आदि पर भी त्राटक कर सकते हैं। इस पर त्राटक करने से नेत्रों में थकान भी नहीं हो पाती है।

जामुन का त्राटक—

जामुन का वृक्ष बड़ा होता है, उस पर गहरे बैंगनी रंग का फल लगता है। उष्ण प्रकृति वालों के लिये यह अधिक हितकर है। इससे आमाशय और यकृत को बल प्राप्त होता है। पित्तजन्य अतिसार को बाँधने वाला है और अतिसार के कारण होने वाली घबराहट को दूर करने वाला है।

जामुन रक्त-विकार के लिये हितकर है। इससे भूख और ओज की भी वृद्धि होती है। प्लीहा के शोथ तथा मधुमेह में भी इसका प्रयोग लाभकर है। पित्त-प्रकोप में भी इससे लाभ उठाया जा सकता है। जामन के त्राटक द्वारा आप इनमें से कोई भी लाभ उठाने में समर्थ हो सकते हैं।

तुलसी का त्राटक—

तुलसी का छोटा पौधा होता है। इसकी पत्तियाँ हरी होती है तथा मंजरी भी आती है। इसमें तीखी गन्ध होती है तथा गुणों की दृष्टि से तो बहुत उपयोगी है ही, धार्मिक दृष्टि से भी इसका बड़ा महत्व माना जाता है। भगवद्भक्त भगवान् को लगाये जाने वाले भोग में तुलसीदल अवश्य डालते हैं। क्योंकि बिना तुलसीदल के प्रसाद ही कैसा ?

गुणों की दृष्टि से यह वायु को दूर करने में बहुत उपयोगी है। इसके आमाशय की दुर्बलता दूर हो जाती है। हृदय की व्याकुलता दूर करने में यह बहुत प्रभावशाली है। मलेरिया ज्वर, फूल आदि पर नियंत्रण रखने और दोषों को स्वच्छ करने में भी तुलसी बहुत उपयोगी रहती है।

तुलसी के द्वारा अनेक प्रकार के रक्त विकार दूर हो सकते हैं। यह उदर पर भी सीधा प्रभाव डालती और अनेक विकार दूर करती है। तुलसी मस्तिष्क के रोध के उद्घाटन में भी समर्थ है। श्वास, खाँसी, जुकाम, ज्वर, आदि में भी यह उपयोगी है। वक्षस्थल की खरखराहट के लिये भी हितकर है।

तुलसी जहाँ रहती है वहाँ जूँ, खटमल, आदि विषैले जीव नष्ट हो जाते है। इस वृक्ष के द्वारा महामारी (प्लेग) पर भी नियंत्रण होता है। आप इस पर त्राटक के अभ्यास द्वारा उक्त सभी लाभों को सूक्ष्म रूप प्राप्त कर सकते हैं।

यदि आप वन तुलसी पर त्राटक करें तो कफजन्य विकारों या सर्दी के कारण उत्पन्न होने वाले रोगों से बचे रह सकते हैं। शोथ को लय करने में भी इस साधन। का उपयोग है।

धतूरे का त्राटक–

यह एक बहुत छोटे काँटे वाला झाड़ है,। जो कि प्राय-बैंगन के समान होता है। इसके फल पर भी छोटे-छोटे काँटे रहते हैं। यह शिवजी को अधिक प्रिय होने के कारण उसकी पूजा में भी प्रयुक्त होता है। इसे धतूर भी कहते हैं।

यह सभी अवयवों को हितकर है। पित्तजन्य रक्त की तीक्ष्णता को दूर करता है तथा शिरोरोग और सिर-दर्द में लाभ करता है। शोथ के कारण रूप अन्तर्मल को पकाता और स्निग्धता को सुखाता है। शुक्र

स्तम्भन की शक्ति भी इससे प्राप्त होती है। यह अत्यन्त मादक और नींद लाने वाला भी है।

चिकित्सकों की दृष्टि में इसका असावधानी से सेवन घातक सिद्ध हो सकता है। किन्तु त्राटक के द्वारा आप इसमें निहित गुणों को विना किसी खतरे के सहज रूप में ग्रहण कर सकते हैं।

नीबू का त्राटक—

नीबू एक प्रसिद्ध वृक्ष है, जिसके फल का उपयोग औषधि आदि के रूप में भी होता है। संस्कृत में इसे निम्बू भी कहते हैं। इसका फल रसदार और खट्टे स्वाद का होता है। इससे जी मिचलाना, वमन, अजीर्ण आदि में लाभ होता है। विशेष रूप से पित्तजन्य वमन के लिये अधिक हितकर है। यह यकृत् को बल प्रदान करने वाला और प्यास तथा दाह को भी नष्ट करने वाला है।

पित्त ज्वर में भी नीबू हितकर है। विशूचिका या हैजा में भी लाभ पहुंचाता है। जुकाम में भी इसका व्यवहार कर सकते हैं। विषम ज्वर या मलेरिया में उपयोगी है। महामारी की वायु के विकार तथा कीड़े मकोड़ों के विष को भी दूर करता है।

यह तो रहे खट्टे नीबू के गुण, अब मीठे नीबू के गुणों पर भी विचार करते हैं—यह हृदय की दुर्बलता दूर करने वाला तथा गर्मी की प्यास को शान्त करने वाला है। इसके द्वारा आमाशय को भी शक्ति प्राप्त होती है। हृदय की व्याकुलता, धड़कन आदि के लिये भी मीठा नीबू गुणकारी है।

आप इनमें से जिस प्रकार के नीबू अथवा उसके वृक्ष पर त्राटक-साधना करेंगे, उसमें विद्यमान गुणों को ग्रहण करने में पूर्ण रूपेण समर्थ हो सकेंगे।

नीम का त्राटक—

नीम को निम्ब कहते हैं। इसकी पत्तियाँ कुछ लम्बे, नोंकदार और

और आरी के दाँते जैसे किनारे वाली होती हैं। इस वृक्ष पर खिन्नी जैसा एक फल आता है, जिसे निबौरी कहते हैं। निबौरी में तेल होता है। यह वृक्ष प्राय: सर्वत्र देखा जाता है। इसका स्वाद कड़वा होता है। कुछ वृक्ष मीठे स्वाद वाले भी मिलते हैं, किन्तु बहुत ही कम नहीं के बराबर। इसमें गुण बहुत है, वरन समस्त रोगों को नष्ट करने में समर्थ है।

मुख्यत: नीम रक्त शोधक है। यह वायु का भी शमन करता है। अन्तर्मल और बहिर्मल को पकाने वाला तथा वायु का लय करने वाला है। शोथ (सूजन) को भी यह दूर करता है। कुष्ट, श्वित्र, खुजली, दाद, छाजन आदि भी इससे नष्ट होते हैं। उपदंश आदि में भी उपयोगी है। फोड़ा-फुन्सी, मुहासे आदि पर भी हितकर है। आँखों के लिये भी प्रत्येक दृष्टि से लाभदायक है। आप इसके त्राटक के अभ्यास द्वारा ही इसके सभी गुणों को ग्रहण कर अपने को उनसे सम्पन्न बना सकते हैं और दृष्टिमात्र से ही दूसरों को भी रोगमुक्त कर सकते हैं।

पपीता का त्राटक–

पपीता का वृक्ष भी प्रसिद्ध है, उसके पत्ते एरंड पत्र के समान होते हैं। इस पर बड़ा फल आता है। कच्चे फल की शाक-तरकारी भी बनाई जाती है। किन्तु फल रखने के काम आता है, जो कि उपदंश जैसे रोगों को दूर करने में समर्थ है।

यकृत, तिल्ली आदि के विकारों को यह दूर करता है। बवासीर के लिये हितकर है। आमाशय के प्रदाह को शान्त करता है। हृदय के लिये शक्ति और शान्ति देता है। मुख से रुधिर गिरने की स्थिति में भी इसका प्रयोग लाभदायक हो सकता है।

उदर पर यह अपना सीधा प्रभाव व्यक्त करता है और पाचन तन्त्र को भी प्रभावित करता है। इसलिये सब प्रकार के उदर विकारों को

दूर करने में सहायक होता है। मलावरोध की स्थिति में भी यह लाभकारी हो सकता है। आप इसके त्राटक द्वारा ही इसके सभी गुणों को प्राप्त कर सकते हैं।

परवल का त्राटक–

इसे संस्कृत में पटोल कहते हैं। इसकी काँटेदार वेल चलती है तथा वेल में ही फल आते है। प्रायः परवल के फल का शाक वना कर भी खाया जाता है।

परवल मनुष्य शरीर के यिये बहुत हितकर है। यह रक्त-विकारों को शीघ्र दूर करने में सहायक होता है। इसके द्वारा हृदय और मष्तिस्क को बल की प्राप्ति होती है। पित्त प्रकोप से होने वाले विकारों में भी परवल की उपयोगीता स्वीकार की जाती है। खाँसी को दूर करने में भी यह बहुत सहायक है।

फोड़ा-फुन्सी आदि त्वचा के रोगों में भी परवल उपयोगी है। उदर कृमियों को नष्ट करने वाला तथा ओजवर्द्धक और क्षुधावर्द्धक है। आप इसकी त्राटक-साधना के फल स्वरूप अपना और दूसरों का भी पर्याप्त हित-साधन कर सकते है।

पीपल का त्राटक–

पीपल को पिप्पल भी कहते हैं। यह एक वहुत प्रसिद्ध वृक्ष है, जिसकी पूजा भी की जाती है। यदि आप इस वृक्ष पर त्राटक का अभ्यास करें तो इसमें निहित सभी गुणों को आकर्षित कर अपने में समाविष्ट कर सकते हैं।

पीपल में अनेक गुण हैं—जी मिचलाना, अपच, वमन, वात-रोग आदि को दूर करता है। इसका प्रभाव शुक्र ग्रन्थियों पर भी बहुत अनुकूल पड़ता है, इस कारण शुक्र को पुष्ट करने वाला तथा स्तम्नकारी हो सकता है। त्वचा के अनेक रोगों के लिये यह हितकर समझा जाता है।

नासूर तक के लिये यह उपयोगी माना गया है। व्रणों को पूरने वाला और सूजन को लय करने वाला है।

पीलू का त्राटक-

यह भी एक प्रसिद्ध वृक्ष है। इस पर छोटे-छोटे रंगीन दाने जैसे फल आते हैं। वस्तुतः यह वृक्ष शरीरस्थ विकारों को शुद्ध और स्वच्छ करने वाला है। त्वचा-रोगों में उपयोगी होने से फोड़ा-फुन्सी, दाद, छाजन, खुजली, वरन्, कुष्ट तक को दूर करता है। जलोदार को दूर करने में भी सहायक है।

पिलू पित्त और कफ का शोधक है। रोमकूपों का उद्घाटक होने के कारण आन्तरिक मल को सहज ही निकाल देता है। यदि पतले दस्त हों तो पीलू दस्त को बाँधने में सहायक होता है। स्त्रियों के गर्भाशय-शोथ में भी हितकर है। यदि आप पीलू-वृक्ष पर त्राटक का अभ्यास करें तो उक्त रोगों से छुटकारा पा सकते है और दूसरों का भी उपकार कर सकते हैं।

पोदीना का त्राटक—

पोदीना को संस्कृत में रोचनी कहते है। पिपरमेंट प्रायः इसी से निकाला जाता है। यह तीक्ष्ण गन्ध वाला होता है। लोग इसकी चटनी या रायता वनाकर खाते हैं।

वात रोग, विशेषकर कुवड़ेपन में यह अधिक लाभदायक हो सकता है। आन्तरिक मल का शोधक होने के कारण उचित मात्रा में मुत्र और प्रस्वेद का निष्कासन करता है। वक्षस्थल और गुर्दों के मल का शोधन करने वाला हिचकी प्रभृति रोगों में भी पोदीना बहुत हितकर है।

यह दुर्बलता और मूर्च्छा दूर कर देता है। गर्भपात होने से रोकने में समर्थ है। वायु को लय करने वाला होने से उदर के लिये भी उपयोगी है। उदरशूल, कब्ज आदि का नाशक है। आप पोदीना के त्राटक

द्वारा उक्त लाभों के अतिरिक्त अन्यान्य प्रकार के लाभ भी सहज ही प्राप्त कर सकते हैं।

फालसे का त्राटक–

फालसे का वृक्ष नामी होता है। इस पर काबुली चने के आकार के फल लगते हैं, जिनका रंग बैंगनी होता है। यह फल खट्टे या खट-मिट्टे होते हैं।

फालसा हृदय के लिये शक्ति देने वाला होता है। आमाशय को और यकृत् को भी बल प्रदान करता है। शीतल गुण वाला होने के कारण प्यास और दाह को दूर करता है ज्वर की गर्मी के शमन में भी उपयोगी है। पित्तजन्य अतिसार, वमन, हिचकी आदि को नष्ट करने में भी सहायक है।

हृदय की व्याकुलता और धड़कनों की वृद्धि को संयमित करता है। प्रमेह आदि में भी उपयोगी है। मूल की जलन के लिये भी हितकर है। वक्षस्थल के प्रदाह को भी दूर करता है। इसके त्राटक द्वारा साधक उक्त सभी गुणों को अपने में समाविष्ट कर सकता हैं।

वट का त्राटक–

वट को बरगद या बड़ भी कहते हैं। यह वृक्ष पीपल से भी अधिक महिमा वाला माना जाता है। इसकी डालियों से जटा निकल कर नीचे लटकती है और पृथिवी तक में घुस जाती है। यह वृक्ष लौकिक और आध्यात्मिक दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जाता है। शरीर की विभिन्न धातुओं पर भी इसका प्रभाव पड़ता है।

इसमें अनेक गुण हैं—वात नाशक तो है ही, पित्त जन्य विकारों को भी दूर करने वाला है। त्वचा के रोगों में हितकर, फोड़ा-फुन्सी, खाज आदि को नष्ट करता है। उदर पर भी इसकी अनुकूल प्रतिक्रिया होती है। बवासीर में भी इससे लाभ होता है।

शुक्राशय पर सीधा प्रभाव पड़ने के कारण यह शुक्रमेह, मधुमेह, स्वप्नमेह, आदि के लिये भी लाभकारी है। शुक्र स्तम्न में भी यह प्रभावोत्पादक है। पतले दस्तों को बाँधने वाला तथा उदरस्थ वायु का शमन करने वाला है।

शीत प्रकृति वालों के लिये इसका त्राटक अधिक उपयोगी हो सकता है। शोथ (सूजन) में भी इससे लाभ उठायां जा सकता है। शरीर के उत्तमांग को इससे अधिक शक्ति प्राप्त की जा सकती है।

बहेड़े का त्राटक–

बहेड़ा एक प्रसिद्ध फल है। यह आयुर्वेदोक्त त्रिफला में सम्मिलित है। इसके द्वारा आमाशय को बल प्राप्त होता है। शरीर के आन्तरिक अवयवों के शोधन में यह सहायक रहता है। पाचन क्रिया पर इसका अनुकूल प्रभाव पड़ता है, इसलिये यह भूख खोलने वाला भी है।

अतिसार में यह मल को बाँधने वाला सिद्ध होता है। यदि आँत में वात दोष के कारण दूसित मल भरा हो तो यह उसे अतिसार के द्वारा निकालने का भी कार्य करता है। पित्तजन्य मल का भी शोधन करने में पूर्णत: सक्षम है।

जीर्ण अतिसार में भी यह अधिक हितकर रहता है। नेत्रों के लिये हितकर है। यदि दृष्टिमांद्य रोग हो तो उसे दूर करने में यह सहायक होता है। बबासीर में अनुकूल तथा शिर की पीड़ा का शमन करने वाला है। मस्तिष्क दौर्बल्य की स्थिति में भी बहेड़े पर किया जाने वाला त्राटक लाभदायक सिद्ध होता है।

बाँस का त्राटक–

बाँस को वंश भी कहते हैं। आंग्ल भाषा में यह बम्बूकेन कहलाता है। यह एक वृक्ष है जो जंगल में होता है। सूखने पर यही तम्बू-डेरे आदि में लगाने या टोकरी आदि बनाने का बाँस बन जाता है। इसमें भैषज्य गुण तो हैं ही, अचार भी डालते हैं इसका।

त्वचा रोग में बाँस अधिक हितकर है। दाद, खाज आदि में उपयोगी है। यह खाँसी आदि में भी लाभदायक है। इसमें रक्त स्राव का शोधन करने और उसे रोकने की भी शक्ति है। आप इसके त्राटक द्वारा इसमें विद्यमान गुणों का अपेक्षित लाभ उठा सकते हैं।

बेर का त्राटक–

वेर का वृक्ष काँटेदार होता है। उस पर छोटे फल लगते हैं। वस्तुतः वेर शीघ्रपाकी और अनावश्यक गर्मी को दूर करने वाला है। इसके द्वारा शरीर में शुद्ध रस की उत्पत्ति होती है। इसमें पित्तजन्य प्यास को नष्ट करने का भी गुण है।

वेर यकृत् के रोध का उद्घाटन करने वाला होता है। इससे रक्त-स्राव भी रुक जाता है। आँतों के घाव के लिये भी हितकर है। इससे पित्तजन्य शोध में भी लाभ होता है। इसके प्रभाव से मस्तिष्क पर परमाणु नहीं चढ़ पाते।

बेल का त्राटक–

यह एक पवित्र वृक्ष माना जाता है। इसके पत्ते धार्मिक दृष्टि से भी बहुत महिमायुक्त माने जाते हैं। शिवभक्तों की मान्यता है कि भगवान् शंकर वेल पत्र से जितने प्रसन्न होते हैं, उतने अन्य किसी वस्तु से नहीं होते। इस वृक्ष पर एक बड़ा फल भी लगता है, जो कि स्वाद में मीठा होता है।

वेल हृदय, आमाशय और जिगर के लिये बल देने वाला होता है। यदि कब्ज हो तो यह उसे दूर कर देता है, किन्तु आतों पर इसकी अधिक अनुकूल प्रतिक्रिया होने के कारण यह पुराने अतिसार तक को रोकने में समर्थ है। आम दस्त एवं भीतरी स्निग्धता को भी दूर कर देता है।

भाँगरे का त्राटक–

भाँगरा एक प्रसिद्ध रूखड़ी है। संस्कृत में इसे भृङ्गराज कहते हैं

इसमें केश श्वेतता दूर करने और केशों को बढ़ाने की शक्ति है। इसीलिये इसका प्रयोग केश तैलों के नुस्खों में भी होता है।

भाँगरा रक्त शोधक होने के कारण त्वचा के विकारों को दूर करने में समर्थ है। दाद, खाज, कुष्ट प्रभृति रोगों तक में हितकर माना जाता है। तिल्ली की कठोरता को दूर करने में उपयोगी है। कफजन्य स्निग्धता भी इसके द्वारा नष्ट होती है। भाँगरा दृष्टि को और ओज को भी बढ़ाने वाला है। यदि आप इस रूखड़ी पर त्राटक करें तो उक्त लाभ सूक्ष्म रूप से प्राप्त कर सकते हैं।

मकोय का त्राटक—

मकोय को काकमाची भी कहते हैं। यह एक प्रसिद्ध बूटी है, जिस पर कुछ कड़वे और मीठे फल आते हैं। इनका आकार मटर के समान होता है। इसके पत्तों में भी भैषज्य गुण हैं।

मकोय शरीर की सूजन को दूर करती हैं। सूजन बाह्य हो अथवा आन्तरिक। इसके द्वारा नातादि दोषों का शोधन होता तथा गर्मी की प्यास मिट जाती है। कच्चा मल भी इससे परिपक्व हो जाता है और निरर्थक मल बाहर निकल जाता है।

इसका प्रयोग वायु का शमन करता है, इसलिए वात रोगों को दूर करने में भी सहायक है। आमाशय के प्रदाह को शमन करने में अधिक हितकर है। ज्वर, कण्ठ पीड़ा, मूत्रावरोध, तालु शोथ, गुद शोथ आदि में भी उपयोगी है। इसके त्राटक से इन सब विकारों से छुटकारा मिल सकता है। आप मकोय के वृक्ष, पत्र अत्र अथवा फल पर भी त्राटक कर सकते हैं।

महँदी का त्राटक—

महँदी का झाड़ होता है, जो तीन-चार मीटर तक ऊँचा हो सकता है। इसमें पत्ते भी होते हैं, फल भी। किन्तु मेंहदी के पत्ते ही महि-

लाओं के लिये श्रृंगार-साधन बन जाते है। वे पिसे हुए मँहदी के पत्तों को पानी के साथ घोल हाथ-पाँव में लगाती है, जो कि सूखने पर झड़ जाते हैं और हाथ-पाँव पर अपना रंग छोड़ जाते हैं। इसी को महँदी रचना कहते हैं।

महँदी रक्तशोधक है, इसलिए त्वचा के सभी रोगों से लाभकर सिद्ध होती है। उससे दाद, खाज, उपदंश, कुष्ट आदि का निवारण होता है। यह यकृत् और तिल्ली को मजबूत बनाने में सहायक है। गर्भाशय, वस्ति और गर्भाशय को शक्ति प्राप्त होती है।

वृक्क और वस्ति की पथरी को, पीड़िया को, रक्ताल्पता को महँदी से लाभ हो सकता है। शोथ, छालों में प्रदाह तथा मूत्रकृच्छ सुजाक आदि में भी महँदी उपयोगी सिद्ध हो सकती है।

मौलश्री का त्राटक–

मौलश्री (मौलसिरी या मोरछली) का वृक्ष साधन होता है। इस पर श्वेत रंग का सुगन्धि, छोटा फूल आता है। इस पर फल भी लगते हैं जिनका आकार खिन्नी के समान होता है।

मौलश्री में वद्धक गुण है। यह अतिसार का वद्धक और शुक्रस्राव को रोकने वाला होता है, इसलिए शीघ्र पतन में हितकर है। सिर-दर्द आदि में हितकर तथा मस्तिष्क को वल प्रद है। यह आमाशय और हृदय को भी शक्ति देने वाला है।

इसके प्रयोग से वायु का शमन होता है। दाँतों पर भी इसका अनुकूल प्रभाव पड़ता है। आप इसके त्राटक से इसमें निहित लाभों के भागी हो सकते है।

रुद्राक्ष का त्राटक–

रुद्राक्ष की बड़ी महिमा है। यह एक वृक्ष है, जिस पर आने वाले फलों का भौतिक और आध्यात्मिक दोनों प्रकार का माहात्म्य है। रुद्राक्ष

की माला भी बनाई जाती है और पूजन भी किया जाता है। इसमें औषधि गुण भी हैं।

रुद्राक्ष ओज-बर्द्धक तथा कृमि नाशक है। शरीर के अवयवों को इससे बल और पुष्टि की प्राप्ति होती है। यह वात, पित्त, कफ नामक तीनों दोष के विकारों को हरण करने में समर्थ है। इसका उपयोग खाँसी, सर्दी आदि में भी किया जा सकता है। महिलाओं के प्रसूत रोग में हितकर और बालकों के रोगों में भी रुद्राक्ष लाभदायक हो सकता है। इसकी त्राटक साधना आपको इस योग्य बना सकती है कि स्वयं को और दूसरों को भी लाभ पहुँचा सकें। बाल रोगों को दृष्टि मात्र से ठीक करने की क्षमता प्राप्त कर सकते हैं।

रुद्रदन्ती का त्राटक–

यह एक बूटी है। इसके पत्ते चने के पत्ते जैसे होते हैं। यह बूटी शरीर को शक्ति देने वाली तथा पाचन शक्ति बढ़ाने वाली है। इसके शुक्र और ओज का वर्धन होता है। इसका प्रयोग क्षुधावर्द्धक भी है। आप इसकी त्राटक साधना के द्वारा अपनी पाचन शक्ति ठीक कर सकते और शरीर को सबल बना सकते हैं।

रोहिणी का त्राटक–

यह एक प्रसिद्ध औषधि एवं बूटी है, जो कि प्रायः उत्तराखण्ड में होती है। यह श्वास, खांसी तथा ज्वर को नष्ट करने में उपयोगी है। हृदय की व्याकुलता, दुर्वलता तथा हृदय के अन्यान्य विकारों में यह बूटी हितकर है। इससे कफ तथा पित्त के विकारों में भी लाभ होता है। कण्ठ के रोगों में लाभप्रद तथा आमाशय के कृमियों को नष्ट करने वाली है।

लक्ष्मणा का त्राटक–

यह भी एक प्रसिद्ध बूटी है और उत्तराखण्ड में ही अधिक पाई

जाती है। यह कुछ भूरे से रंग की और तीक्ष्ण गन्ध वाली होती है। यह सन्धि पीड़ा के लिये हितकर है। पित्त दोष का शोधन करने वाली है और मृगी रोग में भी हितकर है। प्राचीन काल में इस बूटी का प्रयोग शरीर को सुन्न करने के लिये भी होता था, जिससे कि कहीं छेदन करना हो तो कष्ट प्रतीत न हो। इस बूटी का त्राटक उक्त गुणों की प्राप्ति में अधिक सहायक हो सकता है।

लजालू का त्राटक–

लजालू को छुई मुई भी कहते हैं। यह नदियों के किनारों पर होती है और दो प्रकार की मानी जाती है। एक प्रकार की बूटी छाया पड़ने से ही कुम्हलाती है।

यह शोथ (सूजन) को लय करने वाली तथा दोषों को स्वच्छ करने वाली है। गर्मी के कारण रुके हुए आर्त्तव को जारी करने में समर्थ है। प्रसव-पीड़ा आदि में भी उपयोगी है। इससे उपदश, श्लीपद, कुष्ट आदि में भी लाभ होता है। नासूर तक को दूर करने में समर्थ है। सब प्रकार के घावों को भरती है। आप इसके त्राटक से उसके सभी गुण अपने में समाविष्ट कर सकते हैं और उसका उपयोग परोपकार में भी कर सकते हैं।

ल्हिसोड़े का त्राटक–

ल्हिसोड़े का वृक्ष होता है, उस पर फल भी लगते हैं, जिनका शाक और आचार भी बनाया जाता है। ल्हिसोड़े में भैषज्य गुण भी हैं, यथा–प्रमेह और बहुमूत्र को दूर करना, शुक्र को सान्द्र करना, श्वास, कास, प्रतिश्याय को दूर करना आदि।

छाती-पसली के दर्द में भी यह हितकर है। इसके सेवन से प्यास का शमन होता है। मूत्र-प्रदाह में भी लाभदायक है। पित्तज या कफज मल का शोधन करने वाला तथा रक्तज मल को भी निकालने वाला है।

उदर के कड़ेपन को भी हितकर है। शोध का भी शमन होता है। इससे प्यास भी दूर होती है।

सरसों का त्राटक–

सरसों को सर्षप भी कहते हैं। यह मूत्र प्रवर्तक है, इसलिये मूत्रावरोध को दूर करती है। ओज के सञ्चालन में यह प्रभाव करने वाली है। खुजली, व्रण आदि में हितकर तथा शोथ को लय करने वाली है। इसके प्रयोग से पेट के कीड़े नष्ट हो जाते हैं। कफ दोष से उत्पन्न विकारों को दूर करनेमें अधिक हितकर है। सुजाक, शुक्र विकार, जाँघ में पीड़ा, वायु-विकार आदि में भी सरसों बहुत उपयोगी है।

सहदेई का त्राटक–

यह भी एक वूटी है, जिसे सिरदेई भी कहते हैं। इसके पत्ते तुलसी दल के समान होते हैं। यह भैषज्य रूप में भी वहुत प्रसिद्ध है। इसकी प्रकृति ठण्डी मानी जाती है।

इसका प्रभाव शरीर के विभिन्न यन्त्रों पर पड़ता है। यह ज्वर नाशक, शुक्र वर्द्धक और वाजीकरण गुण वाली हे। मूत्रकृच्छ्र (सुजाक) आदि में भी उपयोगी है।

सिरस का त्राटक–

यह एक वड़ा वृक्ष है, जिसे संस्कृत में शिरीष कहते हैं। प्रकृति में यह ठण्डा और रूक्ष माना जाता है। रक्त पर इसका अनुकूल प्रभाव पड़ने के कारण त्वचा के सभी रोगों में लाभ होता है। दाद, खाज, छाजन, यहाँ तक कि कुष्ट प्रभृति विकारों के लिये भी हितकर है। वात विकारों में भी इससे लाभ सम्भव है सिर दर्द, आधासीसी आदि में भी उपयुक्त है। इससे उदर कृमि भी नष्ट होते हैं। ओज के लिये भी उपयोगी है।

सूर्यमुखी का त्राटक–

यह एक प्रसिद्ध गुल्म है। इसके पत्ते हरे और पुष्प पीला होता है। शोथ (सूजन) को लय करना इसका एक विशेष गुण है। यह हृदय और मस्तिष्क के अवरोध को भी खोलता है। आमाशय के लिये बलप्रद और हृदय को शक्ति देने वाला है।

इसके द्वारा बवासीर, पाण्डु, जलोदर आदि में लाभ होता है। वायुगोला का शमन करने और पथरी को खण्ड-खण्ड कर निकाल देने में भी यह उपयोगी है। मस्तिष्क के रोध को हटाने और उसका शोधन करने में इसका प्रयोग जिया जा सकता है। यह त्वचा में निखार लाने और मुख को कान्तिमय बनाने में भी हितकर है।

सोया का त्राटक–

यह एक प्रसिद्ध शाक है। इसके पत्ते छोटे, महीन और फूल छत्तादार होता है। प्रकृति में यह गर्म और रूखा माना जाता है। इसकी क्रिया पाचनतन्त्र पर शीघ्र होती है, जिससे खाया-पिया आहार शीघ्र ही पच जाता है। रोध का उद्घाटक होने से शरीर को भी हल्का रखता है। इस कारण उदर विकारों में भी उपयोगी है। अफरा पेट का कड़ापन, गुल्म आदि में भी यह उपयोगी है।

यह आमाशय के गाढ़े तथा लसदार दोषों को निकालने वाला, वृक्क और वस्ति की पथरी को तोड़ने वाला, मरोड़ के लिये नष्ट करने वाला और मल को समपक्व करने वाला है। इसके द्वारा वायु का शमन होता है। यदि शीत का विकार हो—खाँसी, निमोनिया आदि तो भी इससे दूर होजाते हैं।

सोया के बीज भी गुणकारी हैं। यह वस्ति और वृपणों के रोगों में हितकर हैं। वायु को लय करने का इनमें विशेष गुण है। स्त्रियों के आर्त्तव और दूध का प्रवर्तन करने वाले तथा मूत्रावरोध को भी खोलने

वाले हैं। तिल्ली की पीड़ा एवं कफजन्य हिक्का में भी इनसे लाभ उठाया जा सकता है। आप सोया के बीज, पत्ते अथवा फूल पर भी त्राटक साधना कर सकते हैं।

हरड़ का त्राटक—

हरड़ एक फल है। यह मूत्रल तथा मृदु रेचक है। वात, पित्त या कफ के दोष से युक्त मल को अतिसाह के द्वारा निकाल देती है। इन्द्रियों को बलप्रद होने के कारण हृदय की व्याकुलता को मिटाती है। इससे अपस्मार और अर्दित प्रभृति रोगों में भी लाभ होता है। हरड़ त्रिफला का एक मुख्य घटक है।

हरिद्रा का त्राटक—

हरिद्रा को साधारण भाषा में हल्दी कहते हैं। यह साग, दाल आदि में नित्य प्रयोग की वस्तु है। यह यकृत को बलप्रद, जलोदर और पीलिया को दूर करने वाली, दोषों को नष्ट करने वाली, शोथ का शमय करने वाली, चोट एवं घावों को हितकर तथा नेत्रों के लिये भी लाभ-दायक है। आप इसके त्राटक द्वारा सभी गुण ग्रहण कर सकते हैं। हल्दी पर किया जाने वाला त्राटक नेत्र दृष्टि तीव्र करने वाला है। हल्दी ममीरा की प्रतिनिधि है। यदि ममीरा पर त्राटक किया जाय तो आँखों की ज्योति और भी शीघ्र बढ़ेगी।

विशेष जानकारी—

आप उपर्युक्त किसी भी वृक्ष, लता, गुल्म, पत्ते, फल, फूल आदि पर केवल त्राटक साधना के द्वारा ही उनमें निहित गुणों को ग्रहण कर सकते हैं। इससे आप अपना ही नहीं, दूसरों का भी हित साधन कर सकेंगे।

ग्रहों के त्राटक में प्रतिकूल को अनुकूल बनाने की क्षमता है।

ग्रह यद्यपि बहुत-से हैं, किन्तु उनमें नवग्रह प्रमुख हैं। सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनि, राहु और केतु। इनमें से जिन ग्रहों को आप प्रत्यक्ष देखते हैं और जिनके विषय में स्वयं जानते हैं, उनकी त्राटक-साधना भी प्रत्यक्ष रूप से कर सकते हैं। जिनके विषय में हमारी अधिक पहुंच नहीं, उनके प्रतिनिधि रत्नादि पर भी त्राटक-साधना करके उनमें निहित उपलब्धियों को प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं।

प्रायः सभी जानते हैं कि आकाशस्थ ग्रहों का पृथिवी पर बड़ा भारी प्रभाव है। इस कारण सभी प्राणियों पर भी वह प्रभाव रहना स्वाभाविक ही है। ग्रह प्रकोप का अभिप्राय भी यही है कि उनका जो लाभ हमें मिलना चाहिये, वह न मिलकर विपरीत प्रभाव प्राप्त होने लगता है।

ग्रहों के प्रकोप से बचने के लिये आप उन पर त्राटक का अभ्यास करें तो लाभ उठा सकते हैं। सूर्य, चन्द्रमा आदि जो ग्रह प्रत्यक्ष दिखाई देते हैं, आप उनकी त्राटक-साधना सहज ही कर सकते हैं। इसी विषय में यहाँ कुछ प्रकाश डाला जाता है

सूर्य का त्राटक–

सूर्य दिन का स्वामी है। उसे आप प्रातः से सायंकाल तक गतिशील देखते हैं, किन्तु निश्चित है कि आप सूर्य से आँखें नहीं मिला सकते। यदि आप सूर्य की ओर सीधे ही देखने लगे तो नेत्रों को भारी हानि पहुँच सकती है। ऐसा करने वाले बहुत से व्यक्तियों की आँखें मारी जा चुकी हैं, इसलिये इस विषय में बहुत सावधानी से काम लेना चाहिये।

आप जब सूर्य का त्राटक करना चाहें तब दोनों हाथों की अँगुलियों

को परस्पर मिला कर जाल-सा बना लें और उनके छिद्रों से निकल कर गिरने वाली किरण पर दृष्टि टिकावें। अभिप्राय यह है कि अँगुलियों के जाल में से छन कर आने वाली किरणें जो आपकी अँगुली पर पड़ रही हों उनके प्रकाश पर ही दृष्टि स्थिर करें। सीधे सूर्य की ओर बिल्कुल न देखें। इस प्रकार यदि आप त्राटक का अभ्यास करेंगे तो आपकी आँखों की ज्योति के लिये किसी प्रकार का खतरा नही होगा, वरन् उसकी वृद्धि ही होगी।

सूर्य का अन्न से निकटतम सम्बन्ध है, क्योंकि शस्य का परिपाक सूर्य की किरणों द्वारा ही हो पाता है। सूर्य की किरणों में जो सात रंग समाविष्ट है, वे हीं शरीर की सप्त धातुओं का पोषण करते है। सूर्य रश्मि चिकित्सकारों के मतानुसार तो मनुष्य शरीर में भी सातरंग हैं, यदि उनमें से किसी भी रंग की कमी हो जाती है तो उसी से सम्बंधित रोग उत्पन्न हो जाता है। उस रोग के निवारणार्थ आवश्यक होता है सूर्य-किरणों का आकर्षण। जिस रंग की शरीर में कमी हुई हो, उसी रंग की किरण का आकर्षण एक विशेष पद्धति द्वारा किया जाता है, जिसका विस्तार यहाँ संभव नहीं है। क्योंकि वह एक पृथक् पुस्तक का विषय है।

मनुष्य शरीर में पाचन-संस्थान बहुत ही महत्वपूर्ण होता है और उसका केन्द्र उदर में है। इसलिये उदर की खराबी से ही'अधिकांश रोगों की उत्पत्ति होती है। यदि पेट खराब तो शरीर के सभी यन्त्र खराब। पेट की गड़बड़ी का प्रभाव शरीर पर ही नहीं पड़ता,मन पर भी पड़ता है।

सूर्य का विशेष प्रभाव उदर पर ही पड़ता है। ग्रह विशेषज्ञों का मत है कि यदि सूर्य शुभ नवांश में हो तो उदर पर शुभ प्रभाव डालेगा और अशुभ नवांश में होगा तो अशुभ प्रभाव डालेगा। अभिप्राय स्पष्ट है कि इस प्रकार से अशुभ हुआ सूर्य उदर-सम्बन्धी रोगोंकी उत्पत्ति और

वृद्धि करेगा। यदि आप उदर रोगों की उत्पत्ति और वृद्धि से बचना चाहते हैं सूर्य की त्राटक-साधना के द्वारा उसके हानिकारक प्रभाव को दूर करने का प्रयत्न करें। यह पहिले ही कहा जा चुका है कि सूर्य को सीधा न देखें, वरन् उसकी किरणें जहाँ पड़ रही हों ठीक प्रकार से केन्द्रित होकर उस स्थान को देखें। प्रातःकाल किया जाने वाला त्राटक का यह अभ्यास आपके नेत्रों के लिये भी लाभकारी सिद्ध हो सकता है।

चन्द्रमा का त्राटक—

चन्द्रमा रात्रि का स्वामी है। रात्रि में उष्णता के स्थान पर शीतलता ही रहती है। कहते हैं कि चन्द्रमा की चाँदनी में अमृत भरा रहता है, इसीलिये उसका नाम सुधांशु है। पृथिवी पर पड़ने वाली चन्द्रमा की किरणें निश्चय ही अमृत की वर्षा करती हैं। दिन में सूर्य के उत्ताप से तप्त और व्याकुल समस्त प्राणी रात्रि के आने पर शीतलता तथा सुख-शान्ति का अनुभव करते हैं। दिन में किये गये परिश्रम की थकान चद्रमा की चाँदनी से शीघ्र दूर हो जाती है।

चन्द्रमा अमृतमयी शीतल किरणों का भण्डार है। इसके द्वारा शरीर के अणु-अणु में शीतलता का प्रसार हो जाता है। शरीर में व्याप्त हुई उष्णता पराजित होकर भाग जाती है। गर्मी के कारण उत्पन्न होने वाले रोग चन्द्रमा के प्रभाव से दूर हो जाते है।

चन्द्रमा का प्रभाव शुक्रवाहिनी और शुक्राशय पर भी बहुत अनुकूल पड़ता है। इस कारण शुक्र सम्बन्धी सभी विकार दूर होने लगते हैं। समागम में दुर्बलता, प्रमेह, शीघ्रक्षरण, स्वप्नदोष आदि पुरुष-रोगों में चन्द्रमा कीं किरणें बहुत लाभ पहुँचाती है। किन्तु असामयिक और निरर्थक कामोत्तेजना को भी नियंत्रित करती हैं। महिलाओं के रजोरोगों में भी हितकर होती हैं।

शरीर के किसी भी भाग में प्रदाह, जलन आदि हो, उसमें चन्द्र

किरणों से आराम का अनुभव होता है। आग से जलने की स्थिति में भी इन किरणों का अनुकूल प्रभाव पड़ता है। पित्त और रक्त के विकारों में भी यह किरणें हितकर होती हैं।

ववासीर में गिरते हुए रक्त में यह अवरोधक प्रभाव डालती हैं। वातज अर्श के मस्से इनके प्रभाव से सिकुड़ने लगते हैं। त्वचा के रोगों में भी चन्द्रमा की किरणें लाभकारी रहती हैं। ग्रीष्म ऋतु में निकलने वाली फुन्सी आदि में भी इनसे सहज लाभ होता है। दाद, खाज, छाजन आदि के दूर होने में भी इनसे बहुत सहायता मिलती है

चन्द्रमा की शीतल किरणें नेत्र रोगों के लिये तो सहज ही अमृत के समान प्रभावकारी हैं। इनके प्रभाव से किसी प्रकार की औषधि-चिकित्सा के ही आप अपनी आँखों की दृष्टि तीव्र कर सकते हैं। एक चन्द्रमा पर त्राटक साधना करने वाले साधक ने बताया कि इस साधना से उनकी दृष्टि बढ़ गई और चश्मा छूट गया।

चन्द्रमा का जितना सम्बन्ध नेत्र से है, उससे बहुत अधिक सम्बन्ध हृदय से है। ज्योतिष के अनुसार शुभ नवांश में चन्द्रमा हृदय पर शुभ प्रभाव डालता है, जिसके फल स्वरूप हृदय या वक्ष-स्थल से सम्बन्धित कोई रोग उत्पन्न नहीं हो पाता। किन्तु अशुभ नवांश में स्थित चन्द्रमा हृदय तथा वक्षस्थल सम्बन्धी रोगों की उत्पत्ति और वृद्धि में सहायक होता है। चन्द्रमा की यह अशुभ स्थिति सामान्यत: सवा दो दिन पर्यांप्त रहती है।

आप चन्द्रमा की त्राटक-साधना के द्वारा उसके अशुभ प्रभाव से पूर्ण रूप से बचे रह सकते हैं। उसकी अशुभ स्थिति के अतिरिक्त भी, यदि आप निरन्तर चन्द्रमा पर त्राटक का अभ्यास करें तो हृदय रोग रक्त-चाप तथा नेत्र-विकार आदि से अपने को मुक्त करने या सुरक्षित रखने में सहज सफल हो सकते हैं। नेत्रों में दर्शन-शक्ति बढ़ाने का यह प्राकृतिक साधन रूप व्यायाम है ही, हृदय या वक्ष सम्बन्धी रोगों को दूर

रखने का भी अच्छा उपाय है। असन्तुष्ट दाम्पत्य जीवन में इस साधना के द्वारा आप पूर्ण रूपेण सन्तुष्टि और तृप्ति कर सकते हैं।

मंगल का त्राटक–

मंगल क्रूर ग्रह तो है ही वक्री तथा पाप ग्रह भी माना जाता है। इसका लाल वर्ण है। यदि यह अशुभ नवांश में होता है तो मस्तक को प्रभावित करता है। क्योंकि मंगल का मस्तक से अधिक सम्बन्ध है। इस स्थिति में मनुष्य को मस्तक से सम्बन्धित रोग (शिरोरोग) उत्पन्न हो सकते हैं। किन्तु यदि मंगल शुभ नवांश में होगा तो शिरोरोगों की उत्पत्ति और वृद्धि में अवरोध उत्पन्न करेगा।

सिर दर्द, आधासीसी आदि विकारों की उत्पत्ति में मगल ग्रह का प्रभाव बहुत कुछ कारण बन जाता है। सिर के गंजेपन में, बाल गिरने में, उनकी जड़ों के कमजोर होने आदि में भी मंगल का प्रभाव कार्य करता है। सिर में फोड़े फुन्सी, दाद या अन्य रक्तजन्य विकार अथवा त्वचा पर स्पष्ट दिखाई देने वाले दोष जो मस्तक, में हों, मंगल के कुप्रभाव से अधिक होते हैं।

ज्योतिष की दृष्टि से मंगल ग्रह का सम्बन्ध मूँगा, अग्नि, राज्य, शत्रु, पराक्रम, साहस, क्रोध, सेना, खान, भाई आदि से माना जाता है। यदि मङ्गल प्रसन्न या अनुकूल है तो इनके द्वारा सुख-सौभाग्य की प्राप्ति कर सकता है। उसके फल स्वरूप शत्रु भी मित्र बन सकता है। अग्नि का भय तो कभी रहता ही नहीं। क्रोध भी साहस और पराक्रम के साथ मिलता है तो मनुष्य को राजपद तक का अधिकारी बना सकता है।

किन्तु मंगल की प्रतिकूलता या अप्रसन्नता बहुत हानिकारक हो सकती है। भाई-बन्धु भी शत्रु बनकर हानि पहुँचाने वाले बन जाते हैं। शत्रु प्रबल हो जाते हैं और तब अपना ही साहस और पराक्रम निष्फल और हानिकारक हो जाता है। मङ्गल के प्रकोप से अनेक प्रकार की हानियाँ हो सकती है।

आप मङ्गल या उसके प्रतिनिधि रत्नादि पर त्राटक-साधना करके उसके कुप्रभाव से छुटकारा पा सकते हैं। मंगल की त्राटक-सिद्धि प्रतिकूल मंगल को भी अनुकूल बना सकती है।

बुध का त्राटक–

बुध का तत्व पृथिवी है। यह भी वक्री ग्रह है। इसकी अपनी राशि मेष और वृश्चिक है। उच्च राशि मकर और नीच राशि कर्क है। यदि यह ग्रह अशुभ नवांश में होता है तो कन्धे और गले को प्रभावित करता है, जिससे इन अंगों से सम्बन्धित रोगों की उत्पत्ति और वृद्धि हो जाती हैं। किन्तु यदि यह अपने शुभ नवांश में रहता है तो कन्धे और गले को किसी रोग से प्रभावित नहीं होने देता, वरन् उनकी रक्षा में तत्पर रहता है। ज्योतिष के अनुसार यह अवधि एक मास की मानी गई है।

कन्धों में दर्द, उसके कारण हाथों को उठाने या घुमाने-फिराने में भी कठिनाई हो सकती है। गले में छाले, कफ-विकार, शोथ, कास, खरखराहट, स्वर भंग आदि कोई भी विकार हो सकता है बुध ग्रह के प्रकोप से। कण्ठमाला, केंसर प्रभृति रोगों में भी बुध का प्रतिकूल प्रभाव ही समझा जाता है।

ज्योतिष के मतानुसार बुध ग्रह का सम्बन्ध पन्ना नामक रत्न, शिल्प विद्या, विवेक बुद्धि, वाणी, व्यवसाय, लेखन कार्य, गणित, नृत्य, चिकित्सक, माना आदि से हो सकता हैं। यदि बुध ग्रह अनुकूल हो तो मनुष्य इन सभी के द्वारा अपना हित-साधन कर सकता है। उसे धन-वैभव, श्रेष्ठ मति आदि के साथ व्यवसाय आदि में भी सफलता मिल सकती है।

इसके विपरीत, यदि बुध ग्रह कुपित अथवा प्रतिकूल हो तो विवेक बुद्धि नष्ट हो जाती है, वाणी ही कुवाणी बनकर अपना अहित कर बैठती है। व्यवसाय आदि में भी हानि दिखाई देती हैं। अपने मामा आदि

हितैषी सम्बन्धी भी पराये और प्रतिकूल बन जाते हैं। यदि रोग होता है तो चिकित्सक उसे समझ नहीं पाते, इसलिये ठीक होना तो दूर, उल्टा बढ़ता ही है।

बुध के प्रकोप से शिल्प विद्या, नृत्य विद्या आदि में भी कोई उन्नति नहीं हो पाती। सर्वत्र ह्रास और हानि ही प्रतीत होती है। तथा आशा निराशा में परिवर्तित हो जाती है।

आप बुध ग्रह अथवा उसके प्रतिनिधि रत्नादि पर त्राटक-साधना के अभ्यास में लगें तो उसके कुप्रभाव को बहुत कुछ दूर करने में सफल हो सकते हैं। किन्तु साधना तभी प्रभावकारी रूप से सफल हो पाती है, जब उसे नित्य प्रति बिना नागा के मनोयोग पूर्वक करते रहें।

वृहस्पति का त्राटक–

वृहष्पति का आकाश तत्व है। वक्री ग्रह होते हुए भी सौम्य है। इसकी अपती राशि धनु और मीन हैं। उच्च राशि कर्क और नीच राशि मकर है। यह पुरुष ग्रह है, जब कि चन्द्रमा पुरुष-नपुंसक ग्रह माना जाता है। इसलिए यह ग्रह धनात्मक ऊर्जा से सम्पन्न और पुरुषों के लिये सहज रूप से हितकर समझा जाता है।

यदि वृहस्पति ग्रह अशुभ नवांश में हो तो कमर और गुप्त अंग पर प्रतिकूल प्रभाव डालता है, जिसके फल स्वरूप उन अंगों से सम्बन्धित रोग उत्पन्न हो सकते हैं। यदि वृहस्पति शुभ नवांश में रहता है तो कमर और गुप्त अंग से सम्बन्धित व्याधियों को न उत्पन्न होने देता है और न बढ़ने देता है। इसके प्रभाव की अवधि तेरह महीने की मानी जाती है।

कमर में दर्द, स्तम्भ या और भी कुछ व्याधियाँ उत्पन्न हो सकती हैं। यदि वे हों तो उसका एक कारण वृहस्पति का प्रतिकूल होना भी समझा जा सकता है। गुप्त अंग में अनेक प्रकार के रोग हो जाते हैं,

जैसे क्लीवत्व, वक्रत्व आदि। इसके साथ शुक्र दोष, शीघ्र क्षरण, स्वप्न-मेह, प्रमेह, मधुमेह, सुजाक, उपदंश प्रभृति रोग उत्पन्न होकर मनुष्य को अधिक परेशान करने वाले बन जाते हैं। इनकी उत्पत्ति और वृद्धि में भी वृहस्पति का अशुभ अंश या अशुभ स्थान में होना ही माना जाता है।

ज्यौतिष के अनुसार वृहस्पति ग्रह का सम्बन्ध पुखराज नामक रत्न तथा धन, धर्म,देवता, अध्यात्म, विवेक, मित्र, पुत्र, ब्राह्मण, वस्त्र, स्वर्ण तथा यज्ञादि से है। यदि बृहस्पति अनुकूल हो तो यह मनुष्य का हित-साधक करने वाले होत हैं। वह इस सभी के द्वारा अपने को सुखी अनुभव करता है।

किन्तु वृहस्पति के प्रतिकूल या प्रकुपित होने की स्थिति में विवेक बुद्धि नष्ट हो जाती है। धन, धर्म, मित्र, पुत्र, ब्राह्मण आदि कोई भी अपना साथ नहीं देता। मित्र कुमित्र और पुत्र कुपुत्र होजाता है, देवता दृष्टि फेर लेता है। अध्यात्म आदि में रुचि उत्पन्न नहीं होती। यज्ञादि शुभ कर्मों में व्यवधान उपस्थित हो जाता है।

प्रतिकूल वृहस्पति पाण्डु प्रभृति रोगों में भी कारण हो सकता है। शरीर में खून की कमी हो सकती है। स्त्री-प्रसंग आदि हर्ष के स्थान पर असफलता ही साथ लगती है।

और जब आप देखें इस प्रकार का कुयोग, आप पायें कि धन, धर्म, पुत्र, मित्र आदि भी विपरीत होरहे हैं, विद्वानों या विज्ञानियों का सह-योग नहीं मिल रहा है आपको, आप समझें कि शुभ कार्यों के करने में अनेक प्रकार की बाधाएं उपस्थित हो रही हैं तो आप त्राटक-साधना कीजिये वृहस्पति की या उसके प्रतिनिधि रत्न की, ऐसा करने से आपको उस ग्रह की अनुकूलता प्राप्त हो सकती है।

शुक्र का त्राटक—

शुक्र का तत्व जल है। यह भी वक्री और सौम्य ग्रह है। ज्योति-

षियों ने इसे स्त्रीलिंगी कहा है। इसलिए यह महिलाओं के लिये सहज ही अनुकूल है। यह रजोगुणी ग्रह है, इसलिये जब अपनी प्रबलता पर होता है हो मनुष्य को रजोगुणी बना देता है।

शुक्र की स्वराशि वृषभ और तुला हैं। उच्च राशि मीन और नीच राशि कन्या। क्षणात्मक ऊर्जा से सम्पन्न होने के कारण इसमें समर्पण का गुण भी है।

किन्तु शुक्र का प्रभाव मुख पर मुख्य रूप से पड़ता है। जब यह शुभ नवांश में होता है तब मुख सम्बन्धी व्याधियों से पूर्ण रूपेण रक्षा करता है। किन्तु यदि यह अशुभ नवांश में रहता है तब अशुभ फल देने वाला हो जाता है। इस स्थिति में यह मुख सम्बन्धी विकारों को उत्पन्न करता और उनकी वृद्धि भी कर देता है।

मुख-मण्डल में अनेक रोग हो सकते हैं। झाँई-मुहाँसे तो सामान्य विकार हैं जो आयु के परिवेश में कम या अधिक प्राय: बहुतों को हो जाते हैं। किन्तु मुख पर दाद, छाजन, दाग, चकत्ते आदि कुछ रक्त विकार के कारण उत्पन्न ऐसे त्वचा दोष भी हैं, जो उत्पन्न हो जाते हैं तो निवारित नहीं होते, वरन् मनुष्यों को परेशान अधिक ही करते हैं। यही नहीं, मुख पर और भी बहुत से रोग हो सकते हैं, उन सभी की चर्चा यहाँ किया जाना सम्भव नहीं है।

शुक्र का सम्बन्ध हीरा नामक प्रसिद्ध रत्न से है। आभूषण, चाँदी, वैभव, मनोरञ्जन, व्यापार, वाहन, कविता, पत्नी, काम वासना आदि से भी इस ग्रह का सीधा सम्बन्ध माना जाता है। यदि शुक्र ग्रह अनुकूल है हो आप इन सभी के द्वारा पर्याप्त सुख-लाभ उठा सकते हैं। किन्तु यदि शुक्र की अनुकूलता प्राप्त नहीं है आपको, यदि व्यापार में हानि, वाहनादि की क्षति, वैभव की घटोत्तरी, आभूषणादि का अभाव होजाता है। चाँदी पास में थी वह भी चली जाती हैं। इससे मनोरञ्जन में भी रुचि नहीं ले पाते आप। पत्नी भी मुख फेर लेती है।

शुक्र के प्रकोप से काम वासना विपरीत रूप में बढ़ जाती है, जिससे शरीरस्थ धातुओं का त्रय होने लगता है। मन भी विकार ग्रस्त हो जाता है और तब आप अपने को असमर्थ पाते हैं उस स्थिति का सामना करने में।

ऐसी स्थिति में यदि आप शुक्र ग्रह अथवा उसके किसी प्रतिनिधि रत्न आदि पर त्राटक का अभ्यास कीजिए। उसके फल स्वरूप आप सभी परेशानियों से बच सकते हैं।

शनि का त्राटक—

शनि का तत्व वायु है, इसलिये यह अत्यधिक प्रभावशाली है। क्रूर तथा पाप ग्रह होने के साथ ही यह स्त्री-नपुंसक माना जाता है। इसकी अपनी राशि मकर और कुम्भ हैं। उच्च राशि तुला और नीच राशि मेष। यह तमोगुणी ग्रह है, इसलिये जब प्रकुपित होता है तो कभी-कभी अधिक भयंकर परिणाम प्रदर्शित करता है।

इस ग्रह का उरु (जाँघ) से अधिक निकट का सम्बन्ध है, इसलिये इसके अशुभ नवाँश में होने की स्थिति में मनुष्य को जाँघ से सम्बन्धित व्याधियां उठानी पड़ सकती हैं। यदि यह ग्रह शुभ नवाँश में होता है तो जांघ प्रभृति अंगों में किसी प्रकार का कोई रोग उत्पन्न नहीं हो पाता। क्योंकि शुभ नवांश में स्थित शनि मनुष्य की रक्षा में प्रवृत्त रहता है।

शनि का सम्बन्ध नीलम नामक रत्न से अधिक है। वरन् नीलम को ही शनि का विशेष प्रतिनिधि मानते हैं। इसके अतिरिक्त सेवक, शस्त्र, रोग, कष्ट शिल्प, कृषि, भूमि, यात्रा, आयु तथा मृत्यु आदि से भी शनि ग्रह का निकट का सम्बन्ध माना जाता है।

यदि, शनि ग्रह आपके अनुकूल है तो उससे सम्बन्धित सभी वस्तुएँ आपके अनुकूल रहेंगी। शिल्प, कृषि, पृथिवी एवं यात्रा आदि सभी कुछ आपके लिये सुखमय रहेगा। सेवक आज्ञाकारी रहेगा और शस्त्र की भी

अनुकूलता रहेगी। किसी प्रकार का रोग उत्पन्न नहीं होगा, इसलिये आयु बढ़ जायगी और मृत्यु दूर भागेगी। आप पायें कि शरीर पुर्ण स्वस्थ है और शरीर स्वस्थ रहें तो मन का स्वस्थ रहना भी स्वाभाविक है।

यदि शनि की अनुकूलता नहीं है, यदि वह प्रकुपित है आप से तो आपके उपलब्ध साधन भी व्यर्थ हो सकते हैं। जो सेवक आपका आज्ञाकारी था, वह आपके लिये हानिकारक और घातक बन सकता है। जो शस्त्र आपका अपना है, वह आपके ही विरुद्ध चल सकता है किसी दूसरे के हाथ में जाकर।

शायद आपने सुना हो कि अमुक व्यक्ति ने अपने ही शस्त्र से आत्महत्या करली, तो उस घटना में यह मानना होगा कि कहीं न कहीं शनि का कुप्रभाव है, वह चाहे किसी भी रूप में हो। शनि कुपित हो तो रोग-वृद्धि भी एक सामान्य बात होगी और रोग में वृद्धि होती है तो कष्ट में वृद्धि भी होगी ही।

आप अनुभव करें कि शनि के प्रकोप से रोग और कष्ट की वृद्धि हो रही है तो उससे छुटकारा पाने के लिए शनि ग्रह के प्रतिनिधि रत्नादि की त्राटक साधना कीजिये। उससे आप पायेंगे कि कुछ ही समय में रोगादि कष्टों का निवारण हो रहा है और आप स्वस्थ होने की ओर बढ़ रहे हैं। जब आप रोग-रहित एवं स्वस्थ हो जाते हैं तो यही आयु वृद्धि का लक्षण है, जिसका लाभ आपको सहज ही होजाता है।

राहु का त्राटक

राहु भी क्रूर ग्रह है। पाप ग्रह के साथ तमोगुण भी इसकी अपनी राशि कन्या, उच्च राशि वृषभ अथवा मिथुन और नीच राशि धनु मानी जाती है।

राहु का निकटलम सम्बन्ध मनुष्य के पाँवों से है। यदि वह शुभ

नवांश में है तो पाँवों में शक्ति और गति बनाये रखता है तथा किसी प्रकार का रोग आदि नहीं होने देता। इसके विपरीत, यदि राहु अशुभ नवांश में होता है तो पांवों को दुर्बल और रोगी बना देता है। इस कारण मनुष्य अधिक चलने-फिरने में भी अपने को असमर्थ अनुभव करता है।

राहु का प्रतिनिधि रत्न गोमेद है। इससे सम्बन्धित और भी अनेक वस्तु हैं, जिनमें छिपा हुआ धन, खोई हुई वस्तु, सर्प, सट्टा आदि व्यसन, पितामह, मृत्यु आदि। यदि राहु अनुकूल हो तो मनुष्य को इन सभी की सहज अनुकूलता प्राप्त होती है। किन्तु यदि राहु विपरीत या प्रतिकूल हो तो मनुष्य इन्हीं के कारण दुःखी और रोगी बन सकता है।

यदि आप अनुभव करें कि उक्त प्रकार के दुःख और रोग की प्राप्ति हुई है और समझें कि राहु ग्रह आपके अनुकूल नहीं है तो राहु के प्रतिनिधि रत्नादि पर त्राटक साधना का अभ्यास करें इससे आप राहु के कुपरिणाम बच सकते हैं।

केतु का त्राटक–

केतु भी तमोगुणों, क्रूर और पाप ग्रह माना जाता है। इसकी अपनी राशि मीन, उच्च राशि वृश्चिक या धनु तथा नीच राशि मिथुन है। इसका प्रतिनिधि रत्न लहसुनिया माना जाता है। इसका सम्बन्ध मातामह, मातामह के वंश, व्यय, चर्म रोग, घाव तथा दुःखादि से अधिक माना गया है।

इसका प्रभाव भी मनुष्य के पाँवों पर अधिक पड़ता है। यदि केतु शुभ नवांश में है तो पांवों को सबल, गतिशील और रोग-रहित परिणाम वाला सिद्ध होगा। यदि केतु अशुभ नवांश में हो तो पाँवों के लिये कष्टकारी और रोग प्रद हो सकता है।

पाँवों में सम्बन्धित अनेक प्रकार के रोग हो सकते हैं—पाँव में दर्द

वात विकार, फील पांव, शोथ, चलने में कष्ट, घाव, बिवाई फटना आदि। यदि केतु विपरीत है तो इन कष्टों के अतिरिक्त चर्म रोग, घाव, दाद खाज, छाजन, कुष्ट आदि रोग भी उत्पन्न हो सकते हैं।

इनसे बचने के लिये केतु को अपने अनुकूल बनाना अपेक्षित है। यदि आप समझे कि उक्त प्रकार के कष्टों से प्रभावित है तो केतु के प्रतिनिधि रत्नादि पर त्राटक साधना कीजिये। इससे आप शीघ्र अनुभव करेंगे कि प्राप्त रोग तथा दुःख आदि से छुटकारा पाने लगे हैं।

तारे का त्राटक—

उक्त ग्रहों के अतिरिक्त बहुत से अनगिनती नक्षत्र दिखाई देते हैं आकाश में,जिन्हें हम तारागण के रूप में देखते हैं। आप इनमें से किसी भी तारे को त्राटक साधना के लिये चुन सकते हैं। यदि आप रात्रि-काल में तारे पर त्राटक का अभ्यास करें तो उष्णता से उत्पन्न रोगों से शीघ्र मुक्त हो सकते हैं। तारे का त्राटक शुक्र दोष, प्रमेह, मधुमेह, स्वप्नमेह तथा नपुंसकता आदि रोगों से भी छुटकारा दिला सकता है।

धातुओं के त्राटक की आशा जनक उपलब्धियाँ

फल, फूल, पत्र, मणि, रत्नादि के समान ही धातुओं पर भी त्राटक साधना की जा सकती और उन-उन धातुओं में विद्यमान गुणों का आकर्षण कर उनका समावेश अपने शरीर में किया जा सकता है। यहाँ कुछ मुख्य धातुओं के गुणों पर प्रकाश डालना अपेक्षित है—

चाँदी का त्राटक—

चाँदी को रूपा, रूप्य, रजत, सिल्वर आदि कहते हैं। यह श्वेत रंग

की उज्वल धातु है, जिसमें चमक होती है और जिसके गहने भी बनाये जाते हैं। चिकित्सकगण चाँदी को फूँक कर उसकी भस्म बना लेते और औषधि रूप में सेवन कराते हैं। यह खनिज एवं प्रसिद्ध वस्तु है। इसकी प्रकृति ठण्डी और रूक्ष मानते हैं।

चाँदी जीवनी शक्ति को पोषण देने वाली, उसकी रक्षा करने वाली तथा हृदय और आमाशय को सबल बनाने वाली है। इससे शरीर की समस्त धातुएँ रस, रक्त, मांस, मेद, अस्थि,मज्जा, शुक्र आदि को पोषण प्राप्त होता है। किन्तु अत्यधिक स्थूलता घट जाती है और कफ-विकार भी दूर हो जाते हैं।

चाँदी का चन्द्रमा से निकट का सम्बन्ध माना जाता है। यह शुक्र संस्थान पर अनुकूल प्रभाव डालती है, इसलिये संयोग शक्ति तो बढ़ाती है, किन्तु उत्तेजना का शमन करती है। शीत वीर्य गुण वाली होने के कारण इसका सौम्य प्रभाव पड़ता है, इसलिये निरर्थक वासना का शमन हो जाता है।

चाँदी बालकों के लिये भी हितकर मानी जाती है। कुछ लोग बाल-ग्रह, भूत-बाधा आदि के अवरोधार्थ बच्चों को चाँदी का तावीज बाँधते या चाँदी का चन्द्रमा बना कर गले में डाल देते हैं। अध्यात्म पक्ष में भी चाँदी का बहुत महत्व स्वीकार किया जाता है। यह धातु पवित्र भी अधिक मानी जाती है। इसीलिये प्राचीन काल में लोग चादी के बर्तनों का भी बहुत उपयोग करते थे।

आप चाँदी पर त्राटक का अभ्यास कीजिये। किन्तु ध्यान रहे कि उस पर मैल न हो, इललिये अभ्यास आरम्भ करने से पहिले उसे निखरवा लेना चाहिये। अन्यथा उस पर आये हुए मैल के अवगुणों का मिश्रण भी आपके साधना मार्ग में हो जायगा और उसे स्थिति में आप चाँदी के शुद्ध गुणों को अपने में समाविष्ट करने में उतने सफल नही हो पायेंगे।

सोने का त्राटक–

सोने के बहुत से नाम प्रसिद्ध हैं—स्वर्ण, कंचन, कनक आदि। अँग्रेजी में इसे गोल्ड कहते हैं। यह चमकीली, पीले रंग की एक प्रसिद्ध धातु है, जिसके धनवान मनुष्य आभूषण बनवाकर धारण करते-कराते हैं। चिकित्सकगण इसकी भस्म (कुश्ता) बना कर औषधियों के रूप में व्यवहार कराते हैं।

सोने में भी अनेकों गुण है। इसकी प्रकृति समान गुण वाली (मातदिल) मानी जाती है। कुछ लोग सोने की किंचित् उष्ण प्रकृति का भी मानते हैं। कुछ के मत में यह मनुष्य शरीर के लिए एक बहुत ही उपयोगी रसायन है जो अनेक रोगों को दूर करती तथा सदैव सुखी, प्रसन्न और निरोग रखती है।

इसका प्रभाव मन, मस्तिष्क और हृदय पर भी पर्याप्त रूप से पड़ता है। यह सभी अवयव स्वर्ण के स्पर्श और दर्शन से भी पुष्ट तथा हर्षित हो जाते हैं। प्रकृति सरल और उल्लासमयी हो जाती है। हृदय की व्याकुलता का शमन सहज ही हो जाता है। दिल की धड़कनों को नियमित बनाये रखने में भी यह उपयोगी है।

निरर्थक चिन्ता, दुःख-सन्तान आदि का इसके द्वारा सहज ही निवारण हो जाता है। श्वास-निःश्वास क्रिया पर भी इसका अनुकूल प्रभाव पड़ता है, इसलिये मनुष्य बाहर से ताजा आक्सीजन पर्याप्त मात्रा में ग्रहण करने में समर्थ हों जाता है। इस कारण प्राणों में स्वच्छता आकर उनकी क्रिया नियमित हो जाती है।

हृदय पर अनुकूल प्रभाव पड़ने के कारण रक्त-संचार क्रिया भी नियमित हो जाती है। इसलिये फेंफड़े भी सबल हो जाते है। जब फेंफड़े और हृदय सबल रहते हैं तब किसी रोग से आक्रान्त होने की सम्भावना भी बहुत ही कम होती है।

स्वर्ण का शुक्राशय पर भी बड़ा प्रभाव पड़ता हैं। शरीरस्थ शुक्र ग्रन्थि में उचित क्रियाशीलता उत्पन्न हो जाती है और मस्तिष्क का अनुकूल योग होने पर पुंसत्व शक्ति बढ़ जाती है। शीघ्र क्षरण, प्रमेह, मधुमेह आदि में भी इससे लाभ होता है। जो लोग अपने में मैथुन शक्ति की कमी अनुभव करें उनके लिये सोने का त्राटक बहुत उपयोगी रहता है। इससे नपुंसकता दूर हो जाती है और प्रजनन शक्ति भी बढ़ जाती है। सोने का त्राटक शारीरिक और मानसिक दोनों प्रकार की पुष्टि के लिये हितकर है।

ताँबे का त्राटक—

ताँवा भी एक प्रसिद्ध धातु है और साथ ही पवित्र भी। इसे संस्कृत में ताम्र और आँग्ल भाषा में कापर कहते हैं। इसका रंग ललोंई लिये भूरा होता है। इसके बर्तनों का प्रयोग पहिले अधिक होता था। पूजा-उपासना में अब भी इसके पात्र प्रयोग में लाये जाते हैं। तान्त्रिक लोग यन्त्र बनाने में भी इसका अधिक प्रयोग करते हैं।

चिकित्सकगण इसकी भी भस्म औषधि रूप में व्यवहार में लाते हैं। इसमें अनेक ऐसे गुण विद्यमान हैं जो मानव शरीर के लिये अधिक उपयोगी है। प्रकृति में यह उष्ण ओर रूक्ष माना जाता है। वात दोष को शवन करने में इसकी अधिक उपयोगिता है।

शीतजन्य सभी रोव इससे ठीक होते हैं। अंगों के जोड़ों में दर्द, पक्षाघात, अर्दित प्रभृति रोगों में भी इसका उपयोग किया जाता है। शरीर के किसी भी अंग पर सूजन हो तो इसके प्रयोग से दूर हो जाती है। रक्त की कमी और पीलिया रोग में भी उपयोगी हैं।

रक्त पर इसका शोधक प्रभाव पड़ता हैं, इसलिये त्वचा के समस्त विकारों में उपयोगी हो सकता है। फोड़ा, फुन्सी, दाद, छाजन, खुजली, कुष्ट आदि में भी यह हितकर है। यदि शरीर में कहीं, किसी कारणवश

व्रण (घाव) हो जाय तो यह उसे पूरने में शीघ्र ही सहायक होता है।

पाचन तन्त्र पर इसका प्रभाव क्षोभकारी होता है। इसलिये इसके प्रयोग से वमन हो जाती है। खाँसी, श्वास प्रभृति रोगों के शमन में भी यह हितकर है तथा इससे पित्त और कफ के बिकार भी शीघ्र ही दूर हो जाते हैं।

आप ताँबे पर त्राटक के अभ्यास से वात-रोग, रक्त-रोग, पित्त तथा कफ के रोग और शोथ आदि के निवारण में सफल हो सकते हैं। इस साधना से शीतजन्य विकारों में भी लाभ उठाया जा सकता है।

जस्ते का त्राटक—

यह भी एक प्रसिद्ध खनिज धातु है। इसे जस्ता, जस्त, यशद, रूमी तूतिया आदि कहते हैं। आँग्ल भाषा में इसका नाम जिंक है। इसका रङ्ग सफेद, किन्तु मटमैला सा होता है। प्रकृति में यह भी गर्म और रूक्ष माना जाता है। चिकित्सकगण इसकी भी भस्म का प्रयोग चिकित्सा में करते हैं। यह दस्तकारी आदि के भी बहुत-से कार्यों में प्रयुक्त होता है। इसके वर्तन भी बनते रहे हैं और यह माना जाता रहा है कि जस्त के बर्तन में अन्नादि भोजन कर खाने-पीने से हृदय और आमाशय को वल प्राप्त होता है।

वात-रोग को दूर करने में भी इसकी अनुकूल प्रतिक्रिया होती है। शोथ के लिये यह मुख्य रूप से लय करने वाला है। नेत्र-विकारों में भी इसका बहुतायत से प्रयोग होता है। इसकी बनी हुई सलाई मात्र के स्पर्श से आँखों के अनेक विकार दूर हो जाते हैं।

जस्त को मैल-रहित कीजिये और फिर कीजिये उस पर त्राटक साधना। उससे आप नेत्रों के सभी कष्टों से मुक्त हो सकेंगे। यहाँ तक कि धुन्ध, जाला तक काटने की सम्भावना हो सकती है। आँखों की लाली भी दूर हो जाती है।

सीसे का त्राटक—

सीसा को सीसक, शीशा, सुरब आदि कहते हैं। अंग्रेजी में इसका नाम लैड है। रंग में यह काला, कुछ चमकदार भी होता है। किन्तु मैला होने पर चमक नहीं रहती। यह भी एक प्रसिद्ध धातु है, जिसका प्रयोग अनेक कार्यों में होता है। छापेखाने के अक्षरमुख्यतः इसी धातु से बनाये जाते हैं।

चिकित्सक भी इसका प्रयोग अनेक प्रकार से करते हैं। विशेप रूप से आँखों में आँजने वाले सुरमों में भी मूल (बेस) यही होता है। प्रकृति में यह ठण्डा और तर माना जाता है।

इसका प्रभाव जब मल तंत्र पर पड़ता हैं तब मल को परिपक्व करता और बाँधता है। शरीर की ऊपरी जलन को शान्त करने में भी इसका उपयोग है।

आप इसके त्राटक द्वारा सभी नेत्र रोगों से छुटकारा प्राप्त कर सकते है। इससे जाला, फूला, लाली, दृष्टिमांद्य, दर्द आदि में भी लाभ उठाया जा सकता है।

राँगे का त्राटक—

राँगे को राँग अथवा वंग कहते हैं। चिकित्सा शास्त्री जिस वंग भस्म का प्रयोग करते हैं, यह राँग की ही भस्म है। यह रंग में सफेद और चमकीला होता है। प्रकृति में यह ठण्डा और रूक्ष माना जाता है। मुख द्वारा सेवन घातक विष के समान है।

इसका बाह्य प्रयोग बवासीर, गुद-शोथ तथा खुजली आदि के लिये हितकर होता है। इसके सुरमे से आँखों की कीचड़, ललोंई, दर्द आदि में लाभ होता है। त्वचा-दोष के लिये भी इसे उपयोगी मानते हैं। इसकी भस्म का प्रयोग प्रमेह रोग में बहुतायत से होता है। आप इसकी त्राटक-साधना के द्वारा अपने सभी नेत्र,विकारों को सफलता पूर्वक विदा कर सकते हैं।

पीतल का त्राटक–

पीतल को संस्कृत में पित्तल और अँग्रेजी में ब्रास कहते हैं। यह एक प्रकार की प्रसिद्ध धातु है, जिसके बर्तन अधिकता से बनाये जाते हैं। देव मूर्त्तियाँ और खिलौने भी बनते रहे हैं इसके। इसके प्रयोग से औषधि गुण को प्राप्ति भी होती है।

पीतल के बर्तनों में खाने से वात और कफ के विकार दूर करने का विशेष लाभ मिलता है। इसके फल स्वरूप प्लीहा की शोथ दूर हो जाती है। रक्ताल्पता और पाण्डु रोग में भी उपयोगी है। मस्तिष्क सम्बन्धी अवयवों को भी इससे लाभ सम्भव है।

आप पीतल पर त्राटक के अभ्यास से उसमें निहित उक्त सभी गुणों को अपने में आकर्षित कर सकते हैं, जिससे अनेक विकारों से छूटने में सफलता मिल सकती है।

लोहे का त्राटक–

लोहे को संस्कृत में लोह और अँग्रेजी में आयरन कहते है। यह भी खानो में होने वाली प्रसिद्ध धातु है, जिसका सबसे अधिक उपयोग विभिन्न कार्यों में होता है। बड़े-बड़े गाटर रेलिंग, सलाखें, मशीनी कल पुर्जे आदि लोहे से ही बनाये जाते है। अस्त्र-शस्त्र निर्माण में भी लोहे का भारी उपयोग होता है।

चिकित्सा शास्त्रियों ने इसका प्रयोग भस्म रूप में अधिक किया है। आसव आदि के रूप में वे इसके चूर्ण से भी गुणों के अंश प्राप्त करते रहे हैं। देशी-विदेशी सभी प्रकार की दवाइयों में इसका प्रयोग होता रहा है। प्रकृति की दृष्टि से यह ठण्डा और रूक्ष माना जाता है।

यह रक्ताल्पता के लिये हितकर समझा जाता है। पित्तजन्य और रक्तजन्य उष्णता में यह लाभकारी है। मुख्यत: आमाशय को बलप्रद होने के कारण शरीर को सशक्त बनाये रखता है। यह शरीर में ओज

की वृद्धि करता है। अर्शजन्य वायु के शमन में यह हितकर होता है। अवयवों को कठोर करने वाला तथा शुक्र का स्तम्भन करने वाला है। महिलाओं की भी दुर्बलता आदि में लौह का प्रयोग सफलता पूर्वक किया जाता रहा हैं।

आप लोहे पर त्राटक के अभ्यास से अपने को अधिक सबल बना सकते हैं। इससे स्तम्भन शक्ति, वीर्यवृद्धि आदि का लाभ भी प्राप्त किया जा सकता है।

मण्डूर का त्राटक–

मण्डूर लोहे के मैल को कहते हैं। इसके भी अनेक प्रयोग है, तथा मशीन के पुर्जे आदि में भी काम में लाते हैं। इसका रंग भी काला होता है। यह आमाशय, हृदय और मस्तिष्क के लिये बल प्रदान करने वाला है। रक्ताल्पता तथा पाण्डु रोग में भी अधिक हितकर है। मुख से रक्त आने में भी लाभदायक है।

यह स्त्रियों के आर्त्तव का प्रवर्तन करने वाला है। शोथ को लय करने वाला, स्वर शोधक और ओज-वर्द्धक है। सुजाक प्रभृति रोगों में इससे लाभ होता है। आँतों के जखम तथा वस्ति के व्रणो को भी गुणकारी है। बवासीर और तिल्ली में भी हितकर है। चिकित्सकगण इसकी भी भस्म का प्रयोग करते हैं।

आप मण्डूर पर त्राटक का अभ्यास करके खून की कमी से छुटकारा पा सकते हैं। इसके द्वारा आप सभीं धातुओं के नियमन में भी सफल हो सकते हैं।

काँसे का त्राटक–

इसे काँस्य भी कहते हैं। यह भी एक प्रसिद्ध धातु रही है और पहिले युग में इसके बर्तनों का अधिकता से प्रयोग होता है। यह प्रकृति में गर्म और रूक्ष माना गया है।

यह अवयवों के शोथों को हरण करने वाला, वमन का रोकने वाला तथा बुद्धि को बढ़ाने वाला है। यदि नासिका गन्ध ग्रहण न करती हो तो इसके प्रभाव से करने लगती है।

इसके प्रभाव से कफ और पित्त के विकारों का शमन होता है। नेत्रों के विकार दूर हो जाते हैं। आप इसकी त्राटक-साधना के द्वारा इसमें निहित गुणों का आकर्षण कर सकते हैं।

इसी प्रकार अन्यान्य धातुओं' उपधातुओं आदि पर भी त्राटक-साधना की जा सकती है। सभी के गुणों में विभिन्नता होती है। इसलिये जिस धातु पर त्राटक-साधना करें, पहिले उसके गुणों के विषय में जानकारी प्राप्त कर लेनी चाहिये। क्योंकि जिस धातु में जो औषधि गुण होंगे' उन्हीं का आकर्षण किया जा सकता है। रोग निवारण में वे ही औषधि गुण सहायक सिद्ध होते हैं।

॥ समाप्त ॥

अ. भा. ओंकार परिवार की स्थापना

★

ॐ परमात्मा का सर्वश्रेष्ठ व स्वाभाविक नाम है। इसे मन्त्र शिरोमणि, मन्त्र सम्राट, मन्त्र राज, बीजमन्त्र और मन्त्रों का सेतु आदि उपाधियों से विभूषित किया जाता है। इसे श्रेष्ठतम् महानतम् और पवित्रतम् मन्त्र की संज्ञा भी दी जाती है। सारे विश्व में इसकी तुलना का कोई मन्त्र नहीं है। ॐ सभी मन्त्रों को अपनी शक्ति से प्रभावित करता है। सभी मन्त्रों की शक्ति ओंकार की ही शक्ति है। यह शक्ति और सिद्धिदाता है। भौतिक व आत्मिक उत्थान के लिए कोई भी दूसरी श्रेष्ठ व सरल साधना नहीं है।

सभी ऋषिमुनि ॐ की शक्ति और साधना से ही अपना आत्मिक उत्थान करते रहे हैं। परन्तु आज आश्चर्य है कि ॐ का अन्य मन्त्रों की तरह व्यापक प्रचार नहीं है। इस कमी का अनुभव करते हुए अ० भा० ओंकार परिवार की स्थापना की गई है। आप भी अपने यहाँ इसका एक प्रचार केन्द्र स्थापित करें। शाखा स्थापना का सारा साहित्य निःशुल्क रूप से प्रधान कार्यालय, बरेली से मँगवा लें, आपको केवल इतना करना है कि स्वयं ओंकारोपासना आरम्भ करके ४ अन्य मित्रों व सम्बन्धियों को प्रेरित करें और सभी संकल्प पत्र व शाखा स्थापना का प्रार्थना पत्र प्रधान कार्यालय को भिजवा दें। इस वर्ष २७००० साधकों द्वारा ६०० करोड़ मन्त्रों के जप का महापुरश्चरण पूर्ण किया जाना है। आशा है ओंकार को जन-जन का मन्त्र बनाने के इस श्रेष्ठतम् आध्यात्मिक महायज्ञ में सम्मिलित होकर महान् पुण्य के भागी बनेंगे।

विनीत :—

संस्कृति संस्थान **चमनलाल गौतम**

ख्वाजाकुतुब, वेदनगर, बरेली–२४३००३ (उ.प्र.)

एक मौन व्यक्तित्व का मौन समर्पण

—★—

डा० चमनलाल गौतम-एक व्यक्ति का नहीं वरन् ऐसे विशाल धार्मिक संस्थान का नाम है जो सतत् २४ वर्षों से ऋषि प्रणीत आर्ष साहित्य के शोध, प्रकाशन और व्यापक साहित्य प्रचार का कार्य देश विदेश में करता रहा है। यह उनकी तप साधना का ही परिणाम है कि किसी भी आर्थिक सहयोग के बिना वेद, उपनिषद्, दर्शन, स्मृतियाँ, पुराण व मन्त्र-तन्त्र आदि साधनात्मक साहित्य की ३०० से अधिक पुस्तकों को प्रकाशित करके घर-घर में पहुँचाने की पवित्रतम साधना कर रहे हैं। मन्त्र-तन्त्र, योग, वेदान्त व अन्य धार्मिक विषयों पर १५० खोज पूर्ण ग्रन्थों का लेखन, सम्पादन एक ऐसा अविस्मरणीय व असाधारण कार्य है जिस पर उनके अथक श्रम, गम्भीर अध्ययन, तप, प्रतिभा और मौलिक सूझ-बूझ की स्पष्ट छाप दिखाई देती हैं। स्वस्थ साहित्य की रचना और प्रचार का उनकी जीवन योजना का यह पहला चरण पूरा हुआ।

पिछले २४ वर्षों से लगातार चल रही आध्यात्मिक साधना के महा-पुरश्चरण का दूसरा चरण भी समाप्त हो रहा है। तीसरे चरण आध्यात्मिक साधनाओं और अनुभूतियों के विश्वव्यापी विस्तार का शुभारम्भ अ० भा० ओंकार परिवार की स्थापना के साथ बसन्तपञ्चमी की परम पवित्र बेला के साथ हो गया है। अतः उनका शेष जीवन तीसरे चरण की सफलता, ओंकार परिवार की शाखाओं के व्यापक विस्तार के माध्यम से करोडों व्यक्तियों को ओंकार साधना में प्रविष्ट करके उच्च आध्यात्मिक भूमिका में प्रशस्त करना, ओंकार अथवा उच्च आध्यात्मिक साहित्य की रचना व प्रचार-प्रसार को समर्पित है।

—स्वामी सत्य भक्त

योग साहित्य

१—योग चिकित्सा २ खण्ड		....	१२)५०
२—योग और यौवन		....	६)
३—योग और पुरुषत्व		....	६)
४—योग और महिलायें		....	६)२५
५—योग के चमत्कार		....	५)५०
६—प्राणायाम के असाधारण प्रयोग		....	६)५०
७—योगासन से रोग निवारण		....	६)५०
८—सूर्य नमस्कार से रोगनिवारण		....	४)२५
९—अष्टांग योग सिद्धि		....	७)
१०—अष्टांग योग रहस्य		....	७)
११—योग साधना	(भा० टी०)	....	६)
१२—हठयोग प्रदीपिका	(भा० टी०)	....	५)
१३—घेरण्ड संहिता	(भा० टी०)	....	५)७५
१४—शिव संहिता	(भा० टी०)	....	४)५०
१५—गोरक्ष संहिता	(भा० टी०)	....	३)७५
१६—वृहत् शिव स्वरोदय	(भा० टी०)	....	४)५०
१७—भक्ति योग		....	५)७५
१८—कर्म योग		....	४)५०
१९—हिप्नोटिज्म (सम्मोहन विज्ञान)		....	५)५०
२०—भारत के योगी		....	४)५०
२१—गायत्री द्वारा योग साधना		....	३)७५
२२—श्री गोरख नाथ चरित्र		....	३)
२३—योग महाविज्ञान			१२)
२४—कु डलिनी जागरण		....	५)५०
२५—ध्यान की सरल साधनाए		....	६)
२६—ध्यान के गहरे प्रयोग		....	६)५०
२७—नाद योग		....	५)

प्रकाशक :
संस्कृति संस्थान, ख्वाजा कुतुब, बरेली-२४३००३ (उ०प्र)